धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

मार्च-2016 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

शिखर के जैनाचार्यगण । पू. श्री जयंतसेनसूरिजी म.सा. तथा श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

पूज्य गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाबचंदजी कटारिया

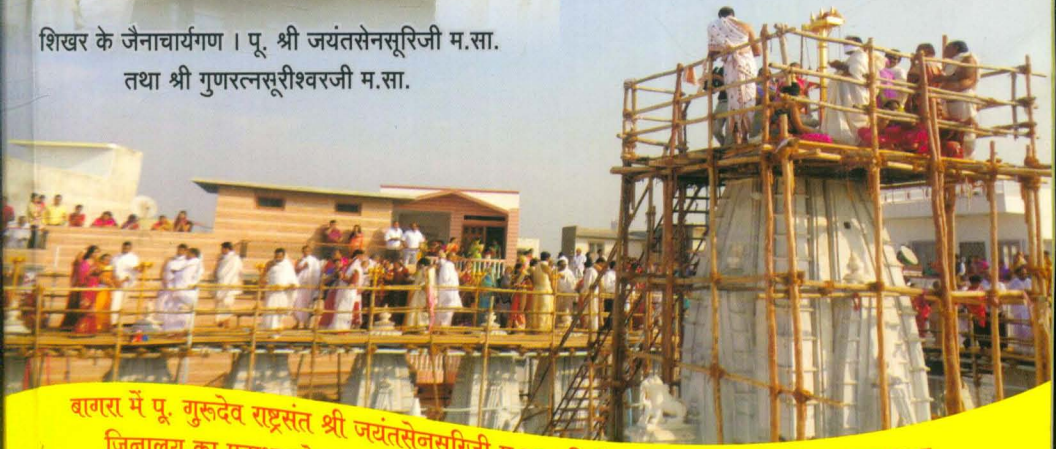

बागरा में पू. गुरूदेव राष्ट्रसंत श्री जयंतसेनसूरिजी म.सा. की निश्रा में शानदार ढंग से सम्पन्न हुआ जिनालय का महाशतकोत्सव, अंजनशलाका उत्सव तथा चौबीस देहरियों का ध्वजारोहण ।

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- विहार के अंतर्गत दि. 1 मार्च को बोरटा पहुँचना तथा 8 मार्च तक 68 जिनालय पर स्थिरता
- विभिन्न ग्रामों एवं नगरों में होते हुए 19 मार्च को भाण्डवपुर तथा 25 मार्च तक स्थिरता । 8 अप्रेल को भीनमाल व 11 अप्रेल को 72 जिनालय भीनमाल में, 14 अप्रेल से नवपद ओली तथा 22 अप्रेल को चातुर्मास घोषणा 72 जिनालय भीनमाल में
- दि. 24 अप्रेल से दि. 30 अप्रेल तक मधुकर संस्कार ज्ञानायतन भाग-4 धार्मिक शिक्षण शिविर 72 जिनालय भीनमाल में

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी,अहमदाबाद

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

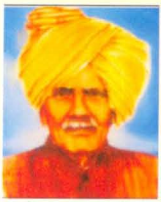

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सातेचा धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंदर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोंसबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराय्

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

32245

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

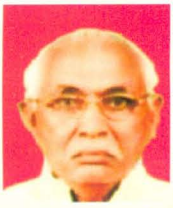
श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी थाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मावाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

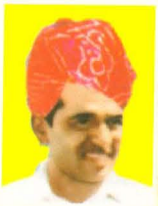
संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँधेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामरणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाबेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
मोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जैतमल भाई थराद

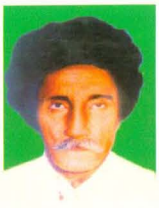
संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

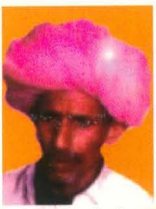
श्री पुखराजजी ओरा थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

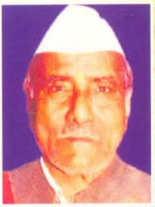
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

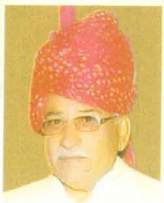
शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

मार्च-2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 64 अंक 3
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

मिच्छामि दुक्कड़म्

छट्ठ के पारणे छट्ठ तथा पारणा भी एकासणा के माध्यम से, ऐसी उग्र तपस्या श्री गौतमस्वामी प्रभु तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के सान्निध्य में करते थे। उस दिन छट्ठ का पारणा था। वे आनन्द नामक श्रावक के यहां गौचरी के लिए पधारे थे।वहाँ से लौटकर श्री गौतमस्वामी ने तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी से पूछा-

'भगवन्त्! क्या श्रावक को भी इतना अवधि ज्ञान हो सकता है?'

भगवन्त् ने उत्तर दिया-'भद्र! हाँ। श्रावक आनन्द इससे सुशोभित है। तुम्हारे द्वारा की गई चर्चा तुम्हारी त्रुटी है। तुमने अवधिज्ञानी की अवहेलना की है। इसी वक्त जाओ तथा आनन्द से मिच्छामि दुक्कड़म करो।'

पचास हजार केवली शिष्यों के अधिनायक गौतम स्वामी को बेले के पारणे का एकासणा करना था लेकिन उसी समय प्रभु की आज्ञा का पालन कर, बिना पारणा किए वे आनन्द के घर पहुंचे। इससे पूर्व आनन्द ने अपने निवास पर प्रातः गौचरी हेतु पधारे श्री गौतमस्वामी की वंदना कर कहा था कि उसे स्वयं साधना से अवधि ज्ञान उत्पन्न हो गया है। गौतम स्वामी ने फरमाया था-'श्रावक को इतना अवधि ज्ञान नहीं हो सकता है, तुम मिच्छामि दुक्कड़म् करो।' श्रावक आनन्द ने उत्तर दिया- 'देव! जिन शासन में सत्य बोलने का मिच्छामि दुक्कड़म है अथवा असत्य बोलने का।' गौतमस्वामी के मस्तिष्क में बिजली कौंध गई थी। लौटकर श्री महावीर स्वामी के सम्मुख शंका उपस्थित की।

श्री महावीर स्वामी ने फरमाया-'गौतम! तुम्हारी भूल है। तुम अभी जाकर आनन्द श्रावक से मिच्छामि दुक्कड़म् करो।'

गौतम स्वामी तत्काल आनन्द श्रावक के यहां पहुंचे तथा कहा-'हे आनन्द! मेरी भूल हुई। मेरी ओर से मिच्छामि दुक्कड़म्। मुझे क्षमा करो।'

- सुरेन्द्र लोढ़ा

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

अनुक्रम

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	कर्म की आठ प्रकृतियाँ(श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	11
2.	गणधरवाद (लेखांक-32) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	14
3.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-32) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	17
4.	प्रश्नोत्तरी	20
5.	श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	21
6.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	22
7.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	23
8.	चित्त समाधिमय बनाओ (जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजयश सूरीश्वरजी म.सा.)	25
9.	तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	27
10.	शांति और क्रांति के अग्रदूत-दादा गुरुदेव (धीमी गतिवाला)	29
11.	गुरु निन्दा के दुष्परिणाम (संकलन-सा.श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी)	32
12.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	34
13.	कितना बदल गया इन्सान (अशोक गंगवाल)	35
14.	माताश्री मरूदेवी (महिला शाश्वत)	36
15.	वरदायी परिषद् (श्रीमती ममता जैन, कुक्षी)	37
16.	फूल भी औषधीय गुणों से भरपूर है (अनोखीलाल कोठारी, उदयपुर)	38
17.	वास्तु शाश्वत	39
18.	आत्मा है (2) (साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्री जी)	40
19.	बाल शाश्वत	42
20.	साहित्य समीक्षा	43
21.	भारतीय संस्कृति का आईना है-होली (अचलचन्द जैन, सायला)	44
22.	गुजराती संभाग	48
23.	कुमकुम सने पगलिये	63
24.	वर्ग पहेली	80
25.	श्रीसंघ सौरभ	81
26.	परिषद् प्रांगण से	90
27.	जैन विश्व	93
28.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	97-98

कर्म की आठ प्रकृतियाँ

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

कर्म और आत्मा का अनादि से घना रिश्ता है, अतः कर्म, आत्मा के साथ लगा ही रहता है। उसी तरह जैसे खान में रहे हुए सोने के साथ मिट्टी लगी होती है। मिट्टी सुवर्ण की मलीनता है और कर्म आत्मा की। प्रयोग के द्वारा मिट्टी, सुवर्ण से अलग की जा सकती है। जब दोनों अलग-अलग होते हैं तब मिट्टी, मिट्टी रूप में और सुवर्ण, सुवर्ण रूप में प्रकट होता है। मिट्टी को तब कोई सुवर्ण नहीं कहता और न ही सुवर्ण को कोई मिट्टी कहता है। ठीक उसी प्रकार सम्यग्दर्शन प्राप्त आत्मा सम्यग्ज्ञान के उज्वल आलोक में सम्यक चारित्र के प्रयोग द्वारा अपने कर्मरज को पूरी तरह झटक देती है और अपनी मलिनता को दूर करके उज्वलता को प्रकट कर देती है।

कर्म की आठ प्रकृतियां अपने-अपने स्वभावानुसार प्रवृत्तियों में रमणरत आत्मा को कर्म भुगतान के लिये प्रेरित

करती रहती हैं। जिन्हें स्वयं का ख्याल नहीं, जो असमंजस की स्थिति में हैं, ऐसे संसारी जीवों का ये कर्म प्रकृतियां विभाव परिणमन करा लेती हैं। कर्म की आठ प्रकृतियां हैं– ज्ञानावरणीय कर्म, दर्शनावरणीय कर्म, वेदनीय कर्म, मोहनीय कर्म, आयुष्य कर्म, नाम कर्म, गौत्र कर्म और अन्तराय कर्म।

ज्ञानावरणीय कर्म आँखों पर रही पट्टी के समान है। नजर चाहे जितनी सूक्ष्म हो, पर यदि आंखों पर कपड़े की पट्टी लगी हो तो कुछ भी दिखाई नहीं देता। ठीक इसी प्रकार आत्मा की निर्मल ज्ञान दृष्टि को ज्ञानावरणीय कर्म आवृत्त कर लेता है। इससे ज्ञानदृष्टि पर आवरण छा जाता है। यह कर्म जीव को उल्टी चाल चलाता है।

दर्शनावरणीय कर्म,राजा के पहरेदार के समान है। जिस प्रकार पहरेदार दर्शनार्थी को राजदर्शन से वंचित रखता है, उसे महल में प्रवेश करने से रोकता है, उसी प्रकार दर्शनावरणीय कर्म जीव को आत्मदर्शन से वंचित रखता है। यह जीव को प्रमत्त भाव में आकण्ठ डुबो देता है। अतः जीव अप्रमत्त भाव से सर्वथा दूर रह जाता है। यह जीव के आत्मदर्शन के राजमार्ग को अवरुद्ध कर देता है और जीव को उन्मार्ग गामी बनाता है।

वेदनीय कर्म मधुलिप्त असि धार के समान हैं। यह जीव को क्षणभंगुर सुख का लालची बनाकर उसे अनन्त दुःख समुद्र में धकेल देता है। शाता का वेदन तो यह अत्यल्प करवाता है, पर अशाता का वेदन यह अत्यधिक करवाता है। शहद लगी तलवार की धार को चाटने वाला शहद की मधुरता तो पाता है और सुख का अनुभव भी करता है, पर जीभ कट जाते ही असह्य दुख का अनुभव भी उसे करना पड़ता है। इस प्रकार वेदनीय कर्म सुख के साथ अपार दुःख का भी वेदन कराता है।

मोहनीय कर्म मदिरा के समान है। मदिरा प्राशन करने वाला मनुष्य जैसे अपने होश–हवास खो बैठता है, इसी प्रकार मोहनीय कर्म से प्रभावित जीव अपने आत्मस्वरूप को भूल जाता है और पर पदार्थों को आत्मस्वरूप मान लेता है। यही एकमेव कारण है उससे संसार परिभ्रमण का। 'मोह महामद पियो अनादि, भूलि आपकुं भरमत बादि' यह जीव के सम्यक् चारित्र के मार्ग में रुकावट डालता है। जो मनुष्य इस मोहनीय कर्म के स्वरूप से अनभिज्ञ रहता है और जो उसकी स्थिति का अनुभव नहीं करता, वह अपने जीवन में आत्मविकास से वंचित रह जाता है। अहंकार और ममकार जब तक हममें विद्यमान हैं, तब तक हम

मोहनीय कर्म के बंधन में जकड़े हुए ही हैं।

अहंकार और ममकार जितना-जितना घटता जाता है, उतना ही मोहनीय कर्म का बंधन शिथिल होता जाता है। यह मोहनीय कर्म, समस्त कर्मसत्ता का अधिपति है और सबसे लम्बी उम्र वाला है। इस मोहराजा के निर्देशन में ही कर्मसेना आगे कूच करती है। जीव को भेद विज्ञान से वंचित रखने वाला यही कर्म है। इसने ही जीव को संसार की भूल-भूलैया में अटकाये रखा है।

आयुष्य कर्म बेड़ी के समान है। इसने जीव को शरीर रूपी बेड़ी लगा दी है, जो अनादि काल से आज तक चली आ रही है। एक बेड़ी टूटती है तो दूसरी तुरन्त लग जाती है। सजा की अवधि पूरी हुए बिना कैदी मुक्त नहीं होता इसी प्रकार जब तक जीव की जन्म-जन्म की कैद की अवधि पूरी नहीं होती, तब तक जीव मुक्ति की मौज नहीं पा सकता।

नाम कर्म का स्वभाव चित्रकार के समान है। चित्रकार नाना प्रकार के चित्र, चित्रपट पर अंकित करता है। ठीक इसी प्रकार नाम कर्म चतुर्गति में भ्रमण करते विविध जीवों को भिन्न भिन्न नाम प्रदान करते हैं। इसके प्रभाव से जीव इस संसार पट पर नाना प्रकार के नाम धारण करके देव, मनुष्य, तिर्यंच और नरक गति में भ्रमण करता है।

गौत्र कर्म का स्वभाव कुम्हार के समान है। कुम्हार अनेक प्रकार के छोटे-बड़े बर्तन बनाता है और उन्हें विभिन्न आकार प्रदान करता है। गोत्र कर्म भी जीव को उच्च और नीच गोत्र प्रदान करता है, जिससे जीव को उच्च या नीच गोत्र में जन्म धारण करना पड़ता है।

इसी प्रकार अन्तराय कर्म, राजा के खजांची के समान है। खजाने में माल तो बहुत होता है पर कुंजी खजांची के पास ही होती है। अतः खजाने से याचक कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। यही कार्य अन्तराय कर्म करता है। इसके प्रभाव से जीव को इच्छित वस्तु उपलब्ध नहीं हो पाती। दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य (आत्मशक्ति) के विषय में अन्तराय कर्म के उदय से जीव किसी प्रकार का लाभ प्राप्त नहीं कर सकता। संक्षेप में जैन दर्शन का यही कर्मवाद है।

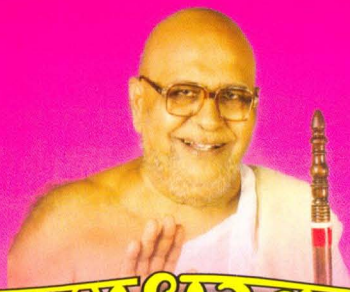

गणधरवाद

प्रवचनकार
सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

उक्त 'विज्ञानघन एव' इत्यादि वाक्यों में विज्ञानघन शब्द का अर्थ जीव है, क्योंकि विज्ञान अर्थात् विशेष ज्ञान को विज्ञान कहते हैं, जो ज्ञान, दर्शन रूप है। इस विज्ञान से अनन्य-अभिन्न होने के कारण, उसके साथ जो एकरूप में घन निबिड़ हो गया हो, वह जीव विज्ञानघन कहलाता है। अथवा जीव के प्रत्येक प्रदेश में अनंतानंत विज्ञान पर्यायों का संघात होने से भी जीव को विज्ञानघन कहा जाता है और विज्ञानघन के साथ सम्बद्ध 'एव' पद का तात्पर्य यह है कि जीव विज्ञान घन ही है। अर्थात् विज्ञानरूप ही है, विज्ञान जीव का स्वरूप ही है। जीव से विज्ञान अत्यन्त भिन्न नहीं है, क्योंकि विज्ञान यदि जीव से सर्वथा भिन्न हो तो जीव जड़स्वरूप हो जाएगा। जैसा कि नैयायिक आदि मानते हैं कि आत्मा स्वयं तो स्वरूप से ज्ञानरहित है, किन्तु बुद्धि के समवाय से उसे ज्ञानात्मक कहा जाता है।

'भूतेभ्यः समुत्थाय' इत्यादि का तात्पर्य इस प्रकार है- घट-पट आदि भूतों से घट विज्ञान, पट विज्ञान आदि रूपों में विज्ञान घन जीव उत्पन्न होता है, क्योंकि ज्ञेय से ज्ञान की उत्पत्ति होती है और घटादि वस्तुओं का ज्ञेयत्व एवं भूतरूपता प्रत्यक्ष सिद्ध है। अतः ऐसा कहा जा सकता है कि घट आदि भूतों से घट विज्ञान उत्पन्न हुआ। यह घट विज्ञान जीव की एक पर्याय विशेष है। इसके साथ ही जीवन विज्ञानमय है। अतः ऐसा कहा जा सकता है कि 'घट विज्ञान रूप जीव' घट नामक भूत से उत्पन्न हुआ है और 'पट विज्ञान रूप जीव' पट नामक भूत से उत्पन्न हुआ है, इत्यादि। इस प्रकार जीव की अनन्त विज्ञान पर्यायें, उन-उन भौतिक विषयों की अपेक्षा से उत्पन्न होती हैं और विज्ञान की वे पर्यायें जीव से अभिन्न होने के कारण जीव उन-उन विज्ञानरूप भूतों से उत्पन्न होता है, यह कहना उचित ही है।

'तान्येवानुविनश्यति'– पद का यह अर्थ है कि ज्ञान के अवलम्बनरूप भूत जब ज्ञेय रूप से विनाश को प्राप्त होते हैं, तब उनसे उत्पन्न विज्ञानघन भी नष्ट हो जाता है। अर्थात् कालक्रम से वर्तमान ज्ञेय वस्तु पर ध्यान केन्द्रित न रहने से विषय के व्यवधान, आत्मा के विषयान्तर में उपयोग होने वाली आदि के कारण जब घटादि की ज्ञेयरूपता नष्ट हो जाती है, तब घट विज्ञानादि आत्मपर्याय भी नष्ट हो जाती है और पटादि की ज्ञेयरूपता उत्पन्न होती है। विज्ञानघन जीव से उक्त पर्याय के अभिन्न होने से विज्ञानघन जीव का भी नाश हो जाता है, यह कहना अनुचित नहीं है। सारांश यह है कि घटादि विज्ञेय भूतों से घटविज्ञानादि पर्याय रूप विज्ञानघन जीव उत्पन्न होता है और कालक्रम से व्यवधान आदि के कारण अन्य विषय में जीव के उपयोग की प्रवृत्ति होने से जब घटादि भूतों की विज्ञेयरूपता नष्ट होती है, तो घटादि ज्ञान पर्याय रूप विज्ञानघन जीव का भी नाश हो जाता है। लेकिन इसका आशय यह नहीं कि आत्मा का सर्वथा नाश हो जाता है, क्योंकि–

आत्मा यद्यपि पूर्वपर्याय के विगम–नाश की अपेक्षा से निगम–व्यय स्वभाव वाली है और अपर पर्याय की उत्पत्ति की अपेक्षा उत्पाद स्वभाव वाली भी है, जैसा कि पहले संकेत किया गया है कि घटादि विज्ञानरूप उपयोग का नाश होने पर पटादि विज्ञानरूप उपयोग उत्पन्न होता है। इस प्रकार जीव में उत्पाद और व्यय ये दोनों स्वभाव (धर्म) होने से वह विनाशी सिद्ध होता है, किन्तु विज्ञान संतति की अपेक्षा से विज्ञानघन–जीव, अविनाशी ध्रुव भी सिद्ध होता है। अर्थात् जीव में सामान्य विज्ञान का अभाव तो कभी भी नहीं होता, विशेष विज्ञान का अभाव होता है। इसलिए विज्ञान संतति विज्ञान सामान्य की अपेक्षा से तो जीव नित्य है, ध्रुव अविनाशी है। इस प्रकार संसार की सभी वस्तुएं उत्पाद व्यय ध्रौव्यात्मक हैं। ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जिसका विनाश हो जाता हो या सर्वथा अपूर्व नवीन उत्पाद होता हो।

'न प्रेत्यसंज्ञा अस्ति' इस वाक्यांश का भाव यह है कि जब अन्य वस्तु में उपयोग प्रवृत्त होता है, तब पूर्व विषय के विज्ञान के विलुप्त हो जाने से उसकी ज्ञान संज्ञा नहीं होती, क्योंकि उस समय जीव का उपयोग सांप्रत वर्तमान वस्तु विषय में होता है। सारांश यह है कि जब घटोपयोग निवृत्त होकर पटोपयोग वर्तमान होता है, तब उस उपयोग की घटोपयोग संज्ञा नहीं होती। उसे घटोपयोग नहीं कहा जाता, क्योंकि उस समय तो वह उपयोग निवृत्त हो चुका है। अतः उस समय पटोपयोग संज्ञा ही होती है, क्योंकि उस समय पटोपयोग वर्तमान है।

इस प्रकार विज्ञानघन आदि वेद में विज्ञानघन पद से जीव

का ही कथन होने से तुम्हें इस विषय में सन्देह नहीं करना चाहिए।

विज्ञान भूतधर्म नहीं है

इन्द्रभूति– आपकी यह व्याख्या मान लें कि घट आदि भूतों से विज्ञानघन द्रव्य जीव उत्पन्न होता है, तब भी जीव भूत से स्वतंत्र नहीं, किन्तु भूतों का धर्म ही सिद्ध होता है। अर्थात् विज्ञान घन जीव पृथिव्यादि भुतमय ही सिद्ध होता है, क्योंकि भूत हों तभी विज्ञान की उत्पत्ति होती है और यदि भूत न हो तो नहीं होती। क्योंकि विज्ञान का अन्वयव्यतिरेक भूतों के साथ होने से वह भूतों का ही धर्म है। जैसे चांदनी, चन्द्रमा का धर्म है।

महावीर–आयुष्मान! तुम्हारा यह कथन युक्तिसंगत नहीं है, क्योंकि भूतों के अभाव में भी ज्ञान होने से भूतों के साथ ज्ञान का व्यतिरेक नियम असिद्ध है।

इन्द्रभूति–वह कैसे? आप ही ने पहले कहा है कि भूतों की विज्ञेयरूपता नष्ट हो जाने पर विज्ञान भी नष्ट हो जाता है। अर्थात् भूतों के अभाव में विज्ञान भी नहीं होता। इस प्रकार विज्ञान का भूतों के साथ व्यतिरेक असिद्ध नहीं है।

महावीर–संभवतः तुम मेरे कथन को समग्र रूप से समझ नहीं सके हो। मैंने विज्ञान का सर्वथा अभाव तो बताया ही नहीं है। किन्तु यह कहा था कि विशेष विज्ञान का नाश होने पर भी विज्ञान संतति– विज्ञान सामान्य का नाश नहीं होता, जिससे भूतों का विज्ञेय रूप में नाश होने पर भी विज्ञान का अभाव होता नहीं है। जिससे कि भूतों का विशेष ज्ञान के साथ अन्वय व्यतिरेक सिद्ध होने पर भी सामान्य विज्ञान के साथ व्यतिरेक असिद्ध ही है। और इसलिए विज्ञान भूतधर्म नहीं हो सकता। तथा वेद में ही भूतों के अभाव में भी विज्ञान का अस्तित्व बताया गया है। इससे भी विज्ञान घन को भूत धर्म नहीं कहा जा सकता। (क्रमशः)

बुद्धि और भावना

धार्मिक प्रवचन सुनते समय, श्मशान में अपने किसी प्रियजन की चिता जलते समय, बहुत बुरी तरह से रोगग्रस्त किसी रोगी से मिलते समय और क्रोध कर चुकने के बाद जो बुद्धि और भावना पैदा होती है, यदि वह जीवन में उतर कर स्थायी हो सकती तो आज दुनिया के रंग–ढंग कुछ और ही होते। आदमी का जीवन कुछ और ही होता। तब उसके जीवन में बहार ही बहार होती। लेकिन होता यही है कि इन स्थितियों में उत्पन्न बुद्धि और भावना शीघ्र ही बदल जाती है। हम फिर दुनियादारी के रंग में रंग जाते हैं।

–छगनलाल भुगड़ी, बीकानेर

लेखांक 32

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

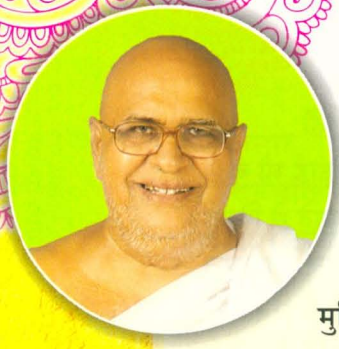

इस प्रवचन के एक-एक शब्द को स्वर्णप्रभा ने बड़े ध्यान से सुना। प्रवचन की समाप्ति पर वह चिंतन में डूब गई। उसके मानस पटल पर यह विचार भी उभरे कि क्या मुनिराज ने हमारे मनोगत भावों को पढ़ लिया था। आज का यह प्रवचन सामयिक तो था ही मार्गदर्शक भी था। वह विचार कर रही थी कि फूलकुंवर को सन्मार्ग पर लाने के लिए उसे असीम धैर्य से काम लेना है। उसके विष बुझे शब्दों को भी अमृत के समान स्वीकार करना होगा। उसकी प्रताड़ना का स्वागत मुस्कराते हुए करना होगा। अभी वह विचारों में डूबी हुई ही थी कि नगर श्रेष्ठी ने लगभग झकझोरते हुए कहा- 'स्वर्ण, कहाँ खो गई? उठो देखो सभी अपने-अपने काम में लग गए हैं। मुनिराज भी जा चुके हैं।' स्वर्णप्रभा की तंद्रा भंग हुई वह चौंक उठी, वास्तविकता सामने आ गई। वह उठी और अपने रथ की ओर चल पड़ी। नगर श्रेष्ठी ने घोषणा कर दी- 'आज मुकाम यहीं रहेगा। कल प्रातःकालीन प्रवचन पीयूष का पान करने के पश्चात् हम यहां से प्रस्थान करेंगे।'

दूसरे दिन मुनिराज ने अपने प्रवचन में नवकार महामंत्र की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उन्होंने फरमाया कि नवकार महामंत्र का आराधक निर्भिक होता है। बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी वह घबराता नहीं है। पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ यदि इस महामंत्र का जाप नियमित किया जाए तो व्यक्ति संकट मुक्त हो सकता है।

मंगलवचन सुनकर नगरश्रेष्ठी का काफिला चल पड़ा। सैनिक सतर्क थे। स्वयं नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर भी सावधान थे। अभी तक कोई अनहोनी बात नहीं हुई थी। दस्युओं की बात बताई गई थी,

किन्तु अभी तक कहीं भी दस्यु दिखाई नहीं दिये थे। फिर भी लोग सतर्क थे कि कहीं पर भी दस्युओं का हमला हो सकता है। दस्युओं की संख्या कितनी है? इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। चूंकि इस क्षेत्र में पहले कोई दस्यु दल नहीं था इसलिए भी दस्युओं की संख्या और उनकी लूटमार करने की रीति के विषय में कोई भी कुछ नहीं जानता था। सैनिक रक्षात्मक युद्ध करना अवश्य जानते थे किन्तु इन्हें भी कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं मिला था। फिर भी सब आश्वस्त थे कि यदि दस-बीस दस्यु हुए तो ये सैनिक उन्हें धर दबोचेंगे। सबके मानस में अलग-अलग विचार उभर रहे थे। इन्हीं विचारों के बीच यह काफिला एक नदी के समीप जा पहुंचा। नदी पार करने के पहले एक घाटी पार करनी पड़ती थी। इसी प्रकार की एक घाटी दूसरी ओर भी थी। यहां ऐसा प्रतीत होता था मानों यात्री किसी गुफा में प्रवेश कर रहे हों।अन्तर केवल इतना था कि गुफा के ऊपर छत होती है और यहाँ छत नहीं थी। इससे मार्ग में अंधेरा नहीं हो पाता था। इस स्थान के समीप पहुंचते ही नगर श्रेष्ठी और प्रधान सैनिक ने पूरी तरह सावधानी से चलने की चेतावनी दी। इस स्थान की एक विशेषता यह भी थी कि यहां पर नदी घुमावदार हो गई थी। इस कारण नदी पार करते समय यह ज्ञात नहीं हो पाता था कि दोनों ओर क्या हो रहा है। ऐसा दृश्य दुर्लभ ही कहा जा सकता है। नदी को पार करते समय सभी चौकन्ने थे। अभी स्वर्णप्रभा का रथ नदी पार भी नहीं कर पाया था कि नदी के ऊपरी भाग की ओर से कुछ अश्वारोही हुंकार भरते हुए आए और काफिले पर हमला कर दिया। इन अश्वारोहियों ने अपने मुंह कपड़े से बांध रखे थे। काफिले के सैनिकों ने तत्काल सुरक्षात्मक कदम उठाया और काफिले को आगे बढ़ते रहने का निर्देश दिया। स्वर्णप्रभा के रथ को दस-पन्द्रह सुरक्षा सैनिकों ने अपने घेरे में लिया और उसे आगे बढ़ाते रहे। शेष सैनिक इन अश्वारोहियों का मुकाबला करने में लग गए। वास्तव में ये दस्यु ही थे। संघर्ष होता रहा और यात्रा चलती रही।

इस बीच सुरक्षा सैनिकों के प्रहारों से एक-दो दस्यु आहत भी हो गए। प्रधान सुरक्षा सैनिक अपने सैनिकों का उत्साहवर्द्धन कर रहा था। इसी बीच नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर भी तलवार घुमाता हुआ सैनिकों का उत्साह बढ़ाने लगा। उसकी तलवार के प्रहार को देखकर सभी आश्चर्यचकित थे। किन्तु शीघ्र ही प्रधान सुरक्षा सैनिक ने नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर को वहाँ से हटने के लिए राजी कर लिया। वह वहां से आगे बढ़कर स्वर्णप्रभा के रथ के समीप जा पहुंचा।

लड़ते-लड़ते ये लोग नदी की उस दुर्गम घाटी को पार कर ऊपर मैदान में आ गए। प्रधान सुरक्षा सैनिकों ने देखा कि दस्यु संख्या में अधिक नहीं हैं। उसने गणना करनी चाही किन्तु वह वास्तविक संख्या ज्ञात नहीं कर सका। फिर भी उसने अनुमान लगा लिया कि दस्युओं की संख्या पन्द्रह-सोलह से अधिक नहीं है। मैदान में आते ही संघर्ष और तीव्र हो गया। दस्युओं के प्रहार करने के तरीकों से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे मरने-मारने पर उतर आए हैं। इधर सुरक्षा सैनिक उन्हें कैद करने का विचार कर रहे थे। उनके प्रहार भी इसी उद्देश्य को लेकर हो रहे थे। इसी बीच दस्यु सरदार के प्रहार से एक सैनिक आहत होकर अपने अश्व से नीचे गिर पड़ा। इस घटना से दस्युओं का उत्साह बढ़ गया। सुरक्षा सैनिकों में क्षण भर के लिए हताशा दिखाई दी, किन्तु उसी क्षण प्रधान सुरक्षा सैनिक ने अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा- 'बहादुरों! घबराने की आवश्यकता नहीं है। दुगुने जोश के साथ शत्रुओं पर आक्रमण करो। अंतिम विजय हमारी है।'

तभी नगर श्रेष्ठी भी वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने कहा- 'साथियों! इन चुटकी भर दरिंदों का सफाया कर दो। मैं भी तुम्हारे साथ हूँ। अपने जौहर दिखाओ। ये आततायी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।' इस कथन के साथ नगर श्रेष्ठी ने भी अपनी तलवार के जौहर दिखाना शुरू कर दिए। (क्रमशः)

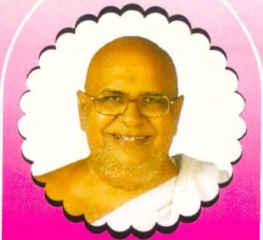

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

बन्ध के कितने भेद हैं?

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. श्वासोच्छवास वर्गणा किसे कहते हैं?

उ. जो वर्गणा श्वासोच्छवास रूप में परिणमन होती है, उसे श्वासोच्छवास वर्गणा कहते हैं।

प्र. मनोवर्गणा किसे कहते हैं?

उ. जो वर्गणा मनरूप में परिणमन होती है, उसे मनोवर्गणा कहते हैं।

प्र. कार्मण वर्गणा किसे कहते हैं?

उ. जो वर्गणा कार्मण शरीर रूप में परिणमन होती है, उसे कार्मण वर्गणा कहते हैं।

प्र. बंध किसे कहते हैं?

उ. आत्मा के साथ कर्मों का क्षीर-नीर के साथ घनीभूत हो जाना बन्ध कहलाता है।

प्र. बन्ध के कितने भेद हैं?

उ. बन्ध के चार भेद हैं-1. प्रकृति बंध, 2. स्थिति बंध, 3. अनुभाग (रस) बंध, और 4. प्रदेश बंध।

प्र. प्रकृति बंध किसे कहते हैं?

उ. जीव के द्वारा ग्रहण किए हुए पुद्गलों में भिन्न भिन्न शक्तियों का पैदा होना प्रकृति बंध कहलाता है।

प्र. स्थिति बंध किसे कहते हैं?

उ. जीव के साथ कर्म पुद्गलों के जुड़े (मिले) रहने की मर्यादा को स्थिति बंध कहते हैं।

प्र. अनुभाग बंध किसे कहते हैं?

उ. कर्मों का फल देने की न्यूनाधिक शक्ति को अनुभाग बंध कहते हैं।

प्र. प्रदेश बंध किसे कहते हैं?

उ. न्यूनाधिक परमाणु वाले कर्म स्कन्धों को प्रदेश बन्ध कहते हैं।

प्र. बन्ध का कारण क्या है?

उ. प्रकृति और प्रदेश बन्ध का कारण योग है, तथा स्थिति और अनुभाग बन्ध का कारण कषाय है।

प्र. प्रकृति बन्ध के कितने भेद हैं?

उ. आठ भेद हैं- 1. ज्ञानावरणीय, 2. दर्शनावरणीय, 3. वेदनीय, 4. मोहनीय, 5. आयु, 6. नाम, 7. गोत्र, 8. अन्तराय।

प्र. ज्ञानावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

उ. जो पदार्थ को जाने उसे ज्ञान कहते हैं, जिससे ढांका जाए उसे आवरण कहते हैं। अतः जिससे ज्ञान ढंक जाए उसे ज्ञानावरणीय कहते हैं, जैसे बादलों से सूर्य ढंक जाता है।

प्र. दर्शनावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

उ. जो वस्तु के सामान्य स्वरूप को जाने वह दर्शन है। जिससे यह दर्शन ढंक जाए उसे दर्शनावरणीय कर्म कहते हैं। जैसे द्वारपाल का प्रतिबंध होने से राजा का दर्शन नहीं हो पाता।

प्र. वेदनीय कर्म किसे कहते हैं?

उ. जिससे साता और असाता वेदी (अनुभव) हो, उसे वेदनीय कर्म कहते हैं। जैसे शहद लिपटी तलवार से अल्प सुख और पश्चात् बहुत दुःख होता है।

प्र. मोहनीय कर्म किसे कहते हैं?

उ. जिससे आत्मा मोहित हो। सत्-असत् के विवेक से शून्य हो जाये। ऐसे कर्म को मोहनीय कर्म कहते हैं। मदिरा पीने से जैसे मनुष्य उन्मत्त हो जाता है।

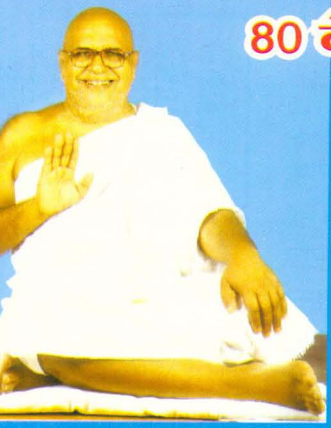

80 वें वर्ष के जन्म महोत्सव पर

श्री वाघजी भाई वोरा
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ)

पूज्य युग प्रभावक, गच्छाधिपति श्री ने अपना सम्पूर्ण जीवन श्रीसंघ को सर्वांगीण बनाने एवं सुदृढ़ करने में प्रयुक्त किया है। प्रारंभ से ही उनके हृदय में श्रीसंघ की उन्नति करने की टीस रही। वे युवाओं को संगठित तथा स्फूर्तिमय बनाकर समाज की अगली पंक्ति को सशक्त बनाने की धुन में रहे। महिलाओं को एकता का संदेश देकर चतुर्विध श्रीसंघ के एक सेवानिष्ठ प्रगतिशील अंग के रूप में अग्रिम पंक्ति में स्थान दिलाने की प्रेरणा करते रहे। देव, गुरु तथा धर्म तीनों की उपासना की क्रियाओं को बल देकर वायुमान को धार्मिक तथा आध्यात्मिक परमाणुओं से परिपूर्ण करने के उपक्रम आपश्री ने किए। इनकी बहुमुखी प्रतिभा सभी क्षेत्रों में उपलब्धियाँ देने में अग्रणी रहीं। आपके उपदेशों की धारा का प्रभाव नये तीर्थों की रचना, ग्राम स्तर तक के जिनालयों के जीर्णोद्धार, उपाश्रयों के निर्माण तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि नवीन गुरु मंदिरों के निर्माण को आपकी प्रेरणा से विराट रूप मिला। आपने संकल्प ग्रहण किया था कि आप अपने जीवन में गुरुदेव पूज्य श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के कम से कम एक सौ आठ गुरु मंदिर स्थापित करेंगे। यह संख्या आज लगभग दो सौ के अंक को स्पर्श कर रही है। आपने दो सौ से अधिक ग्रंथों का लेखन, संशोधन या अनुवाद किया। कोई डेढ़ सौ से अधिक आत्मर्थियों को संयम मार्ग पर अग्रसर कर उन्हें शिष्यत्व प्रदान किया। आपने जितने कीर्तिमान स्थापित किए हैं, उनकी गणना भी दुष्कर कार्य है।

हमारी यह कामना है कि पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति श्री, भविष्य में दीर्घ समय तक अपनी कृपा दृष्टि से श्रीसंघ का तथा हमारा मार्गदर्शन करते रहें। हमारे कार्यक्रमों में नवकार मंत्र, गुरुदेव का जाप, धर्मानुष्ठानिक आयोजन, आपके सुदीर्घ जीवन के लिए प्रार्थनाएं आदि भी सम्मिलित रहनी चाहिए। जन कल्याण के लिए स्वास्थ्य, रक्तदान आदि शिविरों का आयोजन तो होगा ही, साथ ही गरीबों को भोजन, दीन-हीनों को वस्त्र, बर्तन, नकद आदि की सहायता, अनाथों-विधवाओं के प्रति अनुकंपा की प्रस्तुति भी की जानी चाहिए। आईये, हम लोग अपने-अपने यहां इन गतिविधियों को व्यवस्थित रूप दें।

जय जिनेन्द्र...! जय राजेन्द्र...! जय जयन्त ...!

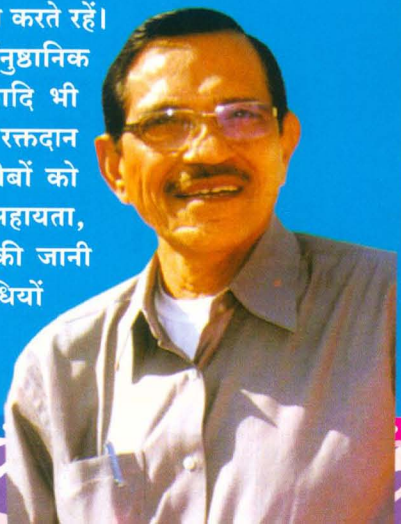

सभी सीखें 'जीवन में अनुशासन'

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

संगठनों/संस्थाओं/मंडलों/परिषदों के सुव्यवस्थित तथा सुसंगठित रहने के लिए 'अनुशासन' एक बुनियादी तत्व है। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, उसमें अनुशासन का होना अत्यावश्यक है। समाज की गणना तो है ही, इसकी एक छोटी इकाई 'परिवार' भी अनुशासन के अभाव में सही रीति से संचालित नहीं हो पाते हैं। अनुशासन, व्यक्तिगत स्तर का गुण है। व्यक्ति को चाहे वह अकेला हो या समूह (भीड़) में वह मौजूद रहे, सदा अनुशासन की मर्यादाओं का पालन करते हुए, उसे सर्वाधिक महत्व देते हुए ही गतिशील होना चाहिए। उसके आचरण से उसका संस्कार झलकना चाहिए। यह संस्कार, अनुशासन से ही घनीभूत हो सकता है।

जिस देश/ समाज/ संगठन/ समूह / या व्यक्ति में अनुशासन नहीं, वह अराजक है। उसकी आवाज का कोई महत्व नहीं होता है। उसे इज्जत की दृष्टि से देखा ही नहीं जाता तो उसकी बात मानने का तो कहीं कोई प्रसंग ही तैयार नहीं हो पाता है। आमतौर पर उसके प्रति अभिमत स्वीकारणीय नहीं होता। कभी-कभी तो अनुशासनहीन समूह को उद्दण्ड घोषित कर दिया जाता है। इस स्थिति में उसके उद्देश्यों तथा उद्देश्यों को प्रतिध्वनित करने के प्रयासों को गंभीरता से नहीं लिया जाता है। ऐसे समूह को कभी कोई सफलता प्राप्त नहीं होती है। प्रत्येक बालक या छात्र को प्रारंभ से ही विद्यालय में तथा उसके पश्चात् महाविद्यालय स्तर पर भी अनुशासन का पाठ ही प्रमुखता से पढ़ाया जाता है। अनुशासनहीनता की स्थिति में छात्र को दंडित किए जाने का प्रावधान भी रहता है। जीवन का सही विकास, अनुशासन के धरातल पर होता है। अनुशासन, बाल्यकाल से संस्कार रूप में प्राप्त होता है।

अनुशासन से तात्पर्य रोबोट की भांति मूर्तिवत बने रहना या मशीन की तरह आचरण करना नहीं है। इसके अन्तर्गत हमारे विचार, विचारों की दिशा, व्यवहार, मुख से प्रस्फुटित भाषा, आचरण, खाने-पीने-पढ़ने, चलने-फिरने सहित सभी आवश्यक क्रियाओं का संयम से सज्ज, सकारात्मक होना आवश्यक है। कहीं भी अनियंत्रण अथवा स्वच्छंदता नहीं दिखाई देनी चाहिए। बड़ों के साथ सन्मान का व्यवहार, वरिष्ठजनों की प्रतिष्ठा का ध्यान रखना ये सभी अनुशासन के अंग हैं। अनुशासन केवल बाल्यावस्था की अनिवार्यता नहीं है। व्यक्ति प्रौढ़ हो जाए या वृद्धावस्था तक पहुंच जाए, उसका अनुशासन से जुड़ा रहना अभिष्ट है।

आशा है जीवन सद्गुणों तथा सुसंस्कारों से जुड़ कर सार्थकता की ओर अग्रसर होगा।

मांस निर्यात पर बंदिश लगाना एकदम जरूरी

अहिंसा और शाकाहार के लिए प्रसिद्ध भारत को मांस निर्यात का प्रमुख देश बना दिया गया है। एक अनुमान के अनुसार देश में वर्तमान में इस हेतु कोई डेढ़ करोड़ गाय/भैंसों का प्रतिवर्ष कत्ल किया जाता है। इसके अलावा सुअर, भेड़, बकरी, ऊंट, घोड़े आदि पशुओं का भी लाखों की संख्या में वध होता है। मुर्गे-मुर्गियों को मार कर उनका मांस विदेश भेजे जाने का तो कोई हिसाब ही नहीं है। धर्मप्रेमी भारत देश की अधिसंख्य धार्मिक जनता इसका विरोध करती रही है किन्तु भारत सरकार विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लोभ में और भारत में पशुवध के व्यापारी इस हेतु शासन से मिलने वाले अनुदान के लालच में अंधे हुए जा रहे हैं। वे प्रतिवर्ष मांस के निर्यात को बढ़ा रहे हैं। इस पर छल यह कि भारत सरकार के संबंधित मंत्रालय पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन विभाग, कृषि मंत्रालय, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण आदि लगातार इस बात का खंडन करते हैं तथा कहते हैं कि मांस निर्यात के लिए वे कोई अनुदान वितरित नहीं करते हैं। हकीकत यह है कि कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण अलग-अलग स्तर पर मांस निर्यात को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

गौ हत्या को लेकर देश में वर्षों से आन्दोलन चल रहे हैं। गौ हत्या का सम्पूर्ण निषेध आज भी नहीं है, जबकि आम चुनावों में मुख्य मुद्दे के रूप में चर्चित रहता आया है। इस नाम पर कई बार वोट मांगे गए और कई पार्टियाँ, कई उम्मीदवार, कई बार इस आधार पर चुनाव जीतने में सफल भी रहे हैं। लेकिन चुनाव होने के बाद सभी इस नारे को भूल जाते हैं। आज भी यही स्थिति है। गो रक्षा का सख्त कानून बनाना और उसे पूर्णरूप से लागू करना

समय की आवश्यकता है। एक मांग यह भी हो रही है कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कर दिया जाए। शासन का इनमें से किसी भी तथ्य की ओर ध्यान नहीं देना, दुर्भाग्यपूर्ण है।

विचारणीय है कि मांस निर्यातक और मांस निर्माता दोनों ही श्रेणी के व्यापारी हमारे देश के ही हैं। देश में सार्वजनिक तौर पर इस व्यवसाय के प्रति प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष विरोध के बावजूद इन व्यवसायियों का मन हिंसा से दूर होने का इसलिए नहीं होता क्योंकि केन्द्र शासन के विभिन्न मंत्रालय, संबंधित प्राधिकरण उन्हें उदारता से अनुदान देते हैं। शर्मनाक तो यह है कि ऐसी ही एक कम्पनी की मालिकी जैन व्यक्ति की निकली है। इससे पूरे देश में जैन समाज की बदनामी हुई है। एक भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री इस कथित मांस निर्यात उद्योग में आधुनिक संयंत्र के स्वामी हैं। उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह किया है, उनकी पत्नी जैन हैं, जिनके नाम से कामकाज होता है। मांस निर्माण में अनुदान की स्थिति यह है कि प्री कुलिंग, वाष्प, ताप ट्रीटमेंट, कत्लखानों के अपग्रेड करने पर पचास प्रतिशत, सुपरविजन स्टाफ के तकनीकी शिक्षण–प्रशिक्षण पर पचास प्रतिशत अनुदान दिया जाता है। अनुदान कुछ मदों पर साठ प्रतिशत, यहां तक कि सौ प्रतिशत भी दिया जाता है। एक ओर स्थिति यह है कि शालाओं के लिए भवन नहीं हैं, अस्पतालों में अमले की कमी है, जनकल्याणकारी संस्थाएं साधनों के अभाव में ठप्प सी हैं, दूसरी ओर मांस के निर्माण और इसके निर्यात को बढ़ावा देने के लिए अरबों रुपए अनुदान के रूप में दिए जा रहे हैं। वर्ष 1991–92 में मांस निर्यात नीति बनाई गई थी, उसी के अनुसार यह पापी कृत्य प्रोत्साहित हो रहा है। एक भैंस से 110 किलोग्राम मांस की प्राप्ति होती है। अभी कोई डेढ़ करोड़ भैंसों के मांस का निर्यात हो रहा है। ईस्वी सन् 2013–14 में साढ़े चौदह लाख टन भैंस का मांस बाहर भेजा गया। अन्य पशुओं का मांस इससे अलग है। गाय की हत्या व उसके मांस के निर्यात को रोकने के लिए पूरे देश में आन्दोलन चल रहा है। इसी गति से दुधारू पशुओं की हत्या होती गई तो भारत में गाय या भैंस का दूध प्राप्त होना भी दुर्लभ हो जाएगा।

जैन धर्म, प्राणीमात्र की अहिंसा का उपदेश देता है। अन्य धर्मावलंबी भी पशुओं तथा अन्य प्राणियों की जीवन रक्षा के समर्थक हैं। वधशालाओं की स्थापना, उनके यांत्रिकीकरण एवं मांस के निर्यात से धार्मिक जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचती है। लेकिन अब सिर्फ धार्मिक भावनाओं की दुहाई देने से ही काम नहीं चलेगा बल्कि मांस निर्यात के विरुद्ध सशक्त आन्दोलन चलाए जाने की आवश्यकता है। विशेषतः ऐसे प्रश्नों पर समग्र जैन समाज के पूज्यपाद आचार्यगणों को समय–समय पर एक साथ बैठकर विरोध के कार्यक्रम तैयार करने चाहिए।

चित्त समाधिमय बनाओ

(जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजयश सूरीश्वरजी म.सा.)

विज्ञान के आविष्कार आश्चर्यजनक होते हैं। हजारों किलोमीटर दूर रहने वाले व्यक्ति से मिनटों में बात हो जाती है। एक दूसरे के अंगों के प्रत्यारोपण से लाखों व्यक्तियों को लंबी उम्र की जिन्दगी प्राप्त हो रही है। चन्द्रमा के बाद दूरस्थ ग्रहों पर पहुंचने की बातें हो रही हैं। इतना होने के बाद भी विज्ञान अभी तक मन के पार को नहीं जान पाया है, जबकि मानव मन इतना नजदीक है। वर्तमान में अपने चारों ओर नजर डालें तो ऐसा लगता है कि मन की समस्याएं बहुत बढ़ गई हैं। आत्महत्या एवं हत्या की घटनाएं रोजाना घटित हो रही हैं। पहले ऐसी घटनाएं कम ही सुनने को मिलती थीं। ऐसा लगता है वर्तमान में मन को समझाने, स्थिर रखने और उस पर नियंत्रण रखने की पद्धतियाँ अप्रभावी होने लगी हैं। इसीलिए दशवैकालिक के रचनाकार (विद्वान) कहते हैं कि हमेशा मन और चित्त को समाधिमय बनाओ।

संसार में प्रत्येक वस्तु मनपसंद, मनोनुकूल नहीं मिलती हैं। किसी को कितनी ही बड़ी सत्ता क्यों न मिल जाए परन्तु फिर भी इस विश्व में वह अपनी चाहत अनुसार सभी कार्य नहीं कर सकता। भविष्य में भी नहीं कर सकेगा। यदि मनुष्य अपने मन में इन बातों को समझ ले तो उसके लिए मन को शान्त रखना सरल हो जाता है। जो मन के पीछे चलते हैं, वे विश्व में पिछड़ जाते हैं। जिन्होंने स्वयं को मन से आगे रखा, मन को संभाल लिया है, उनके लिए विश्व पीछे रह गया। मन से विश्व दर्शन करने में कोई बुराई नहीं, कारण कि ज्ञान तो आत्मशक्ति को बढ़ाता है। ज्ञान मिलने के पश्चात् मन पदार्थ पर अकारण अधिकार करने का प्रयत्न नहीं करता है। अभी होता यह है कि मन इन्द्रियों के अनुसार चलता है। इन्द्रियों को जो पसंद आता है उसे प्राप्त करने का प्रयास करती हैं और जो इन्द्रियों को पसंद नहीं होता है उसे अपने से दूर धकेलने की चेष्टा करती है। इसी वजह से मानव जीवन में आक्रोशमय, उदास और अशान्त बना रहता है।

शास्त्रकार कहते हैं कि चित्त को समाधि में रखो। आम भाषा में समाधि और समाधान दो शब्दों का अर्थ अलग-अलग लगता है। समाधि का अर्थ स्वयं में लीन रहना होता है और दूसरे अर्थ में बाहर की किसी भी प्रकार की सहायता के बिना प्रसन्न और सुखी रहना होता है। समाधान का अर्थ दूसरे साथ, उसकी या अपनी बात का आग्रह नहीं रख, तीसरा रास्ता निकालना होता है।

संस्कृत की दृष्टि से भी दोनों शब्दों में बहुत समानता लगती है। परन्तु समाधान साधन है और समाधि को साध्य माना गया है। समाधि एक फल है, कारण कि मन को अगर समाधिपूर्वक रखना है तो समाधान करना ही पड़ता है। भौतिक जगत में पदार्थों, व्यक्तियों के गुणों, स्वभाव में होने वाले परिवर्तनों को हमें स्वीकार करते हुए चलना पड़ता है। अगर

हम नदी से पूछते हैं कि सागर तक जाने में तुम्हारे मार्ग में पर्वत, झरने, वृक्ष आदि कई अवरोध आते हैं तो नदी का एक ही जवाब होता है-मैंने तो बहना तय किया है। प्रतिकार करने की बजाय स्वीकार कर लेना सरल है। प्रतिकार, प्रतिक्रिया की परंपरा है, जिसका अंत या समाधान स्वीकार करना ही होता है। फिर संघर्ष जैसी कोई क्रिया रहती ही नहीं है। नदी के समान हमें हमारे जीवन को आगे बढ़ाना है। चित्त की समाधि ही साधु जीवन का महान आदर्श है। साधुपना एक प्रयोगशाला के समान है जहाँ चित्त की समाधि रखने के लिए रोज नए नए प्रयोग करने होते हैं। यह प्रयोग हमें नये मार्ग सुझाता है। कभी अपना समग्र अस्तित्व भय में समा जाता है, ऐसी परिस्थितियाँ हो जाती हैं कि हमें प्रतिक्रिया करनी ही पड़ती है। ज्ञानी कहते हैं जरुरत हो तो शरीर से, वचन से भले ही प्रतिक्रिया में लगो परन्तु मन को तो सदैव ही इससे दूर रखो। अस्थिर हाथ से कीला जिस जगह लगाना है, नहीं लगेगा लेकिन स्थिर दशा में कीला दीवार में चाहे जितना गहरा लग सकेगा। अतः कैसी भी परिस्थिति हो मन को अस्थिर नहीं रखना।

अस्थिरता आपकी सभी प्रतिक्रियाओं को निष्फल बना देता है। मन समाधिस्थ, समाधि वाला हो। कोई भिखारी जब पुकारता है - दे उसका भी भला, न दे उसका भी भला तो इसमें पसन्द, ना पसंद, खराब और अच्छा सभी भावों का समावेश मिलता है, समाधि का महासागर झलकता है। दैनिक श्रावक जीवन में भी ऐसे प्रयोग करे तो आपको लगेगा कि कोई अदृश्य शक्ति, आपकी क्षमता को बढ़ा रही है। कभी आपको ऐसा भी अनुभव होगा कि 'मुझे संसार के कीचड़ में रहना पड़ रहा है।' ऐसे में बन सके तो संसार से हट जाओ, नहीं तो दिशा तो बदल ही दो। निवृत्ति लें या परिस्थितियों से मुकाबला करो। और ऐसा भी न कर सको तो तीर्थंकरों की महान आत्मा की शरण लो। उनकी अटूट श्रद्धा से चमत्कारिक तरीके से आपकी परिस्थिति में परिवर्तन हो जाएगा। प्रभु की शरणागति महान रणनीति है, इससे आपको अवश्य विजय प्राप्त होगी।

क्रोध वह अग्नि है...

क्षमा भाव को धारण किया जाता है। क्षमा को समझने के पहले क्रोध को समझना बहुत जरूरी है। क्रोध जीवन के लिए घातक ही नहीं, खतरनाक भी है। क्रोध वह अग्नि है जो जीवन व जगत को जलाकर तहस-नहस कर देती है। दूसरों पर अंगार फेंकने वाले जैसे यह नहीं जानते कि ऐसा करने से पहले स्वयं का हाथ जलता है। दूसरों के लिए गड्ढा खोदने वाले पहले स्वयं गड्ढे में गिरते हैं। दूसरों का बुरा सोचने वाले ये नहीं जानते कि पहले स्वयं का बुरा होता है। इसी तरह क्रोध करने वाले भी यह नहीं जान पाते कि इससे स्वयं की आत्मा का घात पहले होता है।

याद रखना क्रोध का प्रारंभ मूर्खता से होता है और अन्त पश्चाताप से होता है । अन्त में केवल खोना और रोना-धोना हो होता है, मिटना-पिटना, कूटना ही होता है।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी

(मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)

अनेक प्रकार से जीवों की रक्षा करते हुए तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी की आत्मा ने आठवें भव में संयमी जीवन व्यतीत किया। अन्त में आयु समाप्त होने पर देह का त्याग किया।

नवें भव में जीवानंद के शरीर को त्याग कर धन का जीव अपने मित्रों सहित दसवें भव में बारहवें देवलोक में इन्द्र का सामानिक देव हुआ। वहाँ उन्होंने बाईस सागरोपम की आयु पूर्ण की। दसवें भव से चलकर ग्यारहवें भव में धनसेठ (तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी का जीव) पुंडरीकिणि नामक नगर के राजा वज्रसेन की धारिणी रानी की कोख से जन्मा जिसका नाम वज्रनाभ रखा गया। दसवें भव में उनके साथ जो मित्र था उनका भी जन्म उनके सहोदर भाई के रूप में हुआ। जब ये वयस्क हुए तब इनके पिता वज्रसेन ने दीक्षा ग्रहण कर ली। वे स्वयंबुद्ध भगवान थे। वज्रनाभ चक्रवर्ती थे। जब इनके पिता को केवल ज्ञान हुआ तब इनकी आयुधशाला में भी चक्ररत्न का प्रवेश हुआ। वज्रनाभ के पुष्पकलावती विजय पर समस्त राजाओं ने मिलकर उनका चक्रवर्ती के रूप में अभिषेक किया। ये चक्रवर्ती की सभी सामग्रियों एवं सुविधाओं को भोगते थे परन्तु इनकी बुद्धि धर्म साधना में रहती थी।

एक बार वज्रसेन भगवान पुंडरीकिणि नगरी के पास विहार करते हुए पधारे तो वज्रनाभ भी उनसे धर्मोपदेश पाने व दर्शन हेतु गए। धर्मोपदेश सुनकर उनके मन में वैराग्य के भाव उत्पन्न हुए। उन्होंने अपने पुत्र को राज्य सौंपकर संयम जीवन स्वीकार किया। निरन्तर तपस्या के प्रभाव से उन्हें खेलादि लब्धियां प्राप्त हुईं। इसके पश्चात् बीस स्थानक की आराधना पूर्ण कर तीर्थंकर नाम कर्म बांधा। यूँ तो बीस स्थानकों में से कोई एक स्थानक की पूर्ण आराधना करने पर भी वह तीर्थंकर नामकर्म के बंध का कारण होता है परन्तु वज्रनाथ ने बीसों स्थानकों की आराधना की। उन्होंने चौदह लाख पूर्व तक़ अतिचार के बिना प्रव्रज्या व चारित्र का पालन किया और अन्त में पादपोगमन अनशन व्रत स्वीकार करके देह त्याग दिया। यहाँ से देह त्याग कर बारहवें भव में मुनि वज्रनाभ संलेखना और समाधिपूर्वक आयु पूर्ण कर सर्वार्थ सिद्धि नामक अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र देव हुए। वज्रनाभ का जीव अपने देवभव की 33 सागर की स्थिति पूर्ण कर आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के योग में माता मरूदेवी की कुक्षी में आया। संख्या की दृष्टि से तीर्थंकर और चक्रवर्ती की माताएं चौदह स्वप्न देखती हैं। इसी प्रकार माता मरूदेवी को भी स्वप्न दिखाई

देते हैं। सभी तीर्थकरों की माता प्रथम स्वप्न में हाथी को मुख में प्रवेश करते हुए देखती हैं, परन्तु माता मरूदेवी ने अपने प्रथम स्वप्न में वृषभ को अपने मुख में प्रवेश करते हुए देखा।

तीसरे के जब चौरासी लाख पूर्व, नवासी पक्ष (तीन वर्ष, 8 माह और 15 दिन) शेष रहे एवं माता मरूदेवी के गर्भ को नौ महीने और साढ़े आठ दिन व्यतीत हुए, सारे ग्रह स्थान में आये। चन्द्रयोग उत्तराषाढ़ नक्षत्र में स्थित हुआ। चैत्र महीने की अष्टमी के दिन अर्द्धरात्रि में माता मरूदेवी ने युगलधर्मी पुत्र को जन्म दिया।

वैदिक परम्परा के धर्मग्रन्थ श्रीमद् भागवत् में भी प्रथम मनु स्वायंभुव के मन्वन्तर में ही उनके वंशज अग्निध्र से नाभि और नाभि से ऋषभदेवजी का जन्म होना माना गया है। जिस समय भगवान का जन्म हुआ उस समय तीनों लोक में अंधकार को नाश करने वाली बिजली के प्रकाश की तरह उद्घोष हुआ। सभी दिशाएं शान्त थीं। शीतलमंद पवन ने सेवकों की तरह पृथ्वी के रज को साफ किया। क्षण भर के लिए नारक भूमि के जीवों को भी विश्रांति प्राप्त हुई।

छप्पन दिक्कुमारियों एवं चौंसठ इन्द्रों ने मिलकर प्रभु का जन्मकल्याणक किया। प्रभु के जन्म ग्रह में उपस्थित हुए। उन्होंने माता मरूदेवी और नवजात प्रभु का वंदन कर उनकी स्तुति की। बाल जिनेश्वर प्रभु का कल्याणक सम्पन्न कर चारों जाति के देव-देवेन्द्र आदि नन्दीश्वर द्वीप में पहुंचे एवं प्रभु के जन्म का अष्टान्हिका महोत्सव मनाया। इधर महाराजा नाभि एवं उनकी प्रजा ने भी प्रभु का जन्मोत्सव बड़े ही उत्साह एवं धूमधाम से मनाया। चारों ओर आनन्द की वर्षा हो रही थी।

जन्म महोत्सव सम्पन्न हुआ। रात में स्वप्न आया हो, इस तरह से माता मरूदेवी ने प्रातः जागृत हो नाभि राजा से इन्द्रादि देवों के आगमन की बात कही। गर्भकाल में माता मरूदेवी ने चौदह महास्वप्न में सर्वप्रथम सुन्दर वृषभ को देखा था, एवं भगवान के उरुस्थल (जांघ) पर भी वृषभ का चिन्ह था अतः माता-पिता ने प्रभु का नाम 'ऋषभ' रखा। चूर्णिकार के उल्लेख अनुसार भगवान ऋषभ का एक नाम 'काश्यप' भी रखा गया था। भगवान के साथ जन्मी हुई कन्या का नाम सुमंगला रखा गया। - क्रमशः

सुन्दर कौन?

जो प्रकृति से सुन्दर होता है।
जो अल्पाहार लेता है।
जो लम्बी सांस लेता है।
जो खुली हँसी हंसता है।
जो मृदुभाषी होता है।
जो पवित्र विचार रखता है।
जो सबके प्रति प्रेम रखता है।

-साध्वी राजीमति

शांति और क्रांति के दूत
दादा गुरुदेव

(धीमी गतिवाला)

सत्पुरुष प्रथम तो कोई वादा करते नहीं और करते हैं तो प्राण-प्रण से अपने वचन का पालन करते हैं। मुनिराज रत्नविजयजी आगम ज्ञान में निपुण हो गए हैं। अपने आगम गुरु श्रीपूज्य देवेन्द्रसूरिजी के पास से आगम अध्ययन पूर्ण करके वापस लौटते हुए वे उनसे एक वादा करते हैं। वादा करने के बाद वे विहार करके अपने गुरुदेव श्रीमद् विजयप्रमोदसूरीश्वरजी म.सा. के पास आ जाते हैं।

हमारे दादा गुरुदेव यानी मुनिराज रत्नविजयजी की दीक्षा के बाद के दस वर्षों का समय ज्ञानोपार्जन में व्यतीत हो गया। प्रथम दस वर्षों के दस चातुर्मास अत्यन्त शांतिपूर्वक सम्पन्न हुए। आलीशान भवन अभी तैयार नहीं हुआ है लेकिन उसकी मजबूत नींव इन दस वर्षों में पुख्ता हो चुकी है। शांति की नींव पर क्रांति का भवन बनना अब प्रारंभ होने वाला है। इन दस वर्षों में चातुर्मास करके जिन नगरों में गुरुदेव ने अपनी पावन स्थिरता दी, उनमें प्रथम दो वर्ष के चातुर्मास आपने अपने गुरुदेवश्री प्रमोदसूरिजी के साथ अकोला (संवत् 1904) और इन्दौर (संवत् 1905) में किए। उसके बाद के पाँच चातुर्मास क्रमशः उज्जैन, मन्दसौर, उदयपुर, नागोर एवं जैसलमेर में यति श्री सागरचन्द्रजी के सान्निध्य में उनसे अध्ययन करते हुए पूर्ण किए। संवत् 1911 में पाली, 1912 में जोधपुर और 1913 में किशनगढ़ में चातुर्मास आचार्य श्रीमद् विजयदेवेन्द्रसूरिजी के पास आगमों का अध्ययन करते हुए परिपूर्ण किए।

दादा गुरुदेव ने इन दस वर्षों में सविधि विनयपूर्वक बहुमानपूर्वक अत्यन्त उत्कृष्ट ज्ञानोपासना की। उनकी ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार की अनुपम आराधना अत्यन्त शुद्धतापूर्वक चल रही थी। तपाचार के प्रति भी उनकी अद्‌भुत निष्ठा थी। तप से वे अपनी आत्मा को तपाकर कुन्दन जैसी उज्ज्वल बना रहे थे। अभ्यंतर तप में स्वाध्याय, ध्यान, विनय आदि तो उच्चस्तरीय थे ही, साथ ही बाह्य तप भी उनका जबर्दस्त था। दीक्षा के बाद अपने प्रत्येक चातुर्मास में उन्होंने घोर तप किया। हर चातुर्मास में उन्होंने एक दिन छोड़कर चौविहार उपवास किया। तीनों चातुर्मासिक चतुर्दशी को बेला का तप करते थे। संवत्सरी और दीपावली का तेला और बड़े कल्प का बेला करते थे। साथ ही प्रत्येक नवपद ओलीजी के दिनों में आयंबिल तप करते थे।

कई अवसरों पर उन्होंने लंबी-लंबी तपस्याएं भी अपनी अंतरप्रेरणा के

अनुसार की थीं। इस तरह वे अपनी शक्ति का सम्पूर्ण उपयोग प्रभु के बतलाए हुए मार्ग पर चलने में करते थे, इसलिए उनका वीर्याचार भी अत्यन्त परिशुद्ध था। हमारे वर्तमान आचार्य भगवंत् श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी के अनुपम काव्यमयी शब्दों में वे 'पालक निर्मल पंचाचारी' थे।

श्रीपूज्य देवेन्द्रसूरिजी के पास से लौट आने के बाद उनकी यह हार्दिक कामना थी कि अब गुरुदेव श्रीमद् विजयप्रमोदसूरिजी की पावन शरण में ही रहना है और पंचाचार का शुद्धतापूर्वक पालन करते हुए संयम जीवन को सफल बना, आत्मश्रेय साधना है, आत्मानंद पाना है। व्यक्ति कुछ सोचता है लेकिन विधि का विधान कुछ और ही तय होता है, और इसलिए अन्तर की सोची हुई बातें हमेशा पूरी नहीं हो पाती हैं।

श्री पूज्य देवेन्द्रसूरिजी की वृद्धावस्था तो थी ही, वे व्याधिग्रस्त भी हो गए थे। अपने गच्छ भार को सम्हालने और अपने यति शिष्यों को पढ़ाने की जवाबदारी संभालने में वे अक्षम हो गए थे। उनके पास वर्तमान में ऐसा कोई व्यक्तित्व नहीं था, जो इन जवाबदारियों का वहन कर सके। गच्छ कैसे चलेगा? इस बात को लेकर वे निराशा में थे। इस निराशा में आशा की एक ही किरण थी 'मुनिराज रत्नविजय जी' । उन्होंने रत्नविजयजी की ज्ञान साधना, प्रबल पुरुषार्थशीलता, अत्यन्त जाग्रति और व्यवहार कुशलता को अत्यन्त निकट से परखा था। उन्हें मुनिराज रत्नविजय जी पर पूर्ण विश्वास था। अतः उन्होंने अपनी स्थिति बतलाकर रत्नविजयजी को बुलावे का संदेश भिजवा दिया।

मुनिराज रत्नविजयजी को संदेश मिलता है। 'कोई सेवा हो तो मुझे अवश्य याद करना' यह वादा निभाने का अवसर उपस्थित हो गया था। कृतज्ञ भाव उनके रोम रोम में बसा था। इन्कार करने की बात थी ही नहीं। गुरुदेव श्रीमद् विजयप्रमोदसूरिजी की आज्ञा लेकर पुनः बिछुड़ने की व्यथा के साथ, उग्र विहार करते हुए वे पूज्य श्री देवेन्द्रसूरिजी की सेवा में अतिशीघ्र पहुंच जाते हैं। वंदन, सुखशाता पृच्छा करते हैं। कहते हैं मेरे योग्य क्या आज्ञा है?

पूज्यश्री अपनी भावना रत्नविजयजी के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं, कहते हैं- 'मेरा शरीर अत्यन्त जर्जर हो गया है। रोगाक्रान्त है। अब इसका कुछ भरोसा नहीं। मेरा उत्तराधिकारी मैंने अपने शिष्य धीरविजय को बनाया है, लेकिन वह अभी छोटा है। उसे अभी ज्ञानार्जन करना है। गच्छ भार संभाल सके इतनी वय और योग्यता भी उसमें नहीं है। मेरे अन्य शिष्यों को भी ज्ञानार्जन में सहयोग देने जैसी मेरी स्थिति नहीं है। अतः धीरविजय व अन्य शिष्यों को ज्ञानार्जन करवाने और धीरविजय जब तक गच्छ व्यवस्थाएं सम्भालने में समर्थ न हो जाएं तब तक गच्छ भार संभालने की जवाबदारी तुम्हें सौंपकर मैं निश्चिंत हो जाना चाहता हूँ। इससे मैं अपनी आराधना भी शांतिपूर्वक कर सकूं। धीर विजय को पारंगत करना और मेरे पाट पर उसे आचार्य बनाना। उसमें आचार्य पद की योग्यता न लगे तो यह पदभार तुम

लेकर मेरे गच्छ को सम्हालना।' पद के व्यामोह से तो रत्नविजयजी सर्वथा अलिप्त थे। अतः धीरविजयजी को योग्य बनाने की, उन्हें व अन्य शिष्यों को पढ़ाने की जवाबदारी भी वे स्वीकार करते हैं। जब तक धीरविजय पाट सम्भालने के योग्य न हो जाएं, तब तक अन्य अनुभवी यतियों के सहयोग से गच्छ व्यवस्थाएं संभालने की बात भी वे स्वीकार करते हैं। इस तरह वे अपना वादा पूर्ण करते हैं। यह दादा गुरुदेव की उस समय की वचन निभाने की क्रांतिधर्मिता थी। वे जानते थे कि यह सम्पूर्ण कार्य कितना गुरुत्तर एवं कठिन है, फिर भी कर्तव्य भावना के साथ स्वीकृति दे दी। आखिर ज्ञान और अनुभव की शांतिकारी नींव पर क्रांति की ईमारत का बनना प्रारंभ करना ही था।

पूज्यश्री अपने शिष्य धीरविजय को बुलाते हैं। कहते हैं कि अब मुझे अंतिम आराधना करना है। मैंने सारी जवाबदारियां रत्नविजय जी को सौंप दी हैं। अब इनके दिशा-निर्देशन में तुम्हें रहना है और अपने अन्य गुरुबंधुओं के साथ इनसे ज्ञानार्जन भी करना है। धीरविजय जी अपने गुरु की बात सुनकर रो पड़ते हैं, कहते हैं हमसे आपका विरह सहन नहीं होगा। पूज्यश्री उन्हें संयोग के साथ वियोग जुड़े होने के अटल सत्य की बात बताकर सांत्वना देते हुए कहते हैं कि मोह में पड़कर दुःखी होना और शोक करना उचित नहीं है। धीरविजय जी, रत्नविजयजी के मार्गदर्शन में रहकर कार्य करने की गुरु आज्ञा स्वीकार करते हैं। इस तरह पूर्णतः निश्चिंत होकर पूज्यश्री अपनी अंतिम आराधना प्रारंभ कर देते हैं। चउविध आहार का त्याग करके संलेखना के साथ अपनी देह को समाधिपूर्वक गुजरात के राधनपुर नगर में विसर्जित कर देते हैं।

ज्ञानार्जन और ज्ञान दान दोनों में श्रुत भक्ति है। मुनिराज रत्नविजयजी महान श्रुतभक्त हैं। निःस्वार्थ भाव से धीरविजय जी सहित सोलह यतियों को उन्होंने धर्मशास्त्रों का ज्ञान देना आरम्भ किया। अब तक जो उन्होंने प्राप्त किया था उसे ओढरदानी की तरह बांटने लगे। उनकी विद्याध्ययन करवाने की शैली उत्कृष्ट कला थी। उनकी महान ज्ञानी के रूप में कीर्ति चारों दिशाओं में प्रसारित होने लगी। इससे आकृष्ट होकर कई गच्छों के साधु इनके पास पढ़ने के लिए आने लगे और ज्ञानामृत का पान करने लगे। कुल मिलाकर लगभग 50 साधुओं, यतियों को उन्होंने समान भाव से पढ़ाने का लाभ लिया। विद्या धन बांटने से बढ़ता है। लगभग सात वर्षों तक आपने खूब विद्या धन बांटा और स्वयं भी धर्मशास्त्रों में परिपक्व हो गए। पूज्यश्री का गच्छभार भी उन्होंने दो वृद्ध यतियों के सहयोग से भलीभांति वहन किया और धीरविजय को भी व्यावहारिक और धार्मिक ज्ञान कुशलतापूर्वक प्रदान किया। धीरविजय जी के कुशल बन जाने पर आचार्य की पदवी से अलंकृत करवाकर उन्हें तपागच्छ का 69 वाँ पट्टधर बनाया। इस तरह उन्होंने पूज्यश्री को दिए वादे को निष्ठापूर्वक निर्वहन किया।

(क्रमशः)

गुरु निंदा के दुष्परिणाम

(संकलन–सा.श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी)

भव समुद्र से पार उतारने वाले निर्यामक। ऐसे गुरु की प्रत्यक्ष में या परोक्ष में भी निंदा करने वाले शिष्य का इस भव में तो अनर्थ होता ही है लेकिन परभव में भी जिनवचन उनके लिए दुर्लभ हो जाते हैं।

निंदा से निंदक को दो प्रकार से नुकसान होता है, 1. दूसरों के जिस गुण की निंदा करता है, स्वयं में रहा हुआ वह गुण चला जाता है। 2.कर्म के क्षयोपशम से मिली हुई जिस लब्धि का दुरूपयोग होता है, वह लब्धि भवान्तर में नहीं मिलती है। निंदक, वचन लब्धि का दुरुपयोग करता है इसलिए भवांतर में वचन की लब्धि नहीं मिलती है। उसके कारण से वह एकेन्द्रिय बनता है। निंदा करने से कोई लाभ नहीं मिलता है।

गुरु की निंदा करने वाला इस भव में नुकसान पाता है, परभव में भी सन्मार्ग से दूर हो जाता है। गुरु की निंदा करने वाले शिष्य को इस भव में निम्नलिखित नुकसान होते हैं– 1. कोई भी वचन नहीं मानता है, 2. कोई भी उनके ऊपर विश्वास नहीं करता है, 3. उनका ज्ञान घट जाता है। 4. तप करने की शक्ति कम हो जाती है, 5. संयम में शिथिल हो जाते हैं, 6. उनके शिष्य नहीं बनते, शिष्य हों तो भी भाग जाते हैं, 7. उनके शिष्य भी उनके सामने कर्कश वचन बोलते हैं, 8. उनके शिष्य भी उनकी निंदा करते हैं, 9. उनका कोई काम सिद्ध नहीं होता है, 10. उनके मार्ग में बहुत विघ्न आते हैं, 11. उनकी शारीरिक, मानसिक, भौतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक हानि होती है, 12. अन्य लोग भी उनकी निंदा करते हैं, 13. चारों ओर अपयश फैलता है, सभी उनका साथ छोड़ देते हैं, 14. सभी लोग उनका पराभव करते हैं, 15. सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं होती है।

इस प्रकार की निंदा क़रने वाले शिष्य को इस भव में नुकसान होता है और परभव में भी वह दुःखी होता है। भगवान के वचन उनको नहीं मिलते हैं। भगवान के वचन मोह रूपी झेर को उतारने में श्रेष्ठ मंत्र के समान है। दुःख रूप अग्नि को ठंडा करने के लिए शीतल जल के समान हैं। प्रमाद की निद्रा से जागृत कराने में नवप्रभात की किरणों के समान है, कर्मरूपी कंटीली झाड़ियों को जलाने में अग्नि के समान है। विश्व के भव्य जीवरूपी बगीचा को हरा–भरा रखने में माली के समान है। स्याद्वाद रूप समुद्र को उल्लसित करने में पूर्णिमा के चांद के समान है। देव, असुर और मनुष्य से पूजित इष्ट की प्राप्ति के लिए क़ल्पवृक्ष के समान है। ऐसे जिनवचन को प्राप्त कर भूतकाल में अनन्त सिद्ध हुए, वर्तमान में भी बहुत सिद्ध हो रहे हैं और भविष्य में भी अनन्त सिद्ध होंगे। जिनवचन के बिना भवसागर से पार उतारने का कोई दूसरा समर्थ उपाय या माध्यम नहीं है। इसलिए दुःखमय संसार से छूटने के लिए, स्वयं

को इससे बाहर निकालने के लिए और सुखमय मुक्ति प्राप्त करने में जिन वचन का मिलना बहुत जरूरी है। जिनवचन नहीं मिले तो जीव दुःखी होता है।

इसलिए गुरु की निंदा करने वाले को परभव में प्रभु का वचन, जैन धर्म और धर्म अनुष्ठान आदि कुछ भी नहीं मिलता है। जगत में यह नियम है कि जिसकी आशातना करते हैं वह भवांतर में दुर्लभ होता है। गुरु की निंदा करने वाला, जिनवचन की आशातना करता है, इसलिये भवान्तर में उसके लिए यह दुर्लभ होती है। गुरु की निंदा करने से संसार का भ्रमण बढ़ जाता है, इसलिए भी भवभ्रमण से डरने वाले शिष्यों को गुरु की निंदा का त्याग करना चाहिए।

मुस्कुराहट

हर व्यक्ति में यह सामर्थ्य होता है कि वह सकारात्मक सोच से प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अनुकूल बना सके। इसके लिए भय, चिंता, संशय, घृणा, ईर्ष्या के विचारों से दूर रहना अपेक्षित है। यह सब नकारात्मक विचार हैं। सफलता के लिए इन नकारात्मक विचारों से बचना जरूरी है।

एक मल्टीनेशनल कम्पनी में भोजन के पश्चात् जब कर्मचारी ऑफिस में लौटने लगे तो उन्होंने नोटिस बोर्ड पर एक सूचना देखी, जिस पर लिखा था– 'कल उनका एक साथी दुनिया को अलबिदा कह गया है। साथ ही यह भी लिखा था वह उनकी प्रगति में बाधक था।' सभी कर्मचारियों को श्रद्धांजलि देने के लिए बुलाया गया। पहले तो उन्हें दुःख हुआ कि हमारा एक साथी चला गया है किन्तु साथ ही यह भी विचार कर रहे थे कि वह कौन था, जो हमारी प्रगति में बाधक बन रहा था। हॉल खचाखच भर गया। वहां एक पर्दा लगा हुआ था, जिस पर सूचना थी कि मृतक की तस्वीर पर्दे के पीछे दीवार पर लगी है। एक-एक कर सभी पीछे जाएं, उसे श्रद्धांजलि अर्पित कर प्रगति के पथ पर कदम बढ़ायें।

कर्मचारियों के चेहरे पर हैरानी-परेशानी के भाव थे। सब सोच रहे थे– यह क्या हो रहा है? कर्मचारी पर्दे के पीछे जाते और तस्वीर को देखकर अवाक रह जाते। दरअसल दीवार पर एक आइना लगा हुआ था जिसके नीचे लिखा था कि दुनिया में एक व्यक्ति है जो आपकी प्रगति को रोक सकता है, वह है आपका नकारात्मक विचार। हाल के बाहर खड़े कंपनी के अधिकारियों ने कर्मचारियों का स्वागत करते हुए कहा– 'आज आप अपनी नकारात्मक प्रवृत्तियों एवं विचारों को दफना चुके हैं। अब सकारात्मक सोच के साथ विकास का शिखर छूने के लिए अपने कदमों को आगे बढ़ायें।' सकारात्मक सोच को विकसित करने के अनेकों सूत्र हैं जिनमें एक मुख्य सूत्र है– 'मुस्कुराते रहिए...'

हिन्दू साहित्य में जैन धर्म

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

हिन्दू साहित्य में 'श्री विष्णु पुराण' से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में वैष्णव धर्म में भी एक ऋषभदेव जी को मानते थे जिनका जीवन काल और जीवन चरित्र जैन धर्म के तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी से काफी मिलता-जुलता है। इसी प्रकार भागवत् पुराण में भी ऋषभदेवजी का जैसा विस्तृत उल्लेखहै उससे यह स्पष्ट होता है कि वे जैनों के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेवजी ही थे।

वित्सन के विष्णु पुराण में भागवत पुराण पर लिखी गई टिप्पणी में भगवान श्री ऋषभदेवजी की तपस्या का वर्णन किया गया है। इसमें श्री ऋषभदेवजी के भ्रमणकाल की घटनाओं के दृश्य बहुत रोचक ढंग से उल्लेखित हैं। इनमें कोंक, बंकाट,कटुक, दक्षिण कर्नाटक, द्वीप कल्प के पश्चिम भाग का रोचक वर्णन करते हुए स्पष्ट किया गया है कि इन क्षेत्रों में बहुलता से जैन धर्म को स्वीकार कर लिया गया था।

अन्य तीर्थंकरों में पांचवें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथजी भरत के पुत्र सुमति स्पष्टतः ज्ञात होते हैं। जिनके विषय में श्री भागवत पुराण में उल्लेख मिलता है कि 'वह कितने ही नास्तिकों द्वारा देवरूप में पूजा जाएगा।' इसके अलावा बाईसवें तीर्थंकर श्री अरिष्ठनेमि अर्थात् भगवान श्री नेमिनाथ जी उग्रसेन की पुत्री राजीमति के उल्लेख के कारण श्रीकृष्ण की कथा से संबंधित हैं। श्री विष्णु पुराण एवं श्री भागवत पुराण के उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि भगवान श्री ऋषभदेवजी, जैनों के पहले तीर्थंकर ही हैं।

हिन्दू धर्म के एक प्राचीनतम सूत्र से भी हमें जैन तत्व ज्ञान के संबंध में जानकारी मिलती है। ब्रह्मसूत्र जिसे तेलांग और अन्य पंडितों ने ईसा पूर्व चौथी सदी की प्राचीन रचना माना है, उसमें आत्मा संबंधी जैन धर्म की मान्यता एवं स्याद्वाद का खंडन किया गया है। इसके अतिरिक्त महाभारत, मनु स्मृति, शिव सहस्त्र, तेत्तरीय-आरण्यक, यजुर्वेद संहिता सहित अन्य हिन्दू शास्त्रों में भी हमें जैन धर्म संबंधी उल्लेख प्राप्त होते हैं।

प्राचीन जैन धर्मग्रन्थ प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी के समय से ही चले आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त पूर्वों का उपदेश जो स्वयं भगवान महावीर ने दिया और बाद में ग्यारह अंगों की रचना उनके गणधरों ने की। इससे स्पष्ट हो जाता है कि भगवान महावीर और उनके उत्तराधिकारी गणधर आगम साहित्य के कर्त्ता हैं। भगवान श्री पार्श्वनाथजी के संबंध में सर्वमान्य प्रमाण हमें जैन

शास्त्रों में कमोवेश अंश में मिलते हैं। उदाहरण के लिए श्री भद्रबाहु के कल्पसूत्र में भगवान श्री पार्श्वनाथजी व महावीर स्वामी के धर्मों का उल्लेख है। अन्य में भगवती सूत्र का वह भाग जहां श्री पार्श्वनाथजी के अनुयायी कालासवेसियपुत्त एवं भगवान महावीर के शिष्य के बीच हुए संवाद का वर्णन दिया गया है, जिसमें कालासवेसियपुत्त ने 'अनिवार्य प्रतिक्रमण सहित चार व्रतों के स्थान पर पांच व्रत ग्रहण कर साथ रहने की आज्ञा मांगी है।'

उत्तराध्ययन सूत्र में भी इसी बात की पुष्टि की गई है कि भगवान पार्श्वनाथ का एक शिष्य भगवान महावीर के शिष्य से मिला एवं दोनों ने महावीर प्रवर्तित धर्म और श्री पार्श्वनाथ के प्राचीन धर्म का समन्वय किया। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि भगवान श्री पार्श्वनाथजी एक ऐतिहासिक पुरुष थे।

इस तरह वैदिक साहित्य में भी जैन धर्म का उस समय प्रचलित विभिन्न शब्दों श्रमण, ब्रात्य आदि के रूप में उल्लेख प्राप्त होता है।

कितना बदल गया इन्सान

श्री अशोक गंगवाल

अपना स्वार्थ हल करने के लिए
सृष्टि और प्रकृति के साथ
खिलवाड़ कर रहा है, इंसान
जंगलों की कटाई करके,
मौत के मुँह में जा रहा है इंसान
सुनामी लहरों से, भूकम्प से भी
सबक नहीं ले रहा है इंसान
अपने ही हाथों, स्वार्थ की खातिर
विनाश को न्यौता दे रहा है इंसान।
पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ रहा है इंसान

कुछ चंद लोगों के बुरे कर्मों की सजा
सबको मिल रही है,
प्रदूषण की वजह से ओजोन परत
छलनी छलनी हो रही है।
सूर्य की किरणें धरती पर,
सीधे-सीधे पड़ रही हैं।

जंगलों की कटाई से ऑक्सीजन और
बारिश भी नसीब नहीं हो रही है
हवा एवं पानी के लिए तरस रहा है इंसान।

देश के कुछ बेईमान नेताओं ने
देश को खोखला कर दिया,
बची-खुची थोड़ी हरियाली और जंगल को
चोरों और लुटेरों के हवाले कर दिया।

क्या सही सपने हमारे पूर्वजों ने देखे थे
और कहा था कि मेरा भारत है महान,
वाह रे इंसान! वाह रे इंसान!

माता श्री मरूदेवी

वर्तमान अवसर्पिणी का तीसरा आरा जब समाप्त होने जा रहा था, जब युगली जीवन की बिदाई बेला उपस्थित हो गई थी। जब मानव नगरीय सभ्यता का सूर्य उदयांचल के शिखर पर आने को प्रस्तुत था, तब अयोध्या में महाराज नाभि राज्य कर रहे थे। उन्हीं की धर्मपत्नी थीं धर्मशीला, विश्व सभ्यता की आदि जननी जैन संस्कृति की उद्गमस्रोत रूपा माता श्री मरुदेवी। इनकी सर्वकल्याण कारिणी शुभदा कुक्षी से प्रथम तीर्थंकर भगवान् श्री ऋषभदेवजी ने जन्म लिया था।

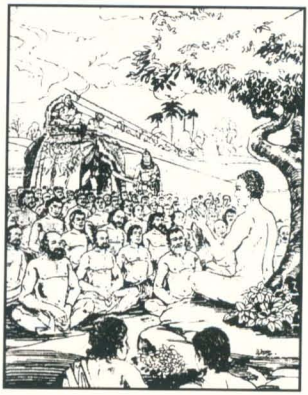

वैदिक दृष्टि से श्री ऋषभदेवजी का जन्म प्रथम चतुर्युगी के सतयुग के अन्त में हुआ था। पुराणों के अनुसार चतुर्युगी जिसमें हम रह रहे हैं, यह सातवीं चतुर्युगी है। एक चतुर्युगी 64,80,000 (चौंसठ लाख अस्सी हजार) वर्ष की होती है। इस प्रकार लगभग साढ़े चार करोड़ वर्ष पूर्व ऋषभदेवजी का जन्म काल वैदिक सभ्यता ने स्वीकार किया है।

जैन दृष्टि से चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म आज से 2577 वर्ष पूर्व हुआ था। इस तरह उनसे असंख्यात वर्ष पहले श्री ऋषभदेवजी का जन्म माना गया है। अतः श्री ऋषभदेव जी की माता मरूदेवी का काल ऐतिहासिक वर्षगणना के मान से गणना से बाहर की वस्तु है।

माता मरूदेवी ने चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन एक पुत्र के रूप में संसार को एक ऐसी दिव्य विभूति प्रदान की जिसका आध्यात्मिक एवं सांसारिक जीवन संसार भर के लिए वंदनीय है। विश्व सभ्यता के संस्थापक, समग्र मानवता के विकास के प्रणेता, विश्व संस्कृति के उन्नायक, विश्व वन्द्य पुत्र को प्रथम तीर्थंकर के रूप में पाकर माता मरुदेवी ने विश्व-जननी जगदम्बा कहलाने का गौरव प्राप्त किया। धन्य है वह माता जिसने अपने पौत्रों में प्रथम चक्रवर्ती भरत पाया, जिसकी दो पौत्रियां ब्राह्मी और सुन्दरी वर्तमान आध्यात्मिक परम्परा की पहली साध्वियाँ बनीं और बाहुबली जैसे बलवान एवं केवली पौत्र को पाकर जिसका जीवन सफल बना।

माता मरूदेवी सुखाकांक्षी मोह-ममता के दल-दल में फंसी महिला नहीं थी। उसने श्री ऋषभ के मुख से सुना-

'माँ! वीर क्षत्राणियाँ बच्चों को युद्ध भूमि में हंसते हंसते भेजें, इस मार्ग का प्रवर्तन यदि आपके पुत्र ने किया है तो काम-क्रोधादि विकारों को जीतने के लिए जाते हुए पुत्र को भारतीय माताएं सहर्ष विदाई दें। इस परम्परा का प्रारम्भ आपको करना है। आशीर्वाद दो माँ। आपका पुत्र इस धर्मयुद्ध में विजयी बने।

माता मरूदेवी का वात्सल्य यह सुनकर नाम मात्र को भी विचलित नहीं हुआ। उसकी ममता को सिर उठाने की हिम्मत ही नहीं हुई। उन्होंने पुत्र को अपने वरद् आशीर्वाद की छाया में मंङ्गल कामनाओं के साथ विदा

किया। माता मरूदेवी के आशीर्वाद का ही फल था कि श्री ऋषभदेवजी ने तीर्थंकर की महती गरिमा प्राप्त की।

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी के दिन जब पुरिमताल में भगवान श्री ऋषभदेवजी ने ज्ञान की अंतिम सीमा रूप केवलज्ञान को प्राप्त किया, तब अपने पौत्र भरत के द्वारा माता मरूदेवीजी को यह सूचना प्राप्त हुई तो वे हर्ष विभोर हो उठीं और हाथी के हौदे पर बैठ उनके केवलज्ञान महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए निकल पड़ीं। उन्होंने हौदे में बैठे-बैठे जब दूर से ही भगवान श्री ऋषभदेवजी के दर्शन किए तो उनका वात्सल्य प्रभु भक्ति में परिणत हो गया। हृदय में संवेग जागा, वैराग्य उमड़ा, ज्ञान का उदय हुआ और माता मरूदेवी केवलज्ञान प्राप्त कर सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो गईं।

कितने गौरव की बात है कि इस काल की मोक्ष-गमन परम्परा में माता मरूदेवी ही ऐसी मंगलमयी महिला हैं जिन्होंने मोक्ष धाम में प्रथम प्रवेश करके महिला मात्र को वंदनीय होने का गौरव प्रदान किया है।

वरदायी परिषद्

(श्रीमती ममता जैन, कुक्षी (धार) म.प्र.)

जैन जगत के इस कल्पवृक्ष का, हमें नहीं आभास हुआ।
परिषद् है साकार कल्पतरू, हमको अब विश्वास हुआ।

गुरुवर यतीन्द्रसूरिश्वर ने यह तरू यहाँ लगाया है।
गुरु जयन्तसेन ने सिंचन कर इसको सबल बनाया है।
इन पचपन वर्षों में तरू ने, कैसी तरुणाई पायी है,
हारे हुए पथिकों की इसने थकन मिटाई है।
जिसकी थकन मिटी, फिर उसका, कभी न कम उल्लास हुआ,
परिषद् है साकार कल्पतरू, हमको अब विश्वास हुआ।।

इस परिषद् की दिव्य गंध जो, छाई दसों दिसाओं पर,
रिद्धि-सिद्धि के अनुपम फूल फल लगे हुए हैं शाखों पर।
शीतल पवन झकोरे इसके, सबको बहुत सुहाते हैं,
जो आते मुख मलीन लिए, वे खिले फूल बन जाते हैं।
वातावरण इसका अनुपम, पतझड़ भी मधुमास हुआ।
परिषद् है साकार कल्पतरू, हमको अब विश्वास हुआ।।

जो 'ममता' बन कर आती है, पाती है अनुदान यहाँ,
पी सुधा संजीवनी, भरते उनमें नित नवप्राण यहाँ।
परिषद् तो धरती की सच्ची एक संस्था सुखदाई है,
सकल मनोरथ पूरे होते, यह ऐसी वरदायी है।
जो भी आया परिषद् में कभी न फिर निराश हुआ।
परिषद् है साकार कल्पतरू, हमको अब विश्वास हुआ।।

फूल भी औषधीय गुणों से भरपूर हैं

– श्री अनोखीलाल कोठारी, उदयपुर

फूल सिर्फ खुबसूरती और खुशबू ही नहीं फैलाते बल्कि औषधीय गुणों से भी युक्त होते हैं। यह बात अलग है कि हम इस बात से पूरी तरह वाकिफ नहीं है कि हर फूल किसी न किसी बीमारी का ईलाज भी है। भारत में पाए जाने वाले असंख्य पौधों के फूलों का उपयोग भी इलाज के रूप में किया जा सकता है।

फूल, प्रकृति की अनुपम देन हैं, जिन्हें देखने मात्र से व्यथित मन पुलकित हो जाता है। प्रकृति के श्रृंगार फूलों को प्रकृति का आभूषण भी कहा गया है। सुबह की सूरज की खिली किरण, खिले फूलों को देखने से कैसा सुकून मिलता है। फूलों की महक और खुशबू आपको आनन्द से भर देती है। हर खुशी के अवसर पर फूलों का उपयोग होता है। धार्मिक कार्य, पूजा, अर्चना में सम्पूर्णता फूलों के बिना नहीं होती। अब यह जानने में आया है कि विभिन्न फूलों में औषधीय गुण भी निहित होते हैं, जो किसी न किसी बीमारी के इलाज में सहायक हो सकते हैं। मेवाड़ व राजस्थान के रहवासी क्षेत्रों में फूलों से बीमारी के इलाज का प्रचलन है। इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से जानकारी करने पर पता चला है कि ये पारंपरिक अनुभवों से ऐसे फूलों का भी उपयोग करते हैं जिन्हें हम बेकार समझते हैं। आज भी कई बीमारियों का इलाज फूलों के रस का उपयोग कर स्वयं ही कर लेते हैं।

बीमारियों के अनुसार फूलों के उपयोग में (1) गुलाब का फूल त्वचा रोग से बचाव और पित्त शांत करने में किया जाता है। इसमें संक्रमण रोधी गुण भी होता है। (2) बासा का फूल– खांसी ठीक करने में प्रयुक्त होता है। (3) खेजड़ी के फूल का उपयोग गर्भपात रोकने के साथ अन्य बीमारियों में होता है। (4) हरसिंगार, साइटिका के इलाज में प्रयुक्त होता है। (5) चिड़ियाघास के फूल का प्रयोग प्रसव के बाद ब्लीडिंग रोकने में किया जाता है। (6) चांट के फूल से कुछ सुगंधित तेल सा प्राप्त कर सकते हैं। (7) लेमनग्रास के फूल का उपयोग चाय में डालकर करने से जुकाम में आराम मिलता है। (8) सेवल के फूल यौन रोगों, त्वचा रोगों सहित अन्य बीमारियों में उपयोगी होते हैं। (9) चमेली के फूल त्वचा व अन्य रोगों में कारगर हैं। (10) पलाश के फूल लू लगने, स्त्री रोगों, त्वचा रोगों, डायबिटीज में उपयोगी होते हैं।

फूल प्रकृति की आत्मा है। प्रकृति ने विभिन्न रंगों के फूल बनाए हैं,उनका इस्तेमाल करके आप अपने रिश्तों में ताजगी और प्यार भर सकते हैं। किसी को मनाना हो, गुस्सा कम करना हो, प्यार जताना हो, माफी मांगना हो, या फिर किसी को शुभकामनाएं देनी हों तो फूल आपकी भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम बन सकते हैं। इससे आपके रिश्तों में तो मधुरता आएगी ही, साथ ही बिना शब्दों के भी आप अपनी भावनाएं व्यक्त कर पाएंगे।

कैसा हो घर के आसपास का वातावरण

घर के समान ही महत्वपूर्ण होता है घर के आसपास का वातावरण। शायद यही वजह है कि निवास स्थल का चयन करने से पहले परिवेश का ध्यान रखा जाता है। हर जगह की सकारात्मक एवं नकारात्मक सूक्ष्म ऊर्जा शक्तियों का प्रभाव आसपास रहने वालों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता ही है। सामाजिक व्यवस्था में जीवनयापन के क्रम में प्रत्येक व्यक्ति, परिवार को कभी न कभी घर की खरीदारी, बदलाव के रूप में आवास स्थल का चयन करना ही होता है। भूखण्ड अथवा मकान खरीदते समय आसपास के वातावरण पर अवश्य दृष्टि डालें और निम्नलिखित बातों का ध्यान रखने का प्रयास करें-

1. जिस भूखंड पर आसपास के घरों का विसर्जित पानी या वर्षा जल इकट्ठा होता हो, वहां मकान नहीं बनाना चाहिए।
2. दो बड़े भूखंडों के मध्य छोटा भूखंड न खरीदें।
3. भूखंड के आगे या पीछे मंदिर आदि धार्मिक स्थल का होना अच्छा नहीं है। धार्मिक स्थल की परछाई निवास स्थल पर नहीं पड़नी चाहिए। यदि भवन और मंदिर में 100-120 फुट का अन्तर है तो अशुभ असर समाप्त माना जाएगा।
4. भूखंड या मकान के दक्षिण और पश्चिमी दिशा की ओर बड़े भवन, पर्वत, पेड़ आदि का होना उत्तम है। ऐसे स्थल धन, स्वास्थ्य, समृद्धि के लि शुभ माने जाते हैं।
5. भूखंड के उत्तर या पूर्व दिशा में जलस्रोत जैसे कुंआ, नल, नदी का होना शुभ है। पानी का बहाव दक्षिण से उत्तर या पश्चिम से पूर्व की ओर होना चाहिए।
6. ऊपर वर्णित जलस्रोत यदि भूखंड के दक्षिण या पश्चिम दिशा में हों तो अशुभ है।
7. उत्तर और पूर्व दिशा में बड़े भवन, पहाड़, पेड़ आदि का होना अशुभ है।
8. दो बड़े मकानों के मध्य छोटा और दबा हुआ मकान न खरीदें। इससे यहां रहने वालों के मानस पटल पर एक दबाव और दुःख का कारण बनता है।
9. गली के अंत का प्लाट या बंद गली का प्लाट अशुभ है। विशेषतः गली के अंत का दक्षिण मुखी प्लाट जो अन्य सभी दिशाओं से बंद हो, अत्यन्त अशुभ माना जाता है।
10. निवास स्थल के सामने कोई बिजली की खंभा, गड्ढा, नुकीले पत्थर, कुआ या सामने के मकान का नुकीला हिस्सा (जो निवास स्थल को वेध रहा हो) सही नहीं है। पीपल और बड़ जैसे पेड़ भी घर के सामने नहीं होने चाहिए।
11. भूखंड के दक्षिण, नैऋत्य (उत्तर पश्चिम), वायव्य(दक्षिण पश्चिम), आग्नेय (पूर्व दक्षिण) या भूखंड के मध्य में कुए का होना अशुभ है।
12. भूखंड के आसपास श्मशान घाट, कब्रगाह या समाधि नहीं होना चाहिए।
13. आवासीय भूखंड के लिए विशेष ध्यान दें कि इसके समीप कोई फैक्ट्री, सिनेमा हाल, स्कूल या अस्पताल आदि न हों। ऐसे स्थानों पर आवागमन अधिक होने से ध्वनि प्रदूषण और मानसिक तनाव बना रहता है।
14. भूखंड के ऊपर से बिजली की हाई वोल्टेज की तारें नहीं गुजरनी चाहिए।
15. अपने भूखंड के पूर्व एवं उत्तर में स्थित अन्य भूखंड, भूतल का दक्षिण, पश्चिम से नीचा होना शुभ होता है।

आत्मा है (2)

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी)

इस प्रश्न का जवाब पाने के लिए अपने आप से पूछिये 'मैं अर्थात कौन?' मैं अर्थात् मनुष्य? सीता या गीता? पुरुष या स्त्री? डॉक्टर... वकील...?, साधु या श्रीमंत...? नहीं! ये सब बाह्यरूप हैं। इनकी पहचान से हम अपनी आत्मा को भूल गए हैं।

रमण नाम से एक महर्षि हुए। बचपन में ही उनके पिताजी गुजर गए। घर के लोग रोने लगे और रमण से बोले- बेटा पिताजी चले गए। पिताजी का शरीर तो घर में ही था। रमण सोच में पड़ गया- पिताजी गए। अर्थात् कौन गया? हाथ, पैर, नाक, कान, आँख, शरीर के प्रत्येक अंग सुरक्षित हैं, पिताजी सशरीर यहाँ पर उपस्थित हैं, फिर भी पिताजी नहीं रहे। अर्थात् पिताजी और पिताजी का शरीर अलग है।

महर्षि रमण इस प्रश्न की खोज के लिए बचपन में ही घर से निकल गए। एक बार एक मंदिर में रुके। सोते हुए ढेर सारी चिटियों ने उन्हें काटा। खून निकल आया। जागने पर उन्हें भान हुआ कि शरीर और आत्मा अलग है। खून शरीर से निकल रहा है, मुझसे (?) नहीं। पीड़ा शरीर को हो रही है, मुझे(?) नहीं। मैं अलग हूँ, शरीर अलग है। मैं अर्थात् शरीर से भिन्न आत्मा। शरीर और आत्मा भिन्न है, इस बात का साक्षात्कार या अनुभव होना ही आत्म साक्षात्कार है। इस प्रकार बालक रमण, महर्षि रमण बन गए।

हमें भी विचार करना है कि मैं अर्थात कौन? हम शरीर से ही अपना मूल्य आंकते हैं, किन्तु जैसे कैला और उसका छिलका अलग है, डायमंड और डिब्बा जुदा है, गहने और तिजोरी भिन्न है, उसी प्रकार आत्मा और शरीर भी पृथक-पृथक हैं। अब यह विचार करें कि शरीर और आत्मा में से किसकी कीमत अधिक है? यदि कोई व्यक्ति केले के छिलके को संभाले और केला फेंक दे, डिब्बे की रक्षा करे और हीरे को खुला छोड़ दे, तिजोरी की सार-संभाल रखे और गहनों को कहीं भी पटक दे तो आप उसे क्या कहेंगे? शायद महामूर्ख ही कहेंगे। हैं न! हमारी स्थिति भी कमोबेश यही है। हम भी आत्मा की चिंता नहीं करते रात-दिन शरीर का ही ध्यान रखते हैं, उसे ही संभालते हैं।

व्यक्ति शब्दों से तो बोलता है कि मैं अर्थात् 'आत्मा' किन्तु इस बात को अनुभव नहीं कर पाते। यदि सच्चे अर्थों में व्यक्ति अपने आत्मस्वरूप का अनुभव कर ले तो वह इन्द्रियों के विषयों में लम्पट नहीं बना रहता। रात-दिन शरीर की साज-सज्जा में ही नहीं लगा रहता है। छोटे-छोटे प्रसंगों में कषायों से वह आवेशित नहीं होता है, भोगों में आसक्त नहीं बनता, भौतिक सुखों में लालायित नहीं रहता। व्यक्ति अपनी मूल सत्ता आत्मा को ही चूंकि भूला बैठा है, इसीलिए ये सारी दुर्दशा हुई है।

जिन मंदिरों में जाते हैं। प्रभु के सामने स्तुतियाँ बोलते हैं, कहते हैं-'सेवक कहिने बुलावजोरे।' अब यदि प्रभु कहें कि मैं तो सेवक कहकर बुलाने के लिए तैयार हूँ

किन्तु तू तो मेरे पास सेठ बनकर, ट्रस्टी बनकर, पति, सास बनकर, डॉक्टर बनकर ही आया है। कभी सेवक रूप में तो आया ही नहीं है। व्यक्ति मंदिर में भी शरीर के संबंधों को मुख्य करके जाता है, आत्मा को मुख्य करके नहीं जाता।

आत्म तत्व को नहीं जाना इसीलिए बहुत सामायिक की पर समता नहीं आई, आयम्बिल किए किन्तु खाने की आसक्ति कम नहीं हुई, प्रतिक्रमण नियम से करते हैं किन्तु पापों का भय पैदा नहीं हुआ, पूजा की किन्तु चित्त की प्रसन्नता प्राप्त नहीं हुई। धर्मस्थानों पर भी पक्के संसारी बनकर रहे। इसका मतलब यह नहीं कि ये व्यवहार धर्म छोड़ दें। ये सब करना है किन्तु साथ ही साथ निश्चय धर्म अर्थात् आत्मा का भी विचार करना है।

प्रश्न होता है– आत्मा कैसी है?

आत्मा अरूपी है। इसका कोई रंग, गंध, स्वाद, स्पर्श आदि नहीं है। यह हल्की भारी भी नहीं है और उसका कोई आकार भी नहीं है। पानी का क्या आकार हुआ? जिस बर्तन में डाला, वैसा ही आकार हो जाता है। आत्मा भी जैसा शरीर धारण करती है, वैसे ही आकार वाली हो जाती है। चींटी का शरीर धारण करती है तो सूक्ष्म प्रतीत होती है, हाथी का शरीर धारण करती है तो विशाल बन जाती है।

आत्मा में अनन्तज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य सहित अनन्त गुण विद्यमान हैं। सम्पूर्ण विश्व के समस्त व्यवहारों के मूल में आत्मा है। यदि आत्मा ही न हो तो इस जगत के किसी भी पदार्थ का कोई मूल्य ही न रहे। यदि आत्मा ही न हो तो बंगला, गाड़ी, टी.वी., धन, वैभव, भोजन आदि दुनिया की सभी भौतिक सामग्रियाँ किसी काम की नहीं रहें। यहाँ आत्मा सब्जेक्ट है और अन्य सभी वस्तुएं आब्जेक्ट हैं। सब्जेक्ट के बिना आब्जेक्ट की कोई आवश्यकता नहीं रहती है। आत्मा का इतना अधिक महत्व होने पर भी कभी हमारी दृष्टि उसकी तरफ नहीं जाती। खजाना स्वयं के भीतर होने पर भी उसका ध्यान नहीं है और हम बाहर भटक रहे हैं। तो ऐसे कैसे प्राप्त होगा आत्म खजाना, आनन्द का खजाना, शक्ति का खजाना? (समाप्त)

महावीर का अन्तर्बोध

पुस्तक का नाम :– महावीर का अन्तर्बोध। संकलनकर्ता/ अनुवादक :– श्री दुलीचन्द जैन। प्रकाशक :– रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलॉजी, सुगन हाऊस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकार पेट, चैन्नई–600 079। मुद्रकः– चौधरी ऑफसेट प्रा.लि., उदयपुर। पृष्ठ संख्या–195। कव्हर, छपाई, सफाई :– ठीक। भाषा :– हिन्दी एवं अंग्रेजी। मूल्य :– रु.50=00

उत्तराध्ययन सूत्र में तीर्थंकर महावीर की अंतिम देशना आलेखित है। इसमें जैन दर्शन के विषयों के साथ तत्वज्ञान, आध्यात्म, नैतिक व व्यावहारिक जीवन का पारदर्शन है। प्रस्तुत पुस्तक में उत्तराध्ययन सूत्र में व्याप्त सूक्तियों का संकलन किया गया है तथा हिन्दी व अंग्रेजी में अनुवाद है। अंत में उत्तराध्ययन सूत्र की दस चयनित कथाएं दी गई हैं। पुस्तक गुटका आकार में है। यह संग्रह योग्य है। – **सुरेन्द्र लोढ़ा**

जिन मंदिर की दस जघन्य आशातनाएं

1. ताम्बुल खाना, 2. पानी पीना, 3. भोजन करना, 4. जूते चप्पल आदि पहनना, 5. स्त्री सेवन करना, 6. थूकना, 7. मूत्रादि करना, 9.संडास आदि करना, 10. जुआ खेलना।

धार्मिक उपकरण व उनके प्रमाण

कटासणा – सामायिक, प्रतिक्रमणादि धर्माराधना करने का उपयोगी आसन। इसका प्रमाण 24 गुना 21 ईंच।

मुहपत्ति– (मुखवस्त्रिका) ज्ञान की आशातना न हो, इसलिए प्रत्येक अनुष्ठान में मुख के आगे रखकर बोलते हैं।

प्रमाण 1 वेत व 4 अंगुल और दायीं तरफ किनारी होनी चाहिए।

चरवला (रजोहरण)– उठते, बैठते शरीर व भूमि की प्रमार्जना करने के लिए। 24 अंगुल की दांडी, 8 अंगुल ऊन की दशीयां कुल 32 अंगुल।

दंडासन– उपाश्रय में साधु भगवंत व पौषधवाले काजा निकालने के लिए उपयोग में लेते हैं। शामिल किया हुआ काजा लेने के लिए सुपडी व पुंजणी भी काम में लेते हैं। प्रमाण– दंडासन की दांडी 36 ईंच व दशीया 8 ईंच कुल 44 ईंच।

शाल (कांबली)– शरीर ढंका हुआ रहे वैसी गरम कामली जीवदया पालन हेतु।

संथारा – पौषध वालों को संथारा करने के लिए गरम, मोटा कपड़ा। प्रमाण– 30 गुना 72 ईंच (लगभग) ऊन का होना चाहिए।

उत्तरपट्टा– संथारा के ऊपर बिछाने का सफेद कपड़ा। प्रमाण– संथारा से एक फुट ज्यादा लंबा व 8 इंच चौड़ा सफेद वस्त्र।

पूजा महिमा (आठ कर्मों का नाश)

1.	जल पूजा	–	ज्ञानावरणीय कर्म का नाश
2.	पुष्प पूजा	–	नाम कर्म का नाश
3.	दीपक पूजा	–	दर्शनावरणीय कर्म का नाश
4.	नैवैद्य पूजा	–	गोत्र कर्म का नाश
5.	चन्दन पूजा	–	वेदनीय कर्म का नाश
6.	धूप पूजा	–	मोहनीय कर्म का नाश
7.	अक्षत पूजा	–	आयुष्य कर्म का नाश
8.	फल पूजा	–	अंतराय कर्म का नाश

कालिदास के नाम पर प्रचलित लोकोक्तियाँ

शुभाशीर्वाद	:	युग प्रभावक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर'
प्रेरक	:	वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी म.सा.
अनुवादक	:	मुनिराज श्री संयमरत्न विजयजी म.सा. 'प्रवासी'
संपादक	:	मुनिराज श्री भुवनरत्नविजय जी म.सा.
प्रकाशक	:	प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.) 465001
पृष्ठ	:	72, सिंगल कलर, सचित्र, वीर सं.2542, विक्रम संवत् 2072
मूल्य	:	रु.70/- अमूल्यः बुद्धि को जागृत करना
प्राप्ति स्थान	:	नितेश नाहटा (नाहटा प्रकाशन), देवासगेट, उज्जैन (म.प्र.) मो. 98267-86223

प्रस्तुत साहित्य में कवि कालिदास से संबंधित घटनाओं और लोकोक्तियों का उल्लेख किया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य कालिदास की तरह ज्ञान गुण को ग्रहण करना है। प्रयत्न और पुरुषार्थ करने पर एक अनपढ़, मूर्ख व्यक्ति भी श्रेष्ठ पंडित बन सकता है, तो हम क्यों नहीं बन सकते? ईश्वर, विद्या और कौशल में श्रम इन तीनों में अगर मन लग जाए तो फिर विद्वान बनने से हमें कोई नहीं रोक सकता। प्रत्येक कथा में 'कथा सार' दिया गया है, जो व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगी होने के साथ ही साथ श्रेष्ठ जीवनशैली जीने की प्रेरणा देती है।

ये कथाएं हमारी व्यथाएं दूर करने में समर्थ हैं। कथा को हमारी जीवन गाथा के साथ जोड़ दें तो निश्चित ही हमारी थकान दूर हो सकती है। इन कथाओं से हमें हमारी भारतीय संस्कृति में संस्कृत भाषा का कैसा प्रभाव था, यह भी ज्ञात होता है। हमें हमारी संस्कृत भाषा पर गर्व होना चाहिए जिसे देववाणी भी कहते हैं।

मुनिराज श्री द्वारा सृजित तृतीय पुस्तक वास्तव में अकल्पनीय है। यह पुस्तक घर-घर में पठन-पाठन, चिंतन-मनन हेतु संग्रहणीय है। इसे लेना कदापि न भूलें। विशेष प्रसंगों पर स्नेहीजनों को भेंट देने के लिए यह अनुपम उपहार होगा।

- जुली (जयणा) वीरेन्द्र गोलेचा

भारतीय संस्कृति का आईना है होली

श्री अचलचन्द जैन
सायला जि.जालोर (राज.)

रंगों का त्यौहार होली सबसे अलग अंदाज का त्यौहार है। फाल्गुन पूर्णिमा पर मनाया जाने वाला यह त्यौहार मानों जनसामान्य के जीवन को हर्ष एवं उल्लास से भर देता है। फाल्गुन की मस्ती, चंग की थाप, गूंजते फाग गीत, रंग-बिरंगे परिधानों में सजी एवं लूर लेती, गीत गाती महिलाएं, घुंघरू बांधकर नाचते गेरिये, एक दूसरे पर रंग डालते लोग जैसे कई अनोखे अचंभित करने वाले दृश्य उपस्थित हो जाते हैं। विभिन्न रंगों का समावेश, त्यौहार की मस्ती को और भी अधिक बढ़ा देता है। सही माने में अगर होली की मस्ती, उमंग और रंगीनियों का नजारा देखना हो तो गांवों में जाकर देखा जा सकता है। पाश्चात्य प्रभावों से अभी भी मुक्त गाँवों में होली पर भारतीय संस्कृति जीवन्त हो उठती है।

होली के 10 दिन पूर्व से यानी फाल्गुन शुक्ला पंचमी से ही चंग एवं ढोल की थाप सुनाई देने लगती है। इसे होली का 'डांडा रोपण' कहते हैं। इसके साथ ही फाग के गीतों की गूंज शुरू हो जाती है, जो होली के बाद शीतला सप्तमी तक जनजीवन में मिठास घोलती रहती है।

भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है- अनेकता में एकता। होली चाहे ब्रज की हो, बरसाने की हो अथवा मारवाड़ की। उसमें अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। होली पर रंग खेलने की अवधि भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न भिन्न होती है। कहीं यह होली के अगले दिन यानी धुलेंडी पर, कहीं पांचवे और सातवे दिन रंग खेलते हैं। इस तरह पूरे सप्ताह तक रंग खेला जाता है। रंग बिना किसी भेदभाव के खेला जाता है।

मध्ययुगीन चित्रों पर दृष्टि डालें तो मुगल सम्राटों के महलों में भी होली के रंग और गुलाल की छटा बिखरी दिखाई देती है। अर्थात् होली की परम्परा प्राचीन काल से आज तक लगातार चली आ रही है। होली के अवसर पर अर्थात् बसंत ऋतु में जब खेतों में फसल लहलहाती है तो स्वाभाविक है कि किसान खुश होता है। परन्तु वह यह नहीं भूलता कि जिन देवों की कृपा से उसे यह अनाज और सम्पदा प्राप्त हुई है, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करके ही, उन्हें भोग लगाकर ही उसे सम्पदा को प्रसाद के रूप में ग्रहण करना है। देवों को कोई भी भोग अग्नि में आहूति देकर ही लगाया जाता है। इसे यज्ञ कहते हैं। होली के अवसर पर नये अनाज की बालियाँ अग्नि में भूनने की प्रथा है, जो आज भी बनी हुई है। हमारी जीवन अन्न पर टिका है, जो हमें अग्नि, जल, वायु,

मिट्टी और सूर्य की कृपा से ही प्राप्त होता है। हमें इन पांचों तत्वों के प्रति इसीलिए कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। पर्यावरण हमारा उपास्य है। अतः इन्हें हम प्रदूषित न करें इसकी निर्मलता को बनाये रखें।

प्रकृति द्वारा प्रदत्त सम्पदा के लिए प्रकृति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने, हर्ष व्यक्त करने का यह त्यौहार किसी सम्प्रदाय विशेष का न होकर हम सबका है। होली छोटे और बड़ों के बीच, अपने-परायों के बीच भेदभाव को समाप्त कर देती है। आपसी रंजिश, झगड़ों का निपटारा भी होली के अवसर पर होता है। इस त्यौहार ने प्रेम-सद्भाव का संदेश देकर अनेक जातियों में बंटे हुए भारतीय समाज को संगठन के सूत्र में पिरोने का महत्त्वपूर्ण काम किया है। किसी त्यौहार का इससे बड़ा योगदान क्या हो सकता है? होली का त्यौहार वो आईना है जिसमें भारतीय संस्कृति के इन्द्रधनुषी रंग स्पष्ट दिखाई देते हैं। हमें रंगों के इस त्यौहार को मदिरा पान, अश्लीलता से बदरंग नहीं करना चाहिए।

साधना का मूल्य उसके भाव में है

लम्बे समय से हम साधना करते आ रहे हैं, आज भी साधना चल रही है। हम साधना का लेखा-जोखा करके प्रसन्न भी हो जाते हैं। इतनी सामायिक की, इतने पौषध किए, इतनी तपस्या कर ली, इतनी स्वाध्याय करते हैं, इतनी शास्त्र गाथाएं कंठस्थ कीं...। लम्बी चौड़ी सूची बन जाती है। परन्तु अपने अन्दर झांककर जब देखते हैं तो कुछ नहीं मिलता है। क्या हमारी स्थिति उस व्यापारी की तरह तो नहीं हो गई है जो इधर-उधर कर्जा देता जाता है, उसे बही खाते में लिखता जाता है, किन्तु उसे वसूल करने की कोई परवाह नहीं करता है, कोई व्यवस्था और प्रबंध नहीं कर पाता है। जब खाता देखता है तो उसमें धन बहुत लिखा मिलता है, परन्तु धन को देखना चाहे तो कुछ भी नहीं। खाते में धन है परन्तु तिजोरी खाली है।

हमने लाखों सामायिक कर ली होंगी परन्तु अपने जीवन को गहराई से देखें कि साधना, समभाव का कितना धन जमा है? मृत्यु के द्वार पर पहुंचे हुए किसी प्राणी को करोड़ मुद्रा देकर भी बचाना संभव नहीं है। करोड़ मुद्राओं से जीवन का क्षण भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है तो एक मुहूर्तभर के लिए अनन्त जीवों को अभय देने वाली सामायिक का मूल्य क्या होगा? वह तो मोल से परे अनमोल है। जीवन में अद्भूत परिवर्तन लाने के लिए एक सच्ची सामायिक ही पर्याप्त है, जिससे जन्म-जन्मान्तरों के कर्म बंधनों की बेड़ियां चकनाचूर हो जाती हैं। साधना के क्षणों में जब आनन्द,रस नहीं आता है, वह साधना नीरस हो जाती है, भार बन कर रह जाती है। साधना का मूल्य उसके समय और उसकी संख्या से नहीं आंका जाता है। साधना का मूल्य उसके भाव में है, साधना का आत्मा से स्पर्श होने में है। जैन साधना का लक्ष्य, मात्र चलना नहीं है बल्कि उसका लक्ष्य तो सही राह अर्थात वीतराग पर चलना है, चलने के ढंग से चलना है। बिना लक्ष्य के चलना तो भटकना है। जिनवाणी के आधार पर लक्ष्य बनाकर चलना प्रारंभ करें।

– नेहा बोहरा, भीलवाड़ा

षष्ठम् पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि

स्व. शा. पारसजी हेमराजजी भंडारी

(मरुधर में सियाना,
जि. जालोर, राज.)

स्वर्गवास सं, 2066, महा सुद 4,
दि. 19.01.2010

परमात्मा के प्रति समर्पित, दादा गुरुदेव के परम भक्त एवं राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सदैव समीप रहने वाले श्रद्धावंत गुरुभक्त स्व. शा. पारसजी हेमराजजी भंडारी (मरुधर में सियाना-राज.) के स्वर्गवास को 6 साल बीत गये। फिर भी उनकी स्मृति हमारे हृदयपटल से जरा भी कम नहीं हो रही। योगानुयोग पूज्य राष्ट्रसंतश्री की दीक्षा तिथि महासुद-4 ही आपकी पुण्यतिथि है।

आपके स्वर्गवास से हमें न मिटने वाली खोट पड़ी है। आपका वात्सल्य, क्षमाशील स्वभाव, प्रेमसभर चेहरा, जीवंत व्यक्तित्व, प्रेरक विचार, करुणार्द्र हृदय और धार्मिक जीवन शैली हमारे लिये पथदर्शक बन रही है।

आपकी दिव्य आत्मा जहां भी हो शाश्वत प्राप्त करे यही अभ्यर्थना के साथ आपका परिवार अश्रुसभर नयनों से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्रद्धावनत्

पत्नी : कमलादेवी पारसजी भंडारी

पुत्र-पुत्रवधु : सुरेश-रेखादेवी, राजेश-पुष्पादेवी,
दिलीप-रेशादेवी, नरेश-डिम्पलदेवी

पौत्र : रोनक, विनीत, दक्ष, **पौत्री** : पूजा, रिद्धी, सिद्धी, क्रिया

फर्म

Mahaveer Collection-Surat

Ph.: 0261-2590279, Mob.: 98250-99363

ગુર્જર જૈન જ્યોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

વર્તમાન જિન શાસનના રાજા

શ્રી પેપરાલ તીર્થમાંથી પ્રગટ થઈ જૈન શાસનમાં પ્રસન્નતાનો મહાસાગર લહેરાવતો પૂજ્યશ્રીનો પૂનિત પ્રભાવ...!

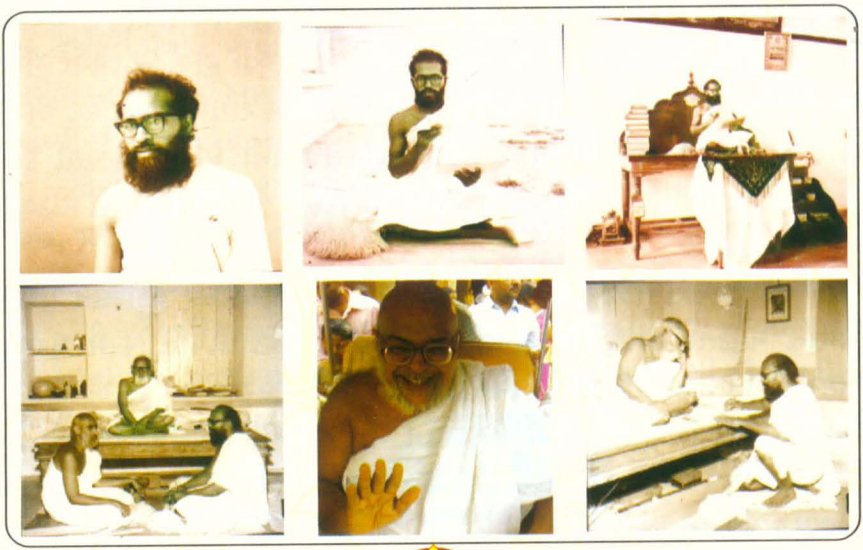

ગુજરાતને ગજવ્યું...! મારવાડમાં મચી રહી છે શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોની ધુમ...! સંભવિત આગામી ચાતુર્માસની આશાએ માળવી ભક્તોના મનના મોરલા કરી રહ્યા છે નૃત્ય

અનેક આસમાની સુલતાની આફતો અને દુષ્કાળ જેવા આક્રમણો જે આફતોને ખાળતો અને ટાળતો સરહદી વિસ્તારનો પછાત હોવા છતાં ધર્મની ધજા ફરકાવતો ગુજરાતનો ગૌરવવંતો બનાસકાંઠા જીલ્લો જાહોજલાલીના ઝકોળા કરી રહ્યો છે. જેમાં વીરક્ષેત્રથી પ્રચલિત થરાદ તાલુકાના શ્રી પેપરાલ તીર્થમાંથી પ્રગટ થઈ જૈન શાસનમાં પ્રસન્નતાનો મહાસાગર લહેરાવતો સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. નો પુનિત પ્રભાવ દસે દિશાઓમાં પથરાઈ રહ્યો છે.

સુવર્ણ અક્ષરે લેખવા યોગ્ય ઐતિહાસિક અને અવિસ્મરણી શ્રી પેપરાલ તીર્થના ચાતુર્માસ અને છ'રી પાલક સંઘોની વણઝાર તેમજ ઐતિહાસિક નવ્વાણુ યાત્રાના શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો એ ગુજરાતને ગજવી દીધું છે જ્યારે અત્યારે મારવાડની ધન્યધરા પર વાગરા નગરે ન જાણ્યો હોય, ન જોયો હોય અને ન સાંભળ્યો હોય તેવો મહાશતકોસ્તવ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો છે. અને શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો સાથે સાધના આરાધનાની ધૂમ મચી રહી છે. સંભવિત આગામી ચાતુર્માસની આશાએ માળવાના ભક્તોના મનના મોરલા નૃત્ય કરી રહ્યા છે.

શ્રી પેપરાલ તીર્થમાંથી પ્રગટ થઈ થરાદ વાટિકાના આ પ્રફુલ્લિત પુષ્પ સમાન મહેકતા સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયજયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ સમગ્ર ભારતમાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયને ગૌરવ અપાવી ધર્મ-આરાધનાની પ્રેરણાના પિયુષ પાન કરાવવામાં કોઈ જ કસર છોડી નથી.

– જય જયંતસેન

શ્રી પેપરાલ નગરે પૂજ્યશ્રીના પાટોત્સવની ભવ્ય ઉજવણી

ગુરૂ જન્મભૂમિ-તીર્થભૂમિ શ્રી પેપરાલ નગરે શ્રી જયંતસેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટના ઉપક્રમે અને અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા પેપરાલ દ્વારા આયોજિત શ્રી પેપરાલ તીર્થના પનોતાપુત્ર સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયજયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ૩૩મા પાટોત્સવની ભવ્યાતિભવ્ય રીતે ઉજવણી કરાઈ હતી.

સંવત ૨૦૭૨ ના મહા સુદ-૧૩ ને શનિવાર તા. ૨૦-૨-૨૦૧૬ ના રોજ પુજ્યશ્રી ના ૩૩મા પાટોત્સવ પ્રસંગે શ્રી મધુકર મહાવીર જિનાલયને સુંદર શણગાર કરાયો હતો. પ્રભુજીને અને દાદા ગુરૂદેવને ભવ્ય આંગી કરાઈ હતી. પૂજ્યશ્રીના ૩૩મા પાટોત્સવની ઉજવણી પ્રસંગે શ્રી જયંતસેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલના ટ્રસ્ટીગણો પરિષદ શાખા પેપરાલના ઉત્સાહી સભ્યો તેમજ થરાદ, ડીસા, લાખણી, લવાણા, દુધવા, પીલુડા, નારોલી, લીંબાઉ વિગેરે સ્થળોએથી ભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. સવારે પૂજ્યશ્રીના ગુણાનુવાદનો અને પ્રશ્નોતરીનો કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. આ પ્રસંગ સાથે સંયમજીવનની અનુમોદનાર્થે શાંતિસ્નાત્ર પુજાનું આયોજન કરાયું હતું. બપોરે ૨ થી ૪ કલાક દરમ્યાન બહેનોના સમૂહ સામાયિકનું આયોજન કરાયું હતું જેમાં ૧૫૬ બહેનોએ સામૂહિક રૂપે સામાયિક કરી પૂજ્યશ્રીના સ્વાસ્થ્ય માટે અંતકરણપૂર્વક પ્રાર્થના કરી હતી.

ત્રણેય ટાઈમના ચા-નાસ્તા અને ભોજનની સુંદર વ્યવસ્થા કરવામાં આવી હતી. બહારગામથી લઈ જવા લાવવા માટે જીપગાડીઓની પણ વ્યવસ્થા કરવામાં આવી હતી. ૫૦૦ થી ૭૦૦ ભક્તોએ સાથે મળી પૂજ્યશ્રીના ૩૩મા પાટોત્સવની ભવ્ય ઉજવણી કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. આ કાર્યક્રમને દીપાવવા પરિષદ શાખા પેપરાલના દરેક નિષ્ઠાવાન કાર્યકરોએ ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી. ઉજવણીનો લાભ દુધવા નિવાસી વોહેરા ડાહ્યાલાલ મનજીભાઈ પરિવાર અને લીંબાઉ નિવાસી દોશી શાંતિલાલ કાળીદાસ પરિવારે લીધો હતો. સમૂહ સામાયિકમાં જોડાયેલ બહેનોનું રૂા. ૫૦ ની પ્રભાવના દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું.

શ્રી પેપરાલ નગરે પૂજ્યશ્રીના પાટોત્સવની તસ્વીરી ઝલક

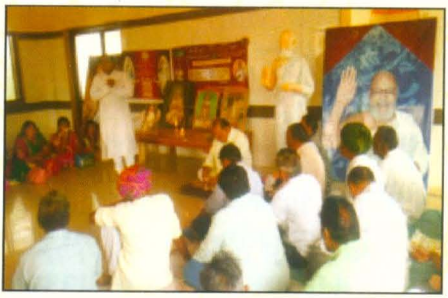

ઈતિહાસ સર્જક સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવન નિશ્રામાં

વાગરા નગરે મહાશતકોત્સવ કાર્યક્રમ સંપન્ન

''દિલ્હીમાં આગરા અને મારવાડમાં બાગરા'' નામથી પ્રસિધ્ધ જાલોર થી ૨૦ કિ.મી. ના અંતરે આવેલ ૩૦૦૦ હેક્ટર ક્ષેત્રફળમાં ફેલાયેલ ૩૨૦૦ ઘર ધરાવતા ૧૨૦૦૦ ની જનસંખ્યાવાળુ વાગરા ગામ છે. વાગરામાં ચર્ચા ચક્રવતી પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય ધનચંદ સૂરિશ્વરજી મ.સા. નું સમાધિ મંદિર હોવાથી ''વાગરા મારવાડનું મોહન ખેડા તથા રાજસ્થાનનું રાજગઢ'' કહેવાય છે.

વાગરા નગરની વૈભવી વસુંધરા પર શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ જિનાલય શતાબ્દી મહોત્સવ મહા શતકોત્સવનું શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય જૈન શ્વેતાબંર મૂ.પૂ. ત્રિસ્તુતિક સંઘ વાગરા ધ્વારા અતિદિવ્ય-અતિભવ્ય અને અતિનવ્ય રીતે આયોજન કરાયું હતું. શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ જિનાલયના શતાબ્દી વર્ષ સહ પંચધાતુની શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પ્રતિમાજીનો અંજનશલાકા નિમિત્તે એકાદશાન્હિકા મહા મહોત્સવ સંપન્ન થયો હતો.

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની શુભંકરી નિશ્રામાં એકવીસમી સદીનો સર્વોત્તમ મહાશતકોત્સવ સંપન્ન થયો હતો.

આધ્યાત્મિક અંતરિક્ષના ધ્રુવ તારા સમાન શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના હૃદય સમ્રાટ, લાખો ભક્તોના ઓલિયા મહાનાયક સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. બિજાપુર ખાતે ચાતુર્માસ અર્થે બિરાજમાન હતા ત્યારે વાગરા નગરના ૧૦૦ વર્ષ પૂર્ણ થયેલ શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ તીર્થસમ જિનાલયના શતાબ્દી મહા મહોત્સવમાં નિશ્રા પ્રદાન કરવા શ્રી સૌધર્મ બૃહદતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ વાગરા ધ્વારા આગ્રહભરી વિનંતી કરાઈ હતી.

પૂજ્યશ્રીએ એનો સ્વીકાર કરી ચડાવાની જાજમ બીછાવા મૂહૂર્ત પ્રદાન કર્યું હતું અને મહાશતકોત્સવ-શતાબ્દી મહામહોત્સવ માટે સંવત ૨૦૭૨ ના મહા માસમાં મૂહુર્ત પ્રદાન કર્યું હતું. જેથી વિનંતી કરવા આવેલ વાગરા સંઘના ભક્તજનોના મનમાં

પ્રસન્નતાનો મહાસાગર લહેરાઈ ગયો હતો. પૂજ્યશ્રી ધ્વારા મૂહૂર્ત પ્રદાન થયેલ તેની જાણ મારવાડમાં થતાં શ્રી જૈન સંઘમાં આનંદોલ્લાસ પ્રવર્તી ગયો હતો. ૧૦૦ વર્ષ પૂર્ણ થયે જિનાલયનો શતાબ્દી મહામહોત્સવ અને પંચધાતુ શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ ભગવાનની પ્રતિમાને અંજનશલાકા કરાવવાની ઉજળી તક સાંપડતા જ સહુની આંખોમાંથી હર્ષના આંસુ વહી ગયા હતા અને અંતરની ઉર્જાઓ આકાશને સ્પર્શી ગઈ હતી. આ અંગે વાગરા જૈન સંઘ ધ્વારા તડામાર તૈયારીઓ આદરી દેવાઈ હતી અને પૂજ્યશ્રીના સંયમોત્સવ, પાટોત્સવ સાથે શતાબ્દી મહામહોત્સવની ઉજવણી માટે સકળ સંઘ કામે લાગી ગયો હતો.

સંવત ૨૦૭૨ ના મહા સુદ-૩ ને ગુરૂવાર તા. ૧૧-૨-૨૦૧૬ ના રોજથી તા. ૨૧-૨-૨૦૧૬ ના રોજ દરમ્યાન શતાબ્દી મહામહોત્સવ - મહા શતકોત્સવ - એકાદશાન્હિકા મહા મહોત્સવ સંપન્ન થવાનો હોઈ વાગરાનગરે હર્ષના તોરણીયા રચાવા લાગ્યા હતા.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિઠાણાએ સંવત ૨૦૭૧ ના વર્ષનું શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ સંપન્ન કરી પાંચ પાંચ છ'રી પાલક સંઘ અને નવ્વાણુ યાત્રામાં નિશ્રા પ્રદાન કર્યા બાદ તટસ્થ મનોબળના સ્વામી અતિ ઉગ્રવિહારી નામથી પ્રસિધ્ધ એવા પૂજ્યશ્રીએ તા. ૨૦-૧-૧૬ ના રોજ પાલીતાણા ખાતેથી વિહાર કરી સંવત ૨૦૭૨ ના મહા સુદ-૨ ને બુધવાર તા. ૧૦-૨-૨૦૧૬ ના રોજ મંગલ પ્રભાતે શિષ્ય સમુદાય અને સાધ્વીજી મંડળ સાથે હજ્જારો ભક્તોની હોંશિલી હાજરી વચ્ચે મારવાડની ધન્યધરા વાગરા નગરે એન્ટ્રી કરી હતી. અને રંગે-ચંગે વાજતે-ગાજતે ધામધૂમ પૂર્વક ઐતિહાસિક ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયાથી નગર પ્રવેશ કર્યો હતો. જય જય કારના નારાઓથી બાગરાનગર ગાજી ઉઠ્યું હતું.

પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાના પ્રવેશ બાદ તા. ૧૧-૨-૧૬ ના રોજથી શતાબ્દી મહા મહોત્સવનો શુભારંભ થયો હતો. પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં યોજાયેલ મહા મહોત્સવ દરમ્યાન શ્રી કુંભ સ્થાપના, શ્રી દિપક સ્થાપના, જવારા રોપણ, જલયાત્રા વિધાન, શ્રી નવગ્રહ પાટલા સ્થાપન, શ્રી દશદિગ્પાલ પાટલા પૂજન, શ્રીવીસ સ્થાનક પાટલા પૂજન, શ્રી નંદાવર્ત પાટલા પજન અને પ્રભુજીના પાંચે કલ્યાણકના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

મહોત્સવના પ્રથમ દિવસે મહાશતકોત્સવના સાનિધ્યદાતા વાગરા સંઘના લાડલા પ્યારા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ૬૩માં સંયમોત્સવની ભવ્યાતિભવ્ય ઉજવણી કરાઈ હતી. આજના દિવસે શ્રી ભક્તામ્બર મહાપૂજા, રાત્રિભક્તિના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

તૃતિય દિવસે શ્રી ગૌતમસ્વામી મહાપૂજા, ચતુર્થ દિવસે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ ગુરૂપદ મહાપૂજન, પંચમ દિવસે શ્રી નમિઉંણ મહાપૂજન, ષષ્ઠમ દિવસે શ્રી સિધ્ધચક્ર મહાપૂજન, સપ્તમ દિવસે શ્રી ૧૦૮ પાર્શ્વનાથ મહાપૂજન, અષ્ઠમ દિવસે શ્રી મહાવીર સ્વામી પંચકલ્યાણક પૂજા, નવમ દિવસે અઢાર અભિષેક પૂજન, દસમ દિવસે જિન શાસનના રાજા પૂજ્ય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના આચાર્ય પદના ૩૩મો પાટોત્સવની ભવ્યાતિભવ્ય ઉજવણી કરાઈ હતી. અને ઓમ પુણ્યાહં... પુણ્યાહં... પ્રિયંતામ... પ્રિયંતામ ના ગગનચુંબી નારાઓ અને હેલીકોપ્ટરથી પુષ્પવર્ષા સાથે પૂજ્યશ્રી સપરિવારની નિશ્રામાં સકળ સંઘની ઉપસ્થિતિમાં શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ જિનાલય પર શતાબ્દી ધ્વજા રોહણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. બપોરે ૧૦૮ બૃહદ શાંતિ સ્નાત્ર મહાપુજન ભણાવાયું હતું આજના દિવસે ફલે ચુંદડીનું આયોજન કરાયું હતું.

આ શતાબ્દી મહામહોત્સવ, મહાશતકોત્સવ દરમ્યાન પૂજ્યશ્રીના સંયમોત્સવ, પાટોત્સવ, પ્રતિરોજ વ્યાખ્યાન પંચધાતુ પ્રતિમાને અંજનશલાકા, પ્રતિરોજ સ્ટેજ કાર્યક્રમો રાત્રિ ભક્તિ ભાવના, ત્રણેય ટાઈમની નવકારશી, આંગી, રોશની વિગેરે કાર્યક્રમો યોજાયા હતા.

આવા આશ્ચર્યકારી મહાશતકોત્સવ ઉજવણી અંગે વારાસણી ભક્તિ-પ્રવચન મંડપ, શ્રી ભરતપુરનગરી ભોજન ખંડ, ઘેર ઘેર તોરણ, ઘેર ઘેર મહેંદી, ઘેર ઘેર ૧૦૦ ગ્રામ ચાંદીના સિક્કાની લહાણી, સાંજી, ભવ્યાતિભવ્ય લાઈટ ડેકોરેશન, મહેમાનો માટે આવાસ-નિવાસની સુંદર વ્યવસ્થા વિશાળ ભોજન ખંડ, રસવંતી રસોઈ દ્વારા સ્વામી ભક્તિ તપસ્વીઓ માટે એકાસણા-બિયાસણા, આંયબિલની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી. બેન્ડ-શરણાઈથી ગુંજતા દસેય દિવસ ધર્મમય બની ગયા હતા. પૂજ્યશ્રીના આશિર્વાદ લેવા રાજકીય નેતાઓ અને વી.આઈ.પી. ઓનો કાફલો રોજે રોજ ઉતરી પડતો હતો. વાગરા નગરે યોજાયેલ મહાશતકોત્સવ વિશે શું કહેવું અને કેટલું કહેવું અને કેટલું લખવું...! સદીઓ સુધી યાદ રહી શકે તેવું અદ્‌ભુત આયોજન આંખે ઉડીને વળગે તેવું હતું.

વાગરા મહા મહોત્સવની તસ્વીરી ઝલક

आचार्य का 33वां पाटोत्सव मनाया संयमरत्नजी ने ली गुणानुवाद सभा

मंत्री गेहलोत, जैन सहित संत व 2 हजार से अधिक समाजजन उमडे

सभा को संबोधित करते मुनि संयमरत्न।

गच्छाधिपति का 33वां पाटोत्सव मनाया

बागरा में शताब्दी महाशताब्दी महोत्सव के तहत धूम धाम से किया ध्वजारोहण

गृह मंत्री कटारिया ने की कार्यक्रम में शिरकत

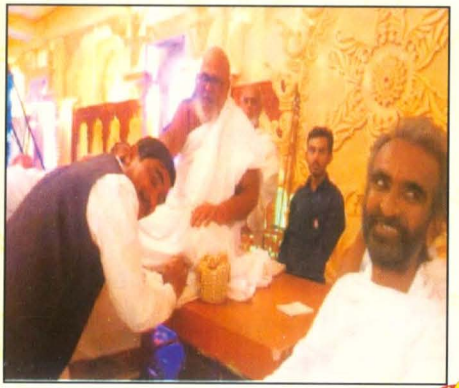

श्री बाजरा नगरे महाशतकोत्सव

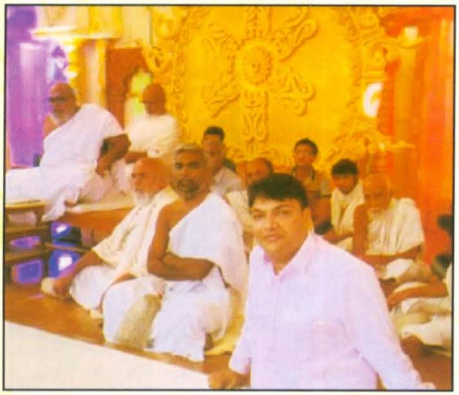

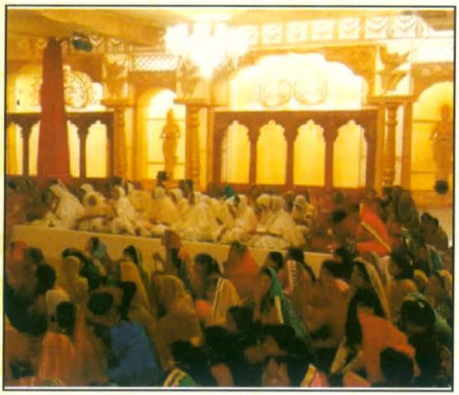
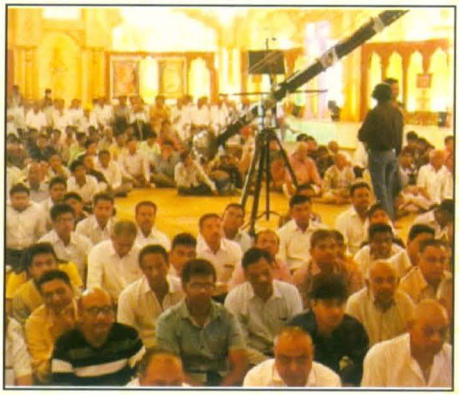

મારવાડ વાગરા નો ગૌરવશાળી ઈતિહાસ

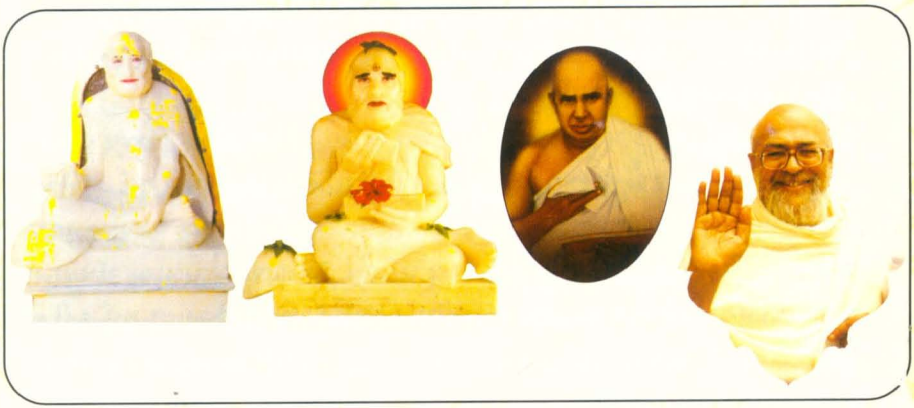

- દિલ્હીમાં આગરા અને મારવાડમાં વાગરા નામ પ્રસિધ્ધ છે.
- ચર્યાચક્રવતી આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય ધનચંદ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. નું સમાધિ મંદિર હોવાથી વાગરા "મારવાડ નું મોહનખેડા તથા રાજસ્થાનનું રાજગઢ" કહેવાય છે.
- વાગરા નગરના ગૌરવશાળી આકર્ષણમાં ગામના મધ્યમના ચોરા પાસે સ્થિત ચૌવિસ જિનાલય શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ પ્રભુ જિનાલય આવેલ છે જે આજુબાજુના ક્ષેત્રમાં ઘણુ પ્રસિધ્ધ છે. સામે જ કબુતરને ચણવાનો મોટો ચબુતરો છે.
- પાર્શ્વનાથ જિનાલયની સંપૂર્ણ રચના વૈજ્ઞાનિક રીતે જૈન શાસ્ત્રાનુસાર અત્યંત

નયનાભિરામ અને મનમોહક રૂપથી કરવામાં આવેલ છે.

- વિક્રમ સંવત ૧૭૩૦ માં નિર્મિત પામેલ શ્રી પાર્શ્વનાથ પ્રભુના લઘુ દેરાસરનો જિર્ણોધ્ધાર વિક્રમ સંવત ૧૯૭૨ માં કરાવાયો હતો.
- વિશ્વપૂજ્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ના વરદાની કરકમળો દ્વારા સિયાણા નગરમાં વિક્રમસ સંવત ૧૯૫૮ ના મહા સુદ-૧૩ ના રોજ અંજનશલાકા થઈ હતી.
- શ્રી ચિંતામણી - શ્રી ગોડીજી - શ્રી જીરાવલા પાર્શ્વનાથ પ્રભુની ત્રણ પ્રતિમાઓની પ્રાયોગ્ય લબ્ધિદાયક પ્રાણ-પ્રતિષ્ઠા દાદા ગુરૂદેવના પ્રથમ પટ્ટધર પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય ધનચંદ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પરમજ્ઞાની ઉપાધ્યાય શ્રી મોહનવિજયજી મ.સા. ધ્વારા વિક્રમ સંવત ૧૯૭૨ ના મહા સુદ-૧૩ ના રોજ શિખરબધ્ધ નૂતન જિનાલયમાં ઐતિહાસિક મહોત્સવ સાથે સંપન્ન થઈ હતી.
- વિરલ-અદ્‌ભુત સંયોગ એ સાંપડ્યો હતો કે અંજનશલાકા અને પ્રતિષ્ઠા બન્ને મહા સુદ-૧૩ ના રોજ સંપન્ન થઈ હતી.
- શ્રી ધનચન્દ્રસૂરિ ચરિત્રમ્ નામક ગ્રંથમાં પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. લખે છે કે મારવાડમાં વાગરાની પ્રતિષ્ઠા ઘણી ભારે થઈ. પ્રતિષ્ઠા ઉત્સવ પર મારવાડ-માળવા-ગુજરાત અને દેસાવરમાંથી લગભગ પચ્ચાસ હજાર શ્રાવક-શ્રાવિકા ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ પ્રતિષ્ઠા ઉત્સવમાં સવાલાખ રૂપિયાનો ખર્ચ થયો હતો અને અલગ-અલગ ખાતામાં બે લાખ રૂપિયાની આવક થઈ હતી જે શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથજી પ્રભુના જિનાલયનો શતાબ્દી મહામહોત્સવ અત્યંત ધામધૂમપૂર્વક સંપન્ન થયો છે.
- વિક્રમ સંવત ૧૯૯૮ ના માગસર સુદ-૧૦ ના રોજ પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ના શુભહસ્તે શ્રી આદિનાથ થી શ્રી મહાવીર સ્વામી (શ્રી પાર્શ્વનાથ સિવાય) સુધીની ૨૩ દેવ કુલિકાઓમાં જિન પ્રતિમાંઓ અને દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રતિમા ડાબી બાજુ ઉપાધ્યાય શ્રી મોહનવિજયજી મ.સા. અને જમણી તરફ મુનિરાજ શ્રી હર્ષવિજયજી મ.સા. ની ચરણપાદુકા તથા ગામના પ્રાંગણામાં બસ સ્ટેશન નજીક શ્રી મહાવીર સ્વામી આજુબાજુ શ્રી આદિનાથ પ્રભુ અને શ્રી શાંતિનાથ પ્રભુજીની સુંદર પ્રતિમાઓ સાથે સાથે જિનાલય નજીક પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય ધનચંદ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રતિમાની પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થઈ હતી.

- સમાધિ મંદિરમાં ગુરૂદેવ શ્રી ધનચંદ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રતિમાની આજુબાજુ પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય ભૂપેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશશ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા વિક્રમ સંવત ૨૦૨૦ ના ફાગણ સુદ-૩ ના રોજ પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિદ્યાચંદ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના શુભ હસ્તે સંપન્ન થઈ હતી.
- વાગરા નગર ગુરૂ પ્રત્યે સાચી શ્રધ્ધા અને આસ્થાનું પ્રતિક છે. ગુરૂદેવના આશિષથી વાગરામાં ખુશાલી છે.
- સમાધિ મંદિરના નૂતન કલશારોહણનો મહોત્સવ સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની આજ્ઞાનુસાર મુનિરાજ શ્રી જયાનંદવિજયજી મ.સા. ની નિશ્રામાં વિક્રમ સંવત ૨૦૫૨ ના વૈશાખ સુદ-૧૪ ના રોજ સંપન્ન થયો હતો.
- વિક્રમ સંવત ૨૦૬૮ ના ફાગણ વદ-૬ ને તા. ૧૩-૨-૨૦૧૨ ના રોજ શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ પ્રભુ, ૨૩ દેવ કુલિકાઓ અને શ્રી મહાવીર સ્વામી જિનાલય પર નવિન ધ્વજાદંડ સ્થાપનાનો મહોત્સવ સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની નિશ્રામાં લઘુ-પ્રતિષ્ઠા સ્વરૂપ સંપન્ન થયો. આ રીતે વાગરા નગર કેટલા ઔલોકિક-અનુપમ રીતે જોડાયેલ છે. શ્રી ત્રિસ્તુતિક ગુરૂ પરંપરાની સ્પર્શનાથી
- વિક્રમ સંવત ૧૯૭૭ ના ભાદરવા સુદ-૧ શ્રી મહાવીર સ્વામી જન્મવાંચન ના પવિત્ર દિવસે પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય ધનચંદ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. અર્હત-અર્હત આ મહામંત્રના ઉચ્ચાર કરતા કરતા વાગરાના ઉપાશ્રયમાં રાત્રે ૮ કલાકે નિર્વાણ પામ્યા હતા.
- પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ને વાગરાથી વિશેષ સ્નેહ-લગાવ અને આત્મિયતા રહેલ હતી. એમના યશસ્વી સંયમ જીવનના ૬૪ ચાતુર્માસમાં ૭ જ્યોર્તિમાન-ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ વાગરામાં સંપન્ન કર્યા હતા. સંવત ૧૯૭૨ માં પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય ધનચંદ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. એ મુનિરાજ શ્રી યતિન્દ્રવિજયજી મ.સા. ને ''વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ'' ના અલંકારથી વાગરામાં વિભૂષિત કર્યા હતા. વિક્રમ સંવત ૨૦૦૨ માં પૂજ્ય આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ વાગરા સંઘ દ્વારા આયોજિત અત્યંત ભવ્ય

અને અવિસ્મરણીય ઉપધાન તપમાં ૩૪૦ તપસ્વીઓને આરાધના કરાવી તે સમયે જિન શાસનમાં ઉપધાનતપ કિર્તિમાન સંપન્ન થયું હતું.

- વિક્રમ સંવત ૧૯૭૫ ના મહા સુદ-૬ ના રોજ સરળ સ્વભાવી વચન સિધ્ધ પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રી હેમેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. નો જન્મ વાગરામાં થયો હતો.
- આચાર્યશ્રીના સફલતમ જીવનકાળના ૯૦ વર્ષ પૂર્ણોત્સવ એમની જ નિશ્રામાં વાગરામાં ધામધૂમથી મનાવામાં આવ્યો હતો.
- શ્રી સિધ્ધાચલ તીર્થ ભૂમિ પર ૨૯-૮-૨૦૧૦ ના રોજ કાળધર્મ પામતા શ્રી મોહનખેડા મહાતીર્થ પર આચાર્યશ્રીના પાર્થિવ દેહના અગ્નિસંસ્કાર પર ઓઘો સમર્પિત કરવાનો લાભ શ્રી વાગરા જૈન સંઘને પ્રાપ્ત થયો. પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય હેમેન્દ્રસૂરિશ્વરજીના સ્મરણાર્થે શ્રીમતી શ્રૃંગારીબાઈ શંકરલાલજી જૈન રિલીજીયસ એન્ડ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ ધ્વારા એમના જન્મ સ્થળ એટલે કે એમના પૈતૃક ગૃહ પર શ્રી આદિનાથ હેમેન્દ્રસૂરિ સ્મૃતિ મંદિરનું નિર્માણ વિક્રમ સંવત ૨૦૭૨ ના જેઠ સુદ-૭ તા. ૫-૬-૨૦૧૪ ના રોજ અંજનશલાકા-પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ સાથે કરવામાં આવ્યું હતું.
- સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પમર પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. વાગરા માટે ફરમાવે છે કે ''શું ખબર કે મને આ ગામથી ઘણો જ મમત્વ અને અપનત્વ છે. વાગરા મારૂં પોતાનું છે કેમ કે મારા ગુરૂદેવનું દુલારૂ છે... મારા હૃદયની ધડકન છે વાગરા'' પૂજ્ય વર્તમાનાચાર્યશ્રી ની શિક્ષા અને દીક્ષા વચ્ચેનો મહત્વપૂર્ણ સમય વાગરામાં જ વ્યતિત થયો. સંસારી થી સન્યાસી બન્યા તે વચ્ચેની પૂર્વ તૈયારી તેઓશ્રીએ વાગરાની ધર્મશાળા માં જ શાસ્ત્રોધ્યન થી પૂર્ણ કરી પૂજ્યશ્રી વધુમાં ફરમાવે છે એક સમયે વાગરા ત્રિસ્તુતિક સમાજનો ગઢ હતો. સમાજની આર્થિક રાજધાની હતી સંપૂર્ણ સમાજનું કોઈપણ કાર્ય વાગરાના સહયોગ-યોગદાન-માર્ગદર્શન થી કાર્યવિંત થતું હતું.
- વિક્રમ સંવત ૨૦૦૯ માં પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ધ્વારા વાગરામાં જ ''શાશ્વતધર્મ'' નામક પત્રિકા ને પ્રકાશન કરવાનું સ્વપ્ન સાકાર થયું હતું. મુનિરાજ શ્રી જયકિર્તિવિજયજી મ.સા., સાધ્વીજી શ્રી કંચનશ્રીજી, સાધ્વીજી શ્રી મોતીશ્રીજી, સાધ્વીજી શ્રી કુસુમશ્રીજી, સાધ્વીજી શ્રી કુમુદશ્રીજી, સાધ્વીજી શ્રી તિલક પ્રભાશ્રીજી, સાધ્વીજી શ્રી મુક્તિ નંદિતાશ્રીજી ની જન્મભૂમિ વાગરા છે.

- વાગરા જૈન સમાજના પ્રબળ પ્રયાસ અને જૈન ભિક્ષુ શ્રી રંગ વિજયજીની પ્રેરણાથી સન-૧૯૬૬ માં નિર્મિત "શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ રાજકીય ઉચ્ચ માધ્યમિક વિદ્યાલય" અને તા. ૧૯-૨-૧૯૯૯ ના રોજ શરૂ કરાયેલ "જીવદયા ગાયત્રી ગૌ શાળા" વાગરાની શાન માં વૃધ્ધિ કરી રહી છે.

  જૈન આરાધના ભવન સાથે સાથે સાધ્વીજી મ.સા. ના આવાસ માટે શ્રી યતિન્દ્ર ક્રિયા ભવન અને સામાજિક-માંગલિક કાર્યો માટે શ્રી રાજ-ધન-યતિન્દ્ર ભવન તથા રાજેન્દ્રસૂરિજી સ્મૃતિ ભવનની પણ વ્યવસ્થા છે.
- વર્તમાન સમયમાં શ્રી જૈન શ્વે. સંઘ વાગરાના લગભગ ૭૩૩ સદસ્યો છે. જેમાં ૬૨૫ પોરવાલ સમાજ, ૯૦ વીસા ઓસવાલ અને ૧૮ દશા ઓસવાલ સમાજના છે. કુલ મળીને વાગરા નગરમાં જૈનોની સંખ્યા ૪૦૦૦/- જેટલી છે.

  ઉલ્લેખનીય વિશેષતા તો એ છે કે વાગરા નિવાસી સમસ્ત જૈન ત્રિસ્તુતિક પરંપરાને માનવાવાળા છે અને વિશ્વ પૂજ્ય પ્રાઃત સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. એ પ્રત્યે પૂર્ણ શ્રધ્ધાળુઓ છે. વાગરા મરૂધર ક્ષેત્રનું કોહિનૂર છે. ત્રિસ્તુતિક સમાજનં નુર છે. વાગરાના સમસ્ત સામર્થ્ય, ગરિમા, અસ્મિતા અને મહિમાને શબ્દોની અભિવ્યક્તિમાં સમેટવો અસંભવ છે.

થીરપુર એકતાની શાન...!

"થીરપુર એકતાની શાન" આ એક અદ્‌ભુત એપ્લીકેશન થરાદ જૈન સમાજના યુવાનો ધ્વારા સાહસ કરાયેલ છે. સમગ્ર થરાદ જૈન સમાજનું જોડાણ કરાવતું થીરપુર એપ્લીકેશન પ્લે સ્ટોર ઉપર અવેલેબલ છે.

આ એપ્લીકેશનની ખાસીયત છે કે સમાજના તેમજ ગુરૂ ભગવંતોના સમસ્ત સમાચાર નોટિફીકેશન સાથે મળી શકે છે. સમાજનું પંચાગ, જૈન ધર્મના મોટા ભાગના સ્તવનો, તમામ જૈન તીર્થોની માહિતી વિગેરે મળી રહેશે આ થીરપુર એપ્લીકેશન યુવા પેઢી માટે એક ઉપયોગી પ્લેટફોર્મ બની રહેશે તે માટેની તમામ વિગત માટે સંપર્ક કરો.

અભિષેક વોહેરા - ૯૬૧૯૧૬૩૧૧૧
નિરવ વોહેરા - ૯૦૨૨૩૦૮૧૬૩
પ્રિત સંઘવી - ૯૧૬૭૬ ૧૨૦૧૯

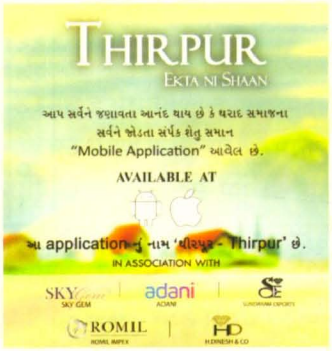

"થીરપુર એકતાની શાન"
આ સપનું સાકાર કરવા માટેના સાહસવીરો
અભિષેક વોહેરા મુંબઈ-નીરવ વોહેરા-મુંબઈ
હર્ષ શાહ, ચેતનભાઈ, કશિષ શાહ,
ભાવિક માજની-અમદાવાદ-જીનાંગ શાહ, મીત શેઠ
વર્ષિલ શાહ અને સિલોની વારીયા

સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.

રાજસ્થાન વિહાર યાત્રા

ફેબ્રુઆરી

ક્રમ	તારીખ	ગામ
૧	૨૨-૨-૧૬	વાગરા
૨	૨૩-૨-૧૬	વાગરા
૩	૨૪-૨-૧૬	સિયાણા
૪	૨૫-૨-૧૬	સિયાણા
૫	૨૬-૨-૧૬	આકોલી
૬	૨૭-૨-૧૬	-
૭	૨૮-૨-૧૬	સરત
૮	૨૯-૨-૧૬	મોદરા

માર્ચ

ક્રમ	તારીખ	ગામ
૧	૧-૩-૨૦૧૬	બોરટા
૨	૨-૩-૨૦૧૬	૬૮ જિનાલય
૩	૩-૩-૨૦૧૬	૬૮ જિનાલય
૪	૪-૩-૨૦૧૬	૬૮ જિનાલય
૫	૫-૩-૨૦૧૬	૬૮ જિનાલય
૬	૬-૩-૨૦૧૬	૬૮ જિનાલય
૭	૭-૩-૨૦૧૬	૬૮ જિનાલય
૮	૮-૩-૨૦૧૬	૬૮ જિનાલય
૯	૯-૩-૨૦૧૬	ધાણસા
૧૦	૧૦-૩-૨૦૧૬	થલવાડ
૧૧	૧૧-૩-૨૦૧૬	પાંથેડી
૧૨	૧૨-૩-૨૦૧૬	ઉન્નડી
૧૩	૧૩-૩-૨૦૧૬	પોસાણા
૧૪	૧૪-૩-૨૦૧૬	સુરાણા
૧૫	૧૫-૩-૨૦૧૬	દાધાલ
૧૬	૧૬-૩-૨૦૧૬	-
૧૭	૧૭-૩-૨૦૧૬	ધુમડિયા
૧૮	૧૮-૩-૨૦૧૬	-
૧૯	૧૯-૩-૨૦૧૬	ભાંડવપુર
૨૦	૨૦-૩-૨૦૧૬	ભાંડવપુર
૨૧	૨૧-૩-૨૦૧૬	ભાંડવપુર
૨૨	૨૨-૩-૨૦૧૬	ભાંડવપુર
૨૩	૨૩-૩-૨૦૧૬	ભાંડવપુર
૨૪	૨૪-૩-૨૦૧૬	ભાંડવપુર
૨૫	૨૫-૩-૨૦૧૬	ભાંડવપુર
૨૬	૨૬-૩-૨૦૧૬	મેંગલવા
૨૭	૨૭-૩-૨૦૧૬	ચૌરાઉ
૨૮	૨૮-૩-૨૦૧૬	સાયલા
૨૯	૨૯-૩-૨૦૧૬	સાયલા
૩૦	૩૦-૩-૨૦૧૬	રેવતડા
૩૧	૩૧-૩-૨૦૧૬	બાકરા રોડ

એપ્રિલ

ક્રમ	તારીખ	ગામ
૧	૧-૪-૨૦૧૬	વિહાર
૨	૨-૪-૨૦૧૬	વિહાર
૩	૩-૪-૨૦૧૬	વિહાર
૪	૪-૪-૨૦૧૬	વિહાર
૫	૫-૪-૨૦૧૬	વિહાર
૬	૬-૪-૨૦૧૬	વિહાર
૭	૭-૪-૨૦૧૬	વિહાર
૮	૮-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ
૯	૯-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ
૧૦	૧૦-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ
૧૧	૧૧-૪-૨૦૧૬	૭૨ જિનાલય
૧૨	૧૨-૪-૨૦૧૬	૭૨ જિનાલય
૧૩	૧૩-૪-૨૦૧૬	૭૨ જિનાલય
૧૪	૧૪-૪-૨૦૧૬	નવપદ ઓળી
૧૫	૧૫-૪-૨૦૧૬	નવપદ ઓળી
૧૬	૧૬-૪-૨૦૧૬	નવપદ ઓળી
૧૭	૧૭-૪-૨૦૧૬	નવપદ ઓળી
૧૮	૧૮-૪-૨૦૧૬	નવપદ ઓળી
૧૯	૧૯-૪-૨૦૧૬	નવપદ ઓળી
૨૦	૨૦-૪-૨૦૧૬	નવપદ ઓળી
૨૧	૨૧-૪-૨૦૧૬	નવપદ ઓળી
૨૨	૨૨-૪-૨૦૧૬	ચાતુ. ઘોષણા
૨૩	૨૩-૪-૨૦૧૬	
૨૪	૨૪-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ MSG
૨૫	૨૫-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ MSG
૨૬	૨૬-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ MSG
૨૭	૨૭-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ MSG
૨૮	૨૮-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ MSG
૨૯	૨૯-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ MSG
૩૦	૩૦-૪-૨૦૧૬	ભીનમાલ MSG

વિશેષ સૂચના : પ.પૂ. ગચ્છાધિપતિશ્રીની અનુકુળતાથી આ વિહાર કાર્યક્રમ બનાવવામાં આવ્યો છે.
પૂ. ગચ્છાધિપતિશ્રી ના સ્વાસ્થ્ય ને અનુસર કાર્યક્રમમાં ફેરફાર થઈ શકે છે.
સંપર્ક સૂત્ર : ૯૯૨૪૪૬૬૨૦૧, ૯૪૨૯૦૬૬૬૧૬

कुमकुम सने पगलिये

गाजे-बाजों के साथ गच्छाधिपतिश्री का मंगल प्रवेश हुआ
बागरा शताब्दी महोत्सव का शुभारंभ 11 फरवरी को
21 फरवरी को समापन होगा

बागरा। स्वरलहरियों के साथ नाचती-गाती भक्त मंडली, हाथों में राष्ट्रसंत के स्वागत और अभिवादन के लिए गहुली लिए खड़े भक्तजन, सजे धजे युवक-युवतियाँ और उपस्थित जैन समाज के हजारों सदस्य। कमोबेश कुछ ऐसा ही नजारा था बागदा नगर में। जिनशासन के राजा आचार्य भगवंत सुविशाल, समर्थ गच्छाधिपति, युग प्रभावक, राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज का बागरा नगर में 10 फरवरी को भव्य प्रवेश हुआ।

यहाँ प्राचीन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिन प्रासाद अपने समय का सुंदरतम 24 जिनमंदिर है, जिसकी भव्यता देखते ही बनती है। जिनालय की प्रतिमा के 100 वर्ष पूर्ण होने पर यह महामहोत्सव 11 से 21 फरवरी तक आयोजित हुआ।

इसी प्रसंग में बुधवार को गुरु भगवंतों के नगर प्रवेश का शुभारंभ शोभायात्रा के रूप में नगर से बाहर बागरा नगर की चौपाटी में स्थित श्री महावीर स्वामी जिनालय एवं पूज्य गुरुदेव श्रीमद् धनचन्द्रसूरिश्वरजी गुरुमंदिर के दर्शन के साथ हुआ। विशाल जनसमुदाय दर्शन कर सम्पूर्ण गांव का भ्रमण करते हुए श्री भरतपुर नगरी और वाराणसी नगरी प्रांगण में पहुंचा। यहाँ उद्घाटन के पश्चात् यह जनसमूह विशाल धर्मसभा में परिवर्तित हुआ।गच्छाधिपतिश्री ने धर्मसभा को संबोधित किया। तत्पश्चात् संतश्री ने बसल स्टेंड स्थित महावीर स्वामी मंदिर में दर्शन कर वंदना की।

इसके बाद संतों का यह कारवां चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर की ओर बैंड-बाजों के साथ चल पड़ा। चल समारोह रथ-घोड़े, हाथी, बैलगाड़ियों में सवार लाभार्थियों एवं अनेक भक्तों के साथ चल पड़ा। गुरुदेव ने जिनालय के दर्शन कर स्टेशन रोड स्थित आयोजन स्थल की ओर प्रस्थान किया। यहाँ पूर्णतः सज्जित नगरी में प्रवेश कर संतश्री ने धर्मसभा को संबोधित किया। इस अवसर पर बागरा सहित आकोली, नूना, सरत, बाकरा, सांथु, जालोर सहित अन्य अनेक स्थलों से आए जन मौजूद थे। जनसमुदाय की भारी उपस्थिति से यहां निर्मित विशाल पांडाल छोटा प्रतीत हो रहा था।

11 फरवरी का दिन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ 24 जिनालय महा शताब्दी के महोत्सव का प्रथम दिवस था। शताब्दी महोत्सव के 11 दिवसीय कार्यक्रम आराधना के प्रेरणा स्रोत, निश्रा प्रदाता आचार्य भगवंत श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी का 63 वां संयम (दीक्षा) दिवस भी है। संयोग से यह अनुपम आराधना, अनुमोदना का अवसर भी श्री बागरा जैन संघ को मिला।

संयम दिवस पर चार मुनि भगवंतों ने अपने प्रवचन से जनसमूह को उपदेशित किया। प्रवचन की शुरूआत में ही मुनि भगवंत श्री वीररत्नविजयजी ने सर्वप्रथम बागरा नगर में विगत शाम श्री नरेशकुमारजी के आकस्मिक निधन पर संवेदना प्रकट करते हुए उपस्थित जनसमूह के साथ तीन नवकार गिनकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। गुरुदेव ने इस अटल सिद्धान्त को समझाया और कहा कि मृत्यु हम सभी की तय है। इस मानव जन्म में हम कितना पुण्य कर पाते हैं, यह बात प्रमुख है। अतः सिर्फ सांसारिक उपलब्धियों को पाकर ही हमें संतोष नहीं करना है, वरन् आध्यात्मिक उपलब्धियाँ अर्जित करना है।

मुनिभगवंत डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी ने 'गुरुजी हमारो अंतर्नाद, हमने आपो आशीर्वाद' की सार्थकता से अवगत कराते हुए कहा कि जब तक हम मन की गहराई से किसी का वंदन नहीं करते, तब तक पूर्ण आत्मीय आशीर्वाद हमें नहीं मिलता। वंदन का अर्थ है, उनके द्वारा जो ज्ञान गंगा बहाई जा रही है, उसे अपने आचार-विचार में धारण करना। ऐसा करने पर ही हम सच्चा आशीर्वाद पा सकते हैं। वंदन में इतनी शक्ति है कि हम भव-भव के कर्मबंधन से मुक्ति पा सकते हैं।

मुनि भगवंत श्री विद्दरत्नविजयजी ने अपने प्रवचन में बताया कि बागरा नगर मेरे गुरुदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के प्राथमिक विद्याध्ययन की भूमि है। यहीं पर श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी से ज्ञानार्जन का बीजारोपण हुआ था और संयोग की बात है कि मेरा ज्ञान बीजारोपण भी इसी भूमि पर वर्तमानाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में हुआ। इस प्रकार बागरा नगर ने ज्ञानार्जन में मुख्य भूमिका प्रदान की है।

मुनिभगवंत चारित्ररत्न विजयजी ने संयम दिवस प्रवचन में फरमाया कि आराध्य गुरु में अटल श्रद्धा बिना समर्पण भावना जागृत

नहीं हो सकती और बिना समर्पण भावना के आप सार्थक आशीर्वाद के योग्य नहीं बन सकते। यह परम सत्य है कि भगवान को पाने के लिए गुरु ही सूत्रधार हैं, वे ही मार्ग प्रदाता हैं, अतः गुरुदेव की शरण को अटल श्रद्धा से अंगीकार करें। आपश्री ने फरमाया कि बागरा नगर का जैन शासन के इतिहास में बहुत ज्यादा महत्व है। यह वही नगर है जहां से श्री उदयजी नामक सुश्रावक गुजरात में धनोपार्जन के लिए गए थे और वहां अपनी प्रतिभा से गुजरात के महामंत्री बने थे। उदयन मंत्रीश्वर के रूप में उनका जिनशासन की जयवंता में बहुत बड़ा योगदान है। संयोग से मेरे आराध्य गुरुदेव ने गुजरात से बागरा आकर जिनशासन को जयवंत किया है।

मुख्य अतिथि के रूप में जालोर विधायक श्रीमान् जोगेश्वरजी गर्ग और आहोर विधायक श्री शंकरसिंह राजपुरोहितजी पधारे। अतिथिद्वय ने गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर एवं समारोह का अवलोकन कर संतोष प्रकट किया।

–ब्रजेश बोहरा

भगवान के प्रसन्न होने का रहस्य

एक महिला संतान न होने के कारण बहुत दुःखी थी। भजन, पूजन, व्रत, उपवास जिसने जो बताया, उसने बड़ी श्रद्धा से उसे पूर्ण किया। फिर भी उसकी गोद सूनी की सूनी रही। अंत में उदास मन लेकर संतान पाने की लालसा से वह किसान के पास पहुंची। किसान होने के साथ वह उद्भट विद्वान, समाजसेवी और लोकोपकारी व्यक्ति थे। वह दूसरों के दुःख दर्द को अपना दुःख–दर्द समझकर उन्हें दूर करने का भरसक प्रयत्न करते।

उनके पास बर्तन में कुछ भुने चने रखे थे। उन्होंने उस महिला को अपने पास बुलाकर दो मुट्ठी चने उसे दिए और कहा– 'उस आसन पर बैठकर इन्हें खा लो।' उस ओर कई बच्चे खेल रहे थे। छोटे–छोटे बच्चे, उन्हें अपने–पराए का ज्ञान कहाँ होता है? वे भी खेल बंद करके उस महिला के पास आकर इस आशा में खड़े हो गए कि शायद यह महिला हमें भी खाने को देगी। पर वह तो मुँह फेरे अकेले ही चने खाती रही और बच्चे ललचाई दृष्टि से खड़े–खड़े उसे टुकुर–टुकुर देखते रहे।

चने खत्म हो गए तो वह पास पहुंची और बोली– 'अब आप हमारे दुःख दूर करने के लिए भी कुछ उपाय बताइए।'

सज्जन बोले– 'देखो देवी! तुम्हें मिले चनों में से तुम उन बच्चों को चार दाने भी नहीं दे सकी, जबकि एक बच्चा तो तुम्हारी ओर हाथ तक पसार रहा था। फिर भगवान तुम्हें हाड़–माँस का बच्चा क्यों देने लगेंगे।' उदार भगवान से और भी अधिक उदारता पाने की आशा करने वालों को अपना स्वभाव और चरित्र और अधिक उदार बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

गुरुदेव श्री जयंतबाबजी के संयमोत्सव पर जिनालयों में सर्वत्र सामूहिक स्नात्र पूजन का आयोजन

(अशोक श्रीश्रीमाल एवं सुधीर लोढ़ा)

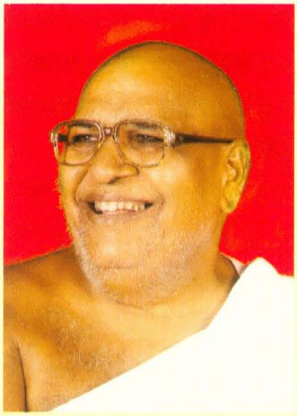

सुविशाल गच्छाधिपति, युग प्रभावक, राष्ट्रसंत, आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के 63 वें दीक्षा दिवस की अनुमोदना, स्नात्र महोत्सव के माध्यम से की गई । संयम जीवन के अनुमोदनार्थ अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के आह्वान पर देशभर में गुरुभक्तों द्वारा जिनालयों में स्नात्र पूजाएं हुईं। स्नात्र पूजा के मंत्रोच्चार से प.पू. आचार्य देवेश के जिनशासन प्रभावना के कार्यों की गुरु भक्तों ने अनुमोदना की।

आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के 63 वें संयम जीवन को देशभर में उत्सव के रूप में मनाया गया। गुरु के प्रति समर्पणता व श्रद्धा का झरना स्नात्र पूजा के रूप में प्रगट हुआ। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ने संयम जीवन की बेला की अनुमोदना स्नात्र पूजा के रूप में किए जाने का आह्वान किया था। परम उपकारी गुरुदेव की जिनशासन की प्रभावना का ऐसा असर हुआ कि देशभर के जिनालयों में सुबह से ही स्नात्र पूजा के मंत्रोच्चार की गूंज सुनाई देने लगी। मालवा, मारवाड़, निमाड़, गुजरात से लेकर दक्षिण के प्रांतों तक दीक्षा दिवस का महोत्सव मनाया गया। जिस प्रकार शकेन्द्र तीर्थंकर भगवंत के जन्मकल्याणक को मेरू शिखर पर अष्टप्रकारी पूजा के माध्यम से महोत्सव के रूप में मनाते हैं, उसी प्रकार श्रावक-श्राविकाओं ने भी जिनालयों में स्नात्र पूजाएं पढ़ाईं।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, महामंत्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, प्रचार मंत्री श्री सुधीरजी लोढ़ा ने बताया कि देश की समस्त शाखा परिषदों ने स्थानीय स्तर पर प.पू.आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के संयम जीवन दिवस पर विविध आयोजन किए। परिषद् गुरुदेव का जन्मोत्सव, संयमोत्सव एवं पाटोत्सव के कार्यक्रम उत्साहपूर्वक मनाती रही है। परम पूज्य गुरुदेव संयम जीवन में निरंतर जिन शासन की प्रभावना में जुटे हुए हैं। स्वयं के आत्मकल्याण के साथ ही साथ श्रावक-श्राविकाओं को भी भवसागर से तार रहे हैं। स्नात्र पूजा में गुरुभक्तों का उमड़ा उत्साह तारणहार के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है।

मन्दसौर। गुरुदेव का 63वां दीक्षा दिवस संयम महोत्सव के रूप में मनाया गया।

अ.भा.राजेन्द्र जैन परिषद् परिवार ने इस मंगल दिवस पर उनके संयम जीवन के अनुमोदनार्थ सामूहिक स्नात्र पूजन का आयोजन किया।

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, अ.भा.राजेन्द्र जैन महिला परिषद् शाखा मन्दसौर द्वारा जनकुपुरा स्थित श्री अजीतनाथ मंदिर, पार्श्व पद्मावती मंदिर एवं रामटेकरी स्थित मंदिर में स्नात्र पूजन रखा गया। पार्श्व पद्मावती मंदिर में स्नात्र पूजा भव्य रूप से पढ़ाई गई। सभी ने पूजा का लाभ लिया। इस अवसर पर मनीष मारू, कमलेश मारू, हेमन्त चपड़ोद, अजीत संघवी, अरविन्द पोरवाल, विमल चौधरी, भारतीय पोरवाल, हेमा हिंगड़, बादाम बेन चपड़ोद, सरोज चपड़ोद, सुनिता चपड़ोद, ममता मारू, अलका चंडावला, चंदरबाई रंगवाला, सीमा चंडावाला आदि उपस्थित थे।

बैंगलोर। गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के 63 वें दीक्षा दिवस के अनुमोदनार्थ परिषद् शाखा बैंगलौर द्वारा श्री मुनिसुव्रत राजेन्द्र जैन मंदिर एवेन्यु रोड़ में सामूहिक भव्य स्नात्र पूजा श्री मुनि सुव्रतराजेन्द्र महिला एवं बालिका मंडल द्वारा पढ़ाई गई। इस अवसर पर परिषद् के कई सदस्य उपस्थित रहे। यह जानकारी मंत्री डुंगरमल चौपड़ा ने दी।

मंगल स्वास्थ्य की कामना से धर्माराधना जारी

रतलाम। राष्ट्रसंत श्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के मंगल स्वास्थ्य की कामना से स्वसंचालित वार्षिक धर्मानुष्ठान के तहत प्रत्येक साधक द्वारा 45 पौषध, 324 प्रतिक्रमण, 333 प्रभु पूजन, 81 सामायिक तथा नवकार महामंत्र, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ व श्रीमद् राजेन्द्रसूरीजी के जाप की धर्माराधना जारी है। लगभग 225 साधक धर्माराधना कर रहे हैं।

धर्मानुष्ठान संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने जानकारी देते हुए बताया कि नीमवाला उपाश्रय पर नित्य आराधना में साधकों की तपस्याएं निरंतर हैं। श्रीमद् राजेन्द्रसूरीजी के प्रति सुदी सातम के वार्षिक जाप अन्तर्गत तीसरा जाप रविवार 14 फरवरी को तथा श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ का पांचवा जाप बुधवार 17 फरवरी को हुआ। शनिवार 20 फरवरी को राष्ट्रसंत श्री के 33 वें पाटोत्सव के तहत उपाश्रय में विभिन्न कार्यक्रम हुए। धर्माराधक सेवा प्रकल्प प्रभारी श्रीमती ममता धनसुख भंडारी ने एक जानकारी में बताया कि राष्ट्रसंतश्री के 80 वें जन्मोत्सव पर वार्षिक धर्मानुष्ठान के प्रथम दो माह के लगभग 63 दिनों (9 दिसंबर 2015 से 9 फरवरी 2016 तक) साधकों द्वारा 54 पौषध, 900 प्रतिक्रमण, 1701 प्रभु पूजन, 603 सामायिक, नवकार महामंत्र के 5,86,440 जाप, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु के 2,67,840 जाप एवं श्रीमद् राजेन्द्रसूरीजी के 75,600 जाप हो चुके हैं। रचनात्मक एवं संस्काररोपण प्रभारी अनोखीलाल भटेवरा ने बताया कि धर्मानुष्ठान के तहत 15 वर्ष से कम उम्र के बालक-बालिकाओं को प्रोत्साहन देने के लिए प्रभु पूजन हेतु परिधान वितरित किए जाएंगे। अभी तक 18 से अधिक बालक-बालिकाओं ने पूजन प्रारंभ कर दी है। आगामी दिनों में स्तवन, गायन, लेखन, गहुली व अंगरचना के विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। श्रीसंघ अध्यक्ष डॉ.ओ.सी.जैन, खेड़ावाला, सुरेशचन्द्र बोराना व निर्मल कटारिया ने सभी धर्माराधकों की अनुमोदना करते हुए अधिकाधिक धर्माराधना वार्षिक धर्मानुष्ठान में करने का समाजजनों से अनुरोध किया है।

विशाल रोग निवारण शाता वेदनीय शिविर सम्पन्न हजारों लोगों ने लाभ उठाया

मन्दसौर। त्रिस्तुतिक श्रीसंघ एवं परिषद् परिवार द्वारा आयोजित निःशुल्क रोग निवारण एवं शाता वेदनीय शिविर का 8 से 10 हजार लोगों ने लाभ उठाया। इस दौरान तीर्थंकर से लब्धि प्राप्त श्री निमेशभाई शाह ने नवकार मंत्र के जाप की क्रिया करवाकर रोगियों का इलाज किया। कई रोगियों ने इस दौरान राहत महसूस की। महत्वपूर्ण बात यह रही कि 245 परिवार ने मांसाहार त्यागने का संकल्प भी लिया।

राजेन्द्र विलास में आयोजित शाता वेदनीय शिविर में अहमदाबाद के निमेशभाई शाह ने शुभ संकल्प, प्रभु प्रार्थना, नवकार महामंत्र व अपनी लब्धि द्वारा सभी प्रकार के रोगों के निवारण का निमित्त बनकर बीमारियों से पीड़ित लोगों का ईलाज किया। इस दौरान हजारों लोग शिविर का लाभ लेने के लिए उमड़े। हर एक पाली में एक घंटा रोगियों से क्रियाएं भी कराई गईं। शिविर में श्री शाह ने 100 रुपए प्रति व्यक्ति जीवदया (गौशाला, पशु पक्षी को दाना, दीन-हीन-अनाथ को भोजन आदि) के लिए दान का संकल्प भी दिलाया। श्री शाह ने निरोगी काया के सूत्र बताए। इस दौरान कोमा, लकवा, हाथों में सुन्नपन, घुटना, पीठ दर्द, माईग्रेन जैसी कई बीमारियों के मरीजों को लाभ पहुंचाया।

इसके पूर्व नवकार महामंत्र व भगवान महावीर स्वामी के चित्र के सम्मुख धूप-दीप का प्रज्वलन श्री उमेशभाई शाह, श्रीसंघ अध्यक्ष श्री गजेन्द्रसिंह हींगड़, न.पं. अध्यक्ष वीरेन्द्र डोसी, अशोक खाबिया, धर्मेन्द्र कर्नावट, राजकुमार चपड़ोद ने किया। लगभग 10 घंटे चले इस शिविर में नवयुवक परिषद्, महिला परिषद्, तरुण व बाल परिषद् ने व्यवस्था सुचारू बनाने में महत्वपूर्ण सेवाएं दीं। सर्वश्री अजय फांफरिया, रोहित संघवी, मनीष मारू, सुधीर लोढ़ा, श्रेयांस हींगड़, दिलीप कर्नावट, सतीश लोढ़ा, नीतेश पोरवाल, राकेश डोसी, जयेश डांगी, महेन्द्र छिंगावत, कमलेश सालेचा, अपूर्व डोसी, राजेश हींगड़, दशरथ चौधरी, हरिश चपरोत, बाबुलालजी पोरवाल, निर्मल खाबिया, पारस फांफरिया, शैलेन्द्र कोठारी, महेश चपरोत, सुनील फांफरिया, सुनील सोनगरा, मनीष कर्नावट, अनिल खाबिया, मनीष सगरावत, संदीप हींगड़, शिखर चपरोत आदि गुरुभक्तों, महिला परिषद् में अध्यक्ष श्रीमती भारती पोरवाल, हेमा हींगड़, सुनिता खाबिया, गुणबाला मेहता, ललिता कर्नावट, लीला खाबिया, सरोज चपरोत, निधि संघवी, ममता मारू, प्रतिभा मारू, पद्मा मेहता, सुधा बाफना, माधुरी खाबिया आदि ने सेवाएं प्रदान कीं।

अलीराजपुर। साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी ठाणा 3 साध्वीजी द्वारा अपभ्रंश साहित्य अकादमी जयपुर की पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम की परीक्षा स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर में दी गई। इसमें साध्वीश्री रुचिदर्शनाश्रीजी ने 200 में से 182 अंक प्राप्त कर सिल्वर मेडल प्राप्त किया। साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी एवं साध्वी श्रीतृप्तिदर्शनाश्रीजी ने भी 200 में से 179 अंक के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। उक्त जानकारी श्री कमलेश काकड़ीवाल ने दी।

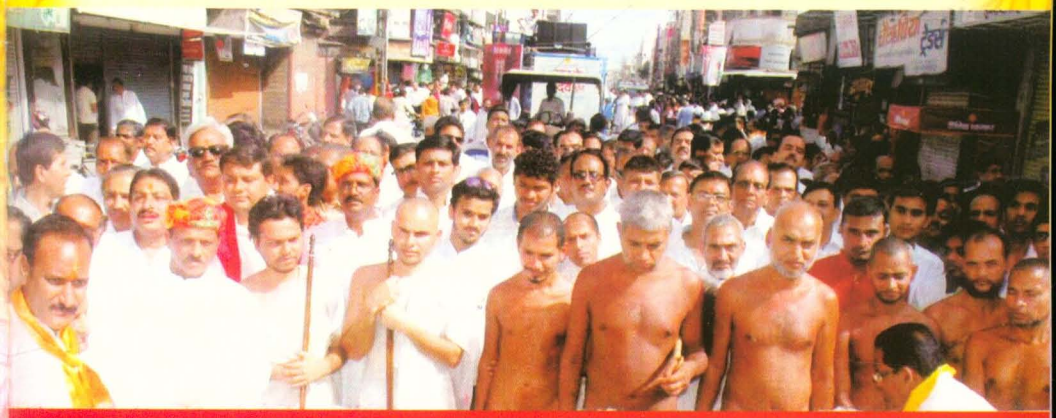

उज्जैन। श्वेताम्बर-दिगम्बर जैन समाज का संयुक्त जुलूस। मुनिश्री संयमरत्न विजयजी एवं मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी म.सा. के साथ।

बागरा में धर्म का सूर्य 11 दिवस तक चमकता रहा

पू. राष्ट्रसंत श्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी के सान्निध्य में महा महोत्सव शान से मना

बागरा। (राहुल चौधरी)। बागरा मंडन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभु के 24 जिनालय के महा शतकोत्सव निमित्ते एकादशान्हिका महोत्सव के ग्यारह दिवसीय उत्सव के प्रथम दिवस दिनांक 11 फरवरी 2016 को संयम दानेश्वरी, सुविशाल गच्छ के गच्छाधिपति, राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के 63 वें संयम (दीक्षा) दिवस के पावन दिवस को मनाकर महोत्सव का शुभारंभ हुआ। वाराणसी नगरी के भव्य पांडाल में गुरुदेव के इस मंगलमय दिवस को मनाने के लिए बागरा नगर एवं देश के विभिन्न प्रांतों से आए भक्त उपस्थित हुए। संयम दिवस पर मुनि भगवंतों ने पू. गुरुदेव के संयम जीवन की महत्ता एवं गुणों का गुणगान किया। सर्वप्रथम मुनि श्री वीररत्न विजयजी ने पू. गुरुदेव के अटल सिद्धान्तों को समझाया एवं कहा, मृत्यु सभी की निश्चित है किन्तु इस मानव जन्म में हम पुण्योपार्जन कर सांसारिक मोहमाया में न फंसकर आध्यात्मिक उपलब्धियाँ पाने की ओर अग्रसर हों जिससे हमारा जीवन सार्थक हो सके। मुनि डॉ.श्री

सिद्धरत्नविजय जी म.सा. ने 'गुरुजी हमारो अंतर्नाद-हमने आपो आशीर्वाद' की सार्थकता बताई। आपने कहा जब तक हम अंतर्मन से किसी को वंदन नहीं करते तब तक पूर्ण आत्मीय आशीर्वाद प्राप्त नहीं होता। वंदन का अर्थ उनके द्वारा जो ज्ञान गंगा बहाई जा रही है, उसे अपने आचरण में धारण कर,जीवन में क्रियान्वित कर सच्चा आशीर्वाद पाना है। मुनिश्री विद्वद्रत्न विजयजी ने बताया कि बागरा नगर पूज्य आचार्य श्री की प्राथमिक पठन भूमि है। यहीं पर श्रीमद् यतीन्द्र सूरिश्वरजी से उनका ज्ञानार्जन का बीजारोपण हुआ था। संयोग से ज्ञान का बीजारोपण मेरा भी इसी भूमि पर पूज्य गुरुदेव की निश्रा में हुआ था। अतः बागरा नगर ने ज्ञानार्जन की मुख्य भूमिका प्रदान की है। मुनिश्री चारित्ररत्न विजयजी ने कहा कि आराध्य गुरु से अटल श्रद्धा होनी चाहिए। बिना श्रद्धा एवं समर्पण भावना के आप सार्थक आशीर्वाद के योग्य नहीं बन सकते। बागरा नगर का जैन शासन के इतिहास में महत्वपूर्ण इतिहास है। गुरु के प्रति सुश्रावक श्री उदयजी के समर्पित भाव के कारण पू. गुरुदेव से मिले आशीर्वाद से ही वे जीवन में परम उन्नति के शिखर तक पहुंच सके। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र जी पोरवाल ने गुरुदेव के सम्पूर्ण जीवन की कथा विस्तृत रूप से बताते हुए कहा कि पूज्य गुरुदेव का बचपन से ही वैराग्य के प्रति लगाव रहा। दीक्षा एवं दीक्षोपरांत अपनी समर्पण भावना से गुरुदेव के वचनों को सिद्ध कर जिनशासन में त्रिस्तुतिक संघ को उच्च शिखर तक पहुंचाया। श्री नरेन्द्र जी पोरवाल के वक्तव्य एवं प्रस्तुत गुरुदेव की इस कहानी को समस्त जनसमुदाय मंत्रमुग्ध हो सुन रहा था।

इस अवसर पर पधारे जालोर विधायक श्री जोगेश्वर जी गर्ग एवं आहोर के विधायक श्री शंकरसिंह राजपुरोहित ने गुरुदेव का वंदन कर उनसे आशीर्वाद लिया। दिन में कुंभ स्थापना, दीपक स्थापना, ज्वारा रोपण, जलयात्रा विधान सहित भक्तामर पूजन आदि विविध धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न हुए।

दिनांक 12 फरवरी को पू. गुरुदेव द्वारा प्रदत्त शुभ मुहूर्त एवं शुभ बेला में श्री नवग्रह पाटला स्थापना, श्री दशदिग्पाल पाटला पूजन एवं श्री अष्टमंगल पाटला पूजन का विधान विधिकारकों द्वारा पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में किया गया। दोपहर में विधिकारकों एवं मन मधुकर ग्रुप द्वारा संगीत के साथ श्री कल्याण मंदिर महापूजन किया गया।

दिनांक 13 फरवरी को प्रातः वाराणसी नगरी में मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म. ने प्रवचन सभा को उपदेशित किया। आपने फरमाया कि सब 'चमत्कार को नमस्कार' करते हैं, किन्तु पूज्य गुरुदेव का कहना है कि 'नमस्कार से ही चमत्कार संभव है'। नमस्कार अर्थात् समर्पण। जीवन में गुरु की महिमा सर्वविदित है। गुरु के प्रति अन्तःकरण से समर्पण भाव रखकर ही उपलब्धि प्राप्त होती है। बालमुनि श्री

प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा. ने अपने संबोधन में दशवैकालिक सूत्र में परिभाषित 4 कषायों का संक्षिप्त वर्णन करते हुए कहा कि इनको छोड़े बिना मुक्ति मार्ग संभव नहीं है। आज शुभ बेला में श्री सिद्धचक्र पाटला पूजन, श्री बीस स्थानक पाटला पूजन एवं श्री नंदावर्त पाटला पूजन की क्रिया विधान सम्पन्न की गईं। विजय मुहूर्त में मंदिरजी में श्री गौतम स्वामीजी का महापूजन किया गया।

दिनांक 14 फरवरी को पूज्य आचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में वाराणसी नगरी में धर्म महासभा आचार्य भगवंत के 63 वें संयमोत्सव की अनुमोदना को समर्पित थी। संगीतकार श्री राजेन्द्र जी करनपुरिया ने गुरुदेव के सुन्दर अनुमोदन गीत प्रस्तुत किए। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र भाई पोरवाल, श्री सुखराज जी, श्री अमृतलालजी, श्री पुखराज जी, मंच संचालक श्री विनोद आचार्य ने गुरुदेव के आराध्यमयी जीवन की अनुमोदना की। पू. आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में बागरावासियों को आशीर्वाद देते हुए और अपने पूर्व स्मरणों का उल्लेख करते हुए फरमाया कि पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरिश्वरजी म. का जितना लगाव बागरा नगर से था, उससे कहीं अधिक श्रद्धा यहाँ के ग्रामवासियों की गुरुदेव के प्रति थी। आपश्री ने बताया कि बागरा मेरे आराध्य गुरु का धर्मप्रीत नगर था, अतः स्वाभाविक तौर पर मेरा भी इस नगर से वैसा ही अनुराग है। इसी नगर से मैंने प्रथम 'सिद्धाचल तीर्थ' की यात्रा की, जो मात्र 17 दिनों में पूर्ण की थी। मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी ने फरमाया कि गुरुदेव 17 वर्ष की उम्र में

17 दिनों में यहाँ से सिद्धाचल पहुंचे थे और वर्तमान में 80 वर्ष की उम्र में भी मात्र 17 दिनों में ही सिद्धाचल से बागरा पहुंचे हैं। यह गुरुदेव का नगर के प्रति उनकी प्रीति को दर्शाता है। दोपहर में संगीतमय स्तवनों के साथ श्री राजेन्द्र सूरि गुरुपद महापूजन हुई। रात्रि भक्ति में उज्जैन के नाटक मंडल द्वारा आकर्षक भक्तिमय प्रस्तुति दी गई, जिसे सभी भक्तों ने खूब सराहा।

दिनांक 15 फरवरी को वाराणसी नगरी के भव्य पांडाल में प्रभु पार्श्वनाथजी का जन्मकल्याणक विधान , पूज्य आचार्य श्री की निश्रा में प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम प्रभु के च्यवन कल्याणक का मंचन श्री राजेन्द्र एवं दीपक करनपुरिया के भक्तिमय गीतों से किया गया। इसमें 56 दिग्गकुमारी महोत्सव, इन्द्र महोत्सव, स्वप्न फल कथन, राज ज्योतिष आगमन आदि वृत्तांतों की नन्हीं बालिकाओं एवं लाभार्थीजन ने आकर्षक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर पधारे भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओमजी माथुर एवं अन्य अतिथियों ने पूज्यश्री से आशीर्वाद लेकर पूरे उत्सव का अवलोकन किया। दोपहर में क्रियामंडप में श्री नमिऊंण महापूजन विधान सम्पन्न किया गया। रात्रि भक्ति में मुम्बई के अभय जी तांतेड़ एवं तरुण मोदी ने भक्ति गीतों का रसपान कराया।

दिनांक 16 फरवरी को पूज्य आचार्य भगवंत की निश्रा में वाराणसी नगरी में प्रभु के जन्म कल्याणक का मंचन किया गया। इसमें प्रभु के जन्म, 64 इन्द्रों द्वारा मेरू शिखर पर अभिषेक, प्रियवंदा दासी द्वारा प्रभु जन्म की बधाई, प्रभु का नामकरण, पाठशालागमन आदि वृत्तांतों का मंचन किया गया। दोपहर विजय मुहूर्त में श्री सिद्धचक्र महापूजन विधान किया गया। रात्रि भक्ति में दिल्ली से आए श्री नीलम पांडे ने करुणामयी गीतों से उपस्थित जनता को भक्तिभाव से सराबोर किया।

दिनांक 17 फरवरी को प्रातः महामंत्र नवकार से पंच कल्याणक महोत्सव का शुभारंभ पूज्य आचार्य गुरुदेव, मुनि भगवंत, साध्वी भगवंतों की निश्रा में किया गया। पंच कल्याणक महोत्सव अन्तर्गत प्रभु के लग्न महोत्सव, प्रभु के मामेरा, राज्याभिषेक एवं राजतिलक के प्रसंगों को दर्शाया गया। दिन में श्री 108 पार्श्वनाथ महापूजन मंत्रोच्चार के साथ विधिकारकों द्वारा सम्पन्न कराया गया। रात्रि भक्ति में विश्व प्रसिद्ध 'जागो हिन्दुस्तानी ग्रुप' द्वारा देशभक्ति के गीतों की सुन्दर प्रस्तुति दी गई। आजादी से जुड़ी घटनाओं का गीतों के माध्यम से संक्षिप्त वर्णन किया गया जिससे पूरा पांडाल देशभक्ति की भावना से सराबोर हुआ।

दिनांक 18 फरवरी को प्रभु के पंच कल्याणक में प्रभु से नवलोकोतित देवों द्वारा दीक्षा की विनंती, प्रभु द्वारा माता-पिता, बहन एवं कुल महत्तरा की आज्ञा लेना प्रसंगों का प्रभावी मंचन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित हुए राजस्थान के पशुपालन एवं देवस्थान मंत्री श्री

ओटाराम देवासी, पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष श्रीमती तारा भंडारी आदि अतिथियों ने पूज्य गुरुदेव से आशीर्वचन एवं वासक्षेप लिया और कार्यक्रम की सराहना की। दोपहर में मंदिरजी में श्री महावीर स्वामी कल्याणक पूजन में प्रभु के पांचों कल्याणक का पूजा-विधान किया गया। रात्रि में बैंगलूर से आए भाई विपिन पोरवाल ने अपने गीतों के माध्यम से परिवार एवं परिवार सदस्यों के रूप में माता-पिता, भाई-बहन की महत्ता को भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया। इस अवसर पर स्टेट मजिस्ट्रेट श्री प्रकाश जी पगारिया, सिरोही दरबार श्री रघुवीरसिंह जी भी पधारे जिन्होंने पू. गुरुदेव के पास जाकर आशीर्वाद लिया।

दिनांक 19 फरवरी को प्रातः बैंड-बाजों, हाथी-घोड़े-ऊंट आदि के साथ पूरे ठाठ-बाट से नाचते-गाते हुए वाराणसी नगरी से प्रभु के दीक्षा कल्याणक का वरघोड़ा निकाला गया, जो पुनः वाराणसी नगरी पहुँचा। यहाँ दीक्षा कल्याण का मंचन पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में किया गया। दोपहर में क्रियामंडप में श्री अट्ठारह अभिषेक पूजन किया गया। वाराणसी नगरी में गांव सांझी एवं मेहन्दी वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रात्रि भक्ति में मुंबई की रैना लेहरी एवं अहमदाबाद के त्रिलोक मोदी द्वारा भक्ति रंग जमाया गया। इस अवसर पर राजस्थान वन विभाग मंत्री श्री राजकुमार जी रिणवा एवं अन्य अतिथियों ने भक्ति में शिरकत की।

दिनांक 20 फरवरी को प्रातः पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. एवं समस्त साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में पू. गुरुदेव के मंत्रोच्चार के साथ भगवान श्री पार्श्वनाथ प्रभु सह 24 जिनालयों का ध्वजारोहण कार्यक्रम हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। हेलीकॉप्टर से

पुष्प वर्षा की गई। इसके पश्चात् पू. गुरुदेव वाराणसी नगरी पधारे जहाँ आचार्यश्री के 33 वें पाटोत्सव का भव्य कार्यक्रम हुआ। पाटोत्सव के उपलक्ष्य में मुनि भगवंतों एवं गुरुभक्तों द्वारा गुरु वंदना की गई। मुनिराज श्री जयरत्न विजयजी ने गुरुदेव को वंदन करते हुए कहा कि पूज्य आचार्यश्री भगवान सुधर्मा स्वामी की पाट परम्परा के भास्कर हैं। यदि आज कोई पूछे कि विचारों से सबसे युवा कौन है? तो वे पूज्य आचार्यश्री ही हैं। मुनिश्री वीररत्न विजयजी म.सा. ने गुरुदेव का गुणगान करते हुए कहा कि गुरु ने ही हमें दीक्षा मार्ग पर लाकर संसार के कीचड़ से बाहर निकालकर पवित्र बनाया है। आपने कहा कि हमें हमारे साधार्मिक भाइयों की सेवा में भी हमेशा तत्पर रहना चाहिए। श्री विद्वरत्नविजयजी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव के प्रति भाव व्यक्त करते हुए कहा कि गुरुदेव दीपक के समान हैं। यदि गुरु के रूप में ज्ञान दीपक को देखकर भी हमारे जीवन में अंधकार दूर नहीं होता है तो समझें कि कमी हमारे अन्तर की है। पू. गुरुदेव के रोम-रोम में साधर्मिक भक्ति भरी हुई है। इनके पास जो, रोता हुआ आता है, वह हमेशा हंसते हुए ही लौटा है। साध्वी श्री अमृतदर्शना श्रीजी ने अनेक उदाहरणों से बताया कि गुरुदेव की महिमा का बखान करना किसी के बस की बात नहीं है। गुरुदेव जैसे तो हम नहीं बन सकते परन्तु यदि अंश मात्र भी ग्रहण कर सकें तो हमारा जीवन सफल हो जाएगा। इस अवसर पर राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाब जी कटारिया भी उपस्थित हुए जिन्होंने गुरुदेव को वंदन कर आशीर्वाद लिया एवं गुरुदेव की कृपा का गुणगान किया। मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने गुरुदेव को नमन करते हुए कहा कि बहुत से लोग

इतिहास पढ़ते और लिखते हैं परन्तु हमारे पूज्य गुरुदेव इतिहास बनाते हैं।

पूज्य आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन में फरमाया कि 33 वें पाटोत्सव में पूरा चतुर्विध संघ उपस्थित हुआ है। मैं कुछ नहीं हूँ, जो कुछ भी हूँ यह मेरे गुरु की कृपा है। आपश्री ने फरमाया कि सभी साधु-साध्वियों से मेरी यही भावना है कि वे हमेशा संघ, शासन एवं गच्छ के प्रति समर्पित भाव रखें। बागरा संघ ने भी इस महोत्सव में अपूर्व उत्साह दर्शाया है। इसी उत्साह एवं समर्पण भाव से यह संघ भविष्य में और भी प्रगति करेगा। इस अवसर पर पूज्यश्री की निश्रा में विभिन्न पुस्तकों एवं सीडी का विमोचन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। गुरुदेव के प्रवचनों के संकलन की पुस्तक 'जयन्तसेन प्रवचन' का विमोचन श्री गुलाब जी कटारिया, 'प्रभु वीर प्रकाश देशना' सीडी का विमोचन श्री सूर्यप्रकाश जी भंडारी ने, 'भक्तों के मानो भगवान हैं' सीडी का विमोचन श्री शांतिलालजी रामाणी, परिषद् पाठ्यक्रम भाग 1 से 5 तक की पुस्तक का विमोचन श्रीमती पुष्पा भंडारी ने, 'मिले हैं हमें जयंत से गुरु' पुस्तक का विमोचन श्री बाबुलाल जी कटारिया, 'पियुश प्रभा' पुस्तक का विमोचन श्री रमेशभाई धरू,'गौतम नाम प्रभात जपो' पुस्तक का विमोचन श्री मोहनजी आदि ने पूज्य की निश्रा में किया।

दोपहर में क्रियामण्डप में श्री 108 वृहद शांति महापूजन सम्पन्न हुआ। रात्रि भक्ति में श्री प्रदीप जी ढालावत एवं दिलीपजी बाफना पधारे एवं भक्ति गीतों से भक्ति संध्या को भक्तिरंग से रंगीन किया।

दिनांक 21 फरवरी को प्रातःकाल शुभ बेला में पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में भव्य द्वारोद्घाटन बड़ी धूमधाम से किया गया। प्रभु श्री पार्श्वनाथजी के जयकारों से गगन मंडल गुंजायमान हुआ। दिन में श्री सत्तरभेदी पूजा पढ़ाई गई। रात्रि में श्री राजेन्द्र करनपुरिया एवं दीपक करनपुरिया ने भक्ति संध्या में भक्ति गीतों की सरिता प्रवाहित की। इस अवसर पर नगर के एवं अन्य पधारे भक्तों ने भी प्रभु भक्ति के गीतों की सुन्दर प्रस्तुतियाँ दीं।

सम्पूर्ण महा-महोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास एवं उमंग के साथ मनाया गया। प्रतिदिन भक्तामर, प्रवचन, पूजा के कार्यक्रमों में चांदी के सिक्कों की प्रभावना वितरित की गई। लाभार्थी परिवारों द्वारा समस्त भक्तों एवं नगरवासियों के लिए स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया। पधारे हुए अतिथियों का बहुमान माला, शाल, श्रीफल एवं चांदी के सिक्के भेंट कर किया गया। इस महामहोत्सव ने राजस्थान के गौरवशाली इतिहास में एक और स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ा.

(इस महामहोत्सव का शाश्वत धर्म द्वारा विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है,जिसमें सम्पूर्ण उत्सव का विस्तृत एवं सचित्र वर्णन होगा)

बागरा में गुरुदेव के चातुर्मास हेतु मालवा की विनती हिल्लोर

बागरा। सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का आगामी चातुर्मास मालवा में आयोजित करने के लिए श्रद्धालुओं की गुरुभक्ति पुनः श्रद्धा की हिलोरें लेने लगी हैं। गुरुदेव के चातुर्मास के लिए मालवा के श्रीसंघों ने गाजे-बाजे के साथ बागरा की धरा पर पहुंचकर सामूहिक विनती प्रस्तुत की। गुरुभक्तों की भक्ति से पूज्य आचार्यश्री भी अभिभूत हुए।

श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ म.प्र. इकाई व श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की प्रदेश इकाई के आह्वान पर युग प्रभावक आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का आगामी वर्षावास मालवा की धरा पर कराए जाने हेतु सामूहिक विनती प्रस्तुत की गई। बागरा में आचार्य देवेश की पावन निश्रा में आयोजित महा शतकोत्सव महोत्सव में मालवा के विभिन्न श्री संघों ने गाजे-बाजे के साथ पहुंचकर गुरुदेव के चरणकमल में चातुर्मास की भावभरी विनती की। श्रीसंघ के प्रदेश अध्यक्ष श्री सुरेश तांतेड़ एवं परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष श्री सुशील गीरिया ने अपने संबोधन में कहा कि मालवा की माटी गुरुदेव के चातुर्मास के लिए पलक पावड़े बिछाकर तैयार है। मालवा श्रीसंघों से गुरुदेव का विशेष लगाव है।

परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने आशीर्वचन में फरमाया कि मालवा श्री संघों की शक्ति व भक्ति एक मिसाल है। जहाँ तक चातुर्मास का प्रश्न है, जहाँ अंजल होगा वहां हम चातुर्मास करेंगे। मालवा जिन शासन प्रभावना के कार्यों को पूर्ण करने हेतु निश्चित समय पर हमारा प्रवेश होगा। गुरुदेव ने अपने उद्बोधन में बागरा श्रीसंघ के महत्व को भी उल्लेखित किया। इस अवसर पर मालवा के विभिन्न संघों के प्रतिनिधियों ने अपनी सामूहिक भावना प्रकट की। कार्यक्रम में परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशजी धारीवाल, श्री ज्ञानचंदजी मेहता (खाचरौद), श्री बाबूलालजी मामा, श्री धर्मचंदजी नांदेचा, श्री माणकचंदजी जैन (महिदपुर), श्री राजेन्द्र जी जैन (बड़नगर), श्री दिनेश जी मामा, श्री ब्रजेश जी बोहरा, श्री मोहित जी तांतेड़ भी उपस्थित थे।

---

* **बदनावर ।** 80 वें जन्मदिवस पर परिषद परिवार बदनावर द्वारा प्रातः स्नात्रपूजन एवं गुणानुवाद सभा आयोजित की गई एवं शाम को गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की आरती धूमधाम से उतारी गई । गुरुमंदिर को दीपक से सजाया गया । आचार्य श्री के जन्मोत्सव के उपलक्ष में ही दिनांक 20.12.2015 वार रविवार को शाखा परिषद द्वारा स्थानीय गौशाला में लगभग 1 क्विंटल गेहूँ की लापसी एवं घास गायों को खिलाई । इस अवसर पर गौशाला का ट्रस्टमंडल भी उपस्थित था ।

बदनावर में गुरूदेवश्री का 63 वां दीक्षा दिवस राष्ट्रीय परिषद निर्देशानुसार भव्य स्नात्रपूजा के साथ धूमधाम से मनाया गया ।

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.की

राजस्थान विहार यात्रा

फरवरी 2016

क्र.	दिनांक	गांव
1.	22.02.2016	बागरा
2.	23.02.2016	बागरा
3.	24.02.2016	सियाणा
4.	25.02.2016	सियाणा
5.	26.02.2016	आकोली
6.	27.02.2016	साथू+सूरा
7.	29.02.2016	सरत
8.	29.02.2016	मोदरा

मार्च 2016

क्र.	दिनांक	गांव
1.	01.03.2016	बोरटा
2.	02.03.2016	68 जिनालय
3.	03.03.2016	68 जिनालय
4.	04.03.2016	68 जिनालय
5.	05.03.2016	68 जिनालय
6.	06.03.2016	68 जिनालय
7.	07.03.2016	68 जिनालय
8.	08.03.2016	68 जिनालय
9.	09.03.2016	धाणसा
10.	10.03.2016	थलवाड़
11.	11.03.2016	पांथेड़ी
12.	12.03.2016	उन्नड़ी
13.	13.03.2016	पोसाणा
14.	14.03.2016	सुराणा
15.	15.03.2016	दाधाल
16.	16.03.2016	-
17.	17.03.2016	धुमड़िया
18.	18.03.2016	-
19.	19.03.2016	भाण्डवपुर
20.	20.03.2016	भाण्डवपुर
21.	21.03.2016	भाण्डवपुर
22.	22.03.2016	भाण्डवपुर
23.	23.03.2016	भाण्डवपुर
24.	24.03.2016	भाण्डवपुर
25.	25.03.2016	भाण्डवपुर
26.	26.03.2016	मेंगलवा
27.	27.03.2016	चौराऊ
28.	28.03.2016	सायला
29.	29.03.2016	सायला
30.	30.03.2016	खेतड़ा
31.	31.03.2016	बाकरा रोड़

अप्रैल 2016

क्र.	दिनांक	गांव
1.	01.04.2016	विहार
2.	02.04.2016	विहार

3.	03.04.2016	विहार
4.	04.04.2016	विहार
5.	05.04.2016	विहार
6.	06.04.2016	विहार
7.	07.04.2016	विहार
8.	08.04.2016	भीनमाल
9.	09.04.2016	भीनमाल
10.	10.04.2016	भीनमाल
11.	11.04.2016	72 जिनालय
12.	12.04.2016	72 जिनालय
13.	13.04.2016	72 जिनालय
14.	14.04.2016	नवपद ओली
15.	15.04.2016	नवपद ओली
16.	16.04.2016	नवपद ओली
17.	17.04.2016	नवपद ओली
18.	18.04.2016	नवपद ओली
19.	19.04.2016	नवपद ओली
20.	20.04.2016	नवपद ओली
21.	21.04.2016	नवपद ओली
22.	22.04.2016	चातुर्मास घोषणा
23.	23.04.2016	
24.	24.04.2016	एमएसजी भीनमाल
25.	25.04.2016	एमएसजी भीनमाल
26.	26.04.2016	एमएसजी भीनमाल
27.	27.04.2016	एमएसजी भीनमाल
28.	28.04.2016	एमएसजी भीनमाल
29.	29.04.2016	एमएसजी भीनमाल
30.	30.04.2016	एमएसजी भीनमाल

सुन लो विनती

मेरी सुनलो, विनती आज,
मेरे गुरुवर, जयन्त राज!
तेरे चरणे आये आज,
श्रीसंघ करे यह काज।
तुम दे दो, हमको आस,
रतलाम चातुर्मास आज।
मेरी सुनलो, विनती आज,
मेरे गुरुवर, जयन्त राज ।1।
हो गये हैं, अड़तीस साल,
जब थे मुनिवर आप।
हमने नहीं देखा ताज,
मेरे गुरुवर, सिरताज।
मेरी सुनलो, विनती आज,
मेरे गुरुवर, जयन्त राज ।2।
तेरी एक नजर के प्यासे,
हम भी हैं, गुरुवर आज।
इस बार दूर कर दो,
ये रत्नपुरी की प्यास।
मेरी सुनलो, विनती आज,
मेरे गुरुवर, जयन्त राज।3।

– नीलेश लोढ़ा, रतलाम

वर्ग पहेली 47

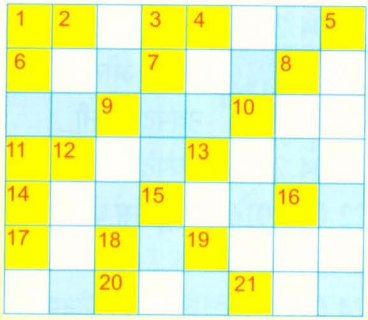

– साध्वी श्रुतिदर्शनाश्री

दाएं से बाएं

1. पांचवे आरे के अंत तक कौन सा आगम रहेगा?(6)
6. तीन घण्टे का एक होता है? (2)
7. मकड़ियाँ रहने के लिए क्या बनाती हैं?(2)
8. महाराज साहब (मुनिजी) की कपड़े धोने की प्रक्रिया को क्या निकालना कहते हैं। (2)
10. एक प्रकार का ड्रायफ्रुट जो सुखा भी होता है, गीला भी होता है। (3)
11. लोभ, इच्छा, चाहना आदि का पर्यायवाची शब्द? (3)
13. अनन्तनाथ भगवान का लक्षण (चिन्ह) क्या है? (2)
14. हृदय का पर्यायवाची? (2)
15. देना आसान है, किन्तु पालना मुश्किल होता है, क्या?(2)
17. रूप का अभिमान कौन से चक्रवर्ती ने किया था? (3)
19. जयन्तसेन सूरिजी एवं कबीरदासजी की कौन सी रचना प्रसिद्ध है? (4)
21. एकेन्द्रिय जीव को कौन सी इन्द्रिय प्राप्त होती है? (2.1/2)
22. आठ मद में से एक का नाम बताइए? (2)

ऊपर से नीचे

1. दीन-दुःखी जीवों पर क्या करनी चाहिए? (2)
2. सम्यक् दृष्टि जीव के पांच लक्षणों में से एक ? (2)
3. डंडासन से क्या लिया जाता है? (2)
4. कृष्ण महाराज बचपन में क्या करते थे? (2)
5. आचार्य जयन्तसेन सूरिजी म.सा. की जन्मभूमि का नाम? (4)
9. आचार्य पद का आयम्बिल कौन से धान से किया जाता है? (2)
10. शोध, गवेषणा आदि का पर्यायवाची शब्द? (2)
11. इक्कीस (21) तीर्थंकर परमात्मा कौन सी मुद्रा में मोक्ष गए? (4.1/2
12. सात समुद्रघात में से एक का नाम? (3)
13. परिषह कितने होते हैं? (3)
16. एक प्रकार के कोल्ड्रिंक्स का नाम? (3)
18. किसके ऊपर श्रद्धा सम्यक् दर्शन कहलाता है? (2.1/2)
20. वनस्पतिकाय का एक भेद? (2)

उत्तर सीट-46

1 आ	2 नं	3 द		4 स	5 म	र
6 स	ब	ल		7 म	ति	
8 न	र		9 जा			10 म
		11 प्र	ति	12 क्र	13 म	ण
14 सा	15 धू	णा		16 म	हा	न
17 क	ल	म			वी	
ल			18 अ	म	र	

गुरु सप्तमी की रही धूम, धार्मिक आयोजन हुए

राजगढ़। पूज्य गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का जन्म एवं स्वर्गारोहण दिवस स्थानीय श्री जयन्तसेन म्यूजियम परिसर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रातः से ही गुरुदेव के दर्शन-पूजन के लिए गुरुभक्तों का तांता लगना प्रारंभ हो गया। गुरुभक्तों द्वारा आयोजित नवकारसी में हजारों जैन-अजैन गुरुभक्तों ने प्रसादी ग्रहण की। गुरुदेवश्री के जीवन चरित्र पर आधारित झांकी का निर्माण किया गया जिसमें गुरुदेवश्री के जन्म से लेकर व्यापार, दीक्षा, पर्वत पर तपस्या, राजगढ़ में अंतिम देशना, श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर अग्नि संस्कार के दृश्यों को आकर्षक एवं प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया गया। गुरुदेव पर आधारित डाक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया।

दोपहर में श्री राजेन्द्रसूरि गुरुपद महापूजन हुआ। शाम को भक्ति संध्या में श्री मन मधुकर ग्रुप ने गुरुदेव श्री के गीतों की सुंदरतम प्रस्तुतियाँ दीं, जिन्हें सुनकर उपस्थित गुरुभक्त झूम उठे। इस अवसर पर त्रिदिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव पत्रिका के जय जिनेन्द्र लाभार्थी श्री सुरेशचन्द्र पूरणमलजी जैन, मेघनगर का बहुमान ट्रस्ट मंडल द्वारा किया गया। रात्रि में 108 दीपक से गुरुदेव की महाआरती की गई। महोत्सव के दौरान ट्रस्ट मंडल के साथ अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की विभिन्न शाखाओं के सदस्यों ने सराहनीय सेवाएं दीं।

---

* **महिदपुरः–** पूज्य दादा गुरुदेव के 189 वें जन्म दिवस व 109 वें स्वर्गारोहण दिवस के उपलक्ष्य में श्री राजेन्द्र सूरी ज्ञान मंदिर में सुबह से ही दर्शन–पूजन के लिए गुरुभक्तों के आने का

क्रम शुरू हुआ जो देर रात तक चलता रहा। गुरुभक्तों ने गुणानुवाद कर गुरु के उपकारों का स्मरण किया। इस अवसर पर ज्ञान मंदिर में अनेक धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। श्री धुलचंद नाथुलालजी बांठिया परिवार की ओर से श्री आदिनाथ मंडल व श्री राजेन्द्र सूरी महिला मंडल ने प्रातः स्नात्र पूजा पढ़ाई तथा दोपहर में श्री राजेन्द्र सूरि अष्ट प्रकारी पूजन पढ़ाई गई। गुरु प्रतिमा की सुन्दर अंगरचना की गई, जिसका लाभ श्री सुन्दरलाल मेहता परिवार ने लिया। ज्ञान मंदिर में त्रि दिवसीय गुरु मंत्र के जाप का आयोजन हुआ, जिसमें 1, 69, 236 गुरु मंत्रों का जाप किया गया। सर्वाधिक जाप करने वाले आराधकों में श्रीमती रेखा सुरेश छजलानी, श्रीमती थानबाई छजलाणी व श्रीमती सुशीला बेन बांठिया का बहुमान श्री माणकलालजी छाजेड़ परिवार की ओर से किया गया। छाजेड़ परिवार की ओर से रजत अष्ट मंगल गुरु मंदिर में भेंट किया गया। इनका बहुमान श्रीसंघ द्वारा किया गया। रात्रि में गुरुदेव की आरती की गई जिसका लाभ श्री सुरेश छजलानी व श्री राजमल बांठिया परिवार ने लिया। तत्पश्चात् गुरु गुणानुवाद सभा में श्री आर.सी. जैन ने गुरुभक्ति के गीत प्रस्तुत किए। श्री कांतिलाल राठी, श्री ऋषभ जैन, श्री जैनेन्द्र खेमसरा, श्री सुमतीलाल छजलानी, श्री माणकलाल छाजेड़ आदि ने गुरु के गुणों का गुणगान किया। आभार श्री शरद बांठिया ने व्यक्त किया। उक्त जानकारी श्री नरेन्द्र धाड़ीवाल ने दी।

* **हुबली** :– दादा गुरुदेव के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में हुबली के वुडरसिंघी में स्थित पारस पावन तीर्थ पर भव्य मेले का आयोजन किया गया। सुबह लाभार्थी परिवार द्वारा ध्वजा चढ़ाई गई एवं गुरु पद महापूजन किया गया। मुख्य अतिथि विधान परिषद् सदस्य श्रीनिवास माने, श्री शांतिलाल बागरेचा, श्री अचलचन्द जी मांडोत एवं श्री संजय सेठ द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर मेले का शुभारंभ किया गया। हजारों गुरुभक्तों ने तीर्थ में दर्शन, वंदन कर गुरु प्रसादी का लाभ लिया।

---

* **जोधपुर।** मुनि श्री धर्मयशविजयजी एवं ज्योतिषाचार्य श्री व्रजतिकविजय जी आदि ठाणा 2 के सान्निध्य में खेरादी का वास स्थित श्री राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर में गुरु सप्तमी धूमधाम से मनाई गई एवं आठ दिवसीय धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। श्री राजेन्द्र भवन में भक्तामर पाठ, प्रभात फेरी, गुरु गुणानुवाद सभा, गुरु महाराज का पूजन व आरती, आयम्बिल एवं रात्रि में राजेन्द्र मित्र मंडल के तत्वावधान में 108 दीपक से आरती एवं भक्ति की गई। इसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। अन्त में अध्यक्ष श्री पारसराज पोरवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उक्त जानकारी सचिव श्री हीराचन्द भंडारी ने दी।

---

* **विजयवाड़ा ।** पूज्य दादा गुरुदेव के जन्मोत्सव एवं स्वर्गारोहण दिवस के उपलक्ष्य में विजयवाड़ा शाखा द्वारा सामुहिक आयंबिल आराधना की गई एवं 500 गरीबों को भोजन करवाया गया। अन्य धार्मिक आयोजन भी सम्पन्न हुए,जिन्हें परिषद् के सभी कार्यकर्ताओं ने मिलकर सफल बनाया।

---

* **लोनावाला।** स्थानीय श्री राज–राजेन्द्र जयन्तसेन ज्ञान मंदिर में गुरु सप्तमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। प्रातः महिलाओं द्वारा सामुहिक सामायिक की गई एवं गुरु गुण इक्कीसा व गुरु मंत्र का जाप किया गया। सप्तमी महोत्सव का लाभ स्व. श्री देवराजजी ओहरमलजी मरलेचा की स्मृति में चाकणवालों ने लिया। भव्य वरघोड़ा निकाला गया एवं दोपहर में गुरुदेव की अष्टप्रकारी पूजा की गई, जिसका लाभ श्री शंकरलाल चुन्नीलाल जी फुलफगर व श्री रत्नराज ज्वेलर्स ने लिया। रात्रि में गुरुदेव की भव्य आरती का लाभ श्री

शंकरलालजी चुन्नीलालजी फुलफगर परिवार ने लिया। अन्य गांवों के भक्त भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। आसपास के गांवों में तलेगांव, दामाड़े, कामशेत, लोनावणा, नेरल, मोहने, मोहपाड़ा, कल्याण, भिवंडी, मानपाड़ा व पुणे शहर एवं कामजू तीर्थ में भी गुरु सप्तमी पर्व का भव्य आयोजन किया गया।

---

* **उज्जैन ।** अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद्, नमक मंडी उज्जैन शाखा द्वारा पूज्य गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की 189 वीं जयंती, गुरु सप्तमी 11 दिवसीय महोत्सव के रूप में उल्लास से मनाया। पूज्य दादा गुरुदेव की अष्टप्रकारी पूजा, गरबा, मंगल गीत, दीप उत्सव, सामुहिक जाप, सामुहिक सामायिक, महाआरती एवं भक्ति की गई। दादा गुरुदेव की विविध अंगरचना की गई। दिनांक 12 जनवरी को पूज्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. का स्वर्गारोहण दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रातः भक्तांबर पाठ व गुरु इक्कीसा पाठ, स्नात्र पूजा एवं दोपहर में श्री यतीन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। 11 दिवसीय महोत्सव में समाज व परिषद् की समस्त बहनों ने भाग लिया एवं महोत्सव को सफल बनाया। यह जानकारी श्रीमती गुणमाला नाहर ने दी।

---

* **नागपुर।** श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का जयंती महोत्सव श्री सुमतिनाथ मंदिर उपाश्रय में आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत 16 फरवरी 2016 को

गुरुभक्तों द्वारा अष्टप्रकारी पूजा की गई जिसका संचालन श्री नलिन संघवी ने किया। गुरुदेव की आरती के पश्चात् भक्तों को गुरु प्रसादी का वितरण किया गया।

* **पारा ।** पूज्य दादा गुरुदेव के जन्म एवं स्वर्गारोहण दिवस निमित्ते पारा से मोहनखेड़ा तीर्थ पैदल यात्री संघ का आयोजन किया गया। 15 जनवरी 2016 को दो दिवसीय यात्रा के लिए 60 यात्रियों ने पारा मंदिर में पहुंचकर सामुहिक चैत्यवंदन और गुरु वंदन किया एवं पच्चखाण लेकर मोहनखेड़ा तीर्थ के लिए प्रस्थान कर एकासना व वियासने की तपश्चर्या की। 16 जनवरी को प्रातः संघ द्वारा श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के मंदिरजी में प्रवेश किया गया। श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की वंदना कर राज राजेन्द्र तीर्थ दर्शन श्री जयन्तसेन म्यूजियम पर यात्रा का समापन हुआ। उक्त जानकारी परिषद् महामंत्री श्री सुशील छाजेड़ ने दी।

---

* **मन्दसौर ।** गुरुवर श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी की जयंती एवं स्वर्गारोहण दिवस पर नगर में तीन दिवसीय महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। गुरु सप्तमी की संध्या पर श्री राजेन्द्र विलास में हैदराबाद के प्रसिद्ध गायक संयम नाबेड़ा द्वारा गुरु भक्ति के गीतों की प्रस्तुति दी गई, जिन्हें सुनकर उपस्थित गुरुभक्त झूम उठे। महिलाओं द्वारा डांडिया नृत्य किया गया। इस अवसर पर लक्की ड्रा का आयोजन भी हुआ जिसमें अनेक भाग्यशाली महानुभावों ने कई आकर्षक ईनाम प्राप्त किए। तत्पश्चात् 777 दीपों से गुरुदेव की महाआरती की गई। 108 दीपक से गुरुदेव की महा आरती का लाभ श्री वीरेन्द्रकुमार पारसमलजी डोसी परिवार द्वारा लिया गया। प्रातः श्री राजेन्द्र जैन जीव दया समिति द्वारा पशुओं को गुड़ व लाप्सी का आहार कराया गया। प्रभु भक्ति के कार्यक्रम में सर्वश्री गजेन्द्र हींगड़,

पारसमल लोढ़ा, श्री हस्तीमल चपरोत, श्री अशोक कर्नावट, श्री भारत कोठारी, श्री संजय लोढ़ा, श्री सुधीर लोढ़ा, श्री सतीश लोढ़ा, श्री वीरेन्द्र डोसी, तरुण परिषद् के सभी युवा साथी उपस्थित थे। उक्त जानकारी श्री जयेश डांगी ने दी।

---

* **खाचरौद ।** गुरु सप्तमी पर्व स्थानीय गुरु मंदिर में धूमधाम से मनाई गई। प्रातः से ही मंदिर में गुरु भक्तों का तांता लगा रहा। एक दिन पूर्व गुरु मंत्रों का सामुहिक जाप किया गया। इसी अवसर पर स्थानीय श्री जयन्त ज्योति बहु परिषद् द्वारा यतिन्द्र भवन में पू. गुरुदेव के पाट के सम्मुख महिलाओं द्वारा वर्ष भर में अधिक से अधिक सामायिक करने का आह्वान किया गया। 16 जनवरी को प्रातः श्री राजेन्द्र सूरि जैन पौषध शाला से विशाल चल समारोह निकाला गया जिसमें समाज के बच्चे, नवयुवक, महिलाएं एवं समाजजन गुरुदेव के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। मार्ग में गुरुदेव के चित्र के सम्मुख समाजजनों द्वारा गहुली की गई। इसके पश्चात् गुरु गुण इक्कीसा पाठ व गुणानुवाद किया गया। दोपहर में जीव दया समिति व समाजजनों द्वारा गौशाला में गाय को गुड़, खल व चारा खिलाया गया। श्री मांगीलाल पारसमलजी परिवार द्वारा अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। शाम को गुरुदेव की महाआरती उतारी गई। सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री सुरेश मेहता, श्री धर्मचन्द नांदेचा, श्री राजेश भंडारी, श्रीमती कोकिला भारतीय, श्री हर्ष नांदेचा, श्रीमती शोभा मंडोवरा आदि सदस्य उपस्थित थे।

इसी अवसर पर स्थानीय श्री राजराजेन्द्र विद्या मंदिर एवं श्री राज राजेन्द्र जयन्त विद्यापीठ में भी जन्मोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। गुरुदेव के चित्र का पूजन ट्रस्ट अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द मेहता एवं अन्य सदस्यों ने किया। श्रीमती रेखा जैन ने गुरुदेव का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम उपरांत समस्त विद्यार्थियों को मिठाई वितरित की गई। संचालन श्री अमित खेमसरा ने तथा आभार प्राचार्य श्री जितेन्द्र जैन ने प्रकट किया।

---

* **नीमच ।** सम्यक्त्व के ज्ञान के बिना जीवन का कल्याण नहीं। गुरु बिन जीवन का उत्थान नहीं। हम दूसरों के दुःखों को दूर करने का यदि परमार्थ का, पुण्य का कार्य करें तभी गुरु जयंती मनाना सार्थक सिद्ध होगा। यह बात संत श्री उदयमुनि महाराज ने कही। वे श्री पार्श्वनाथ

राजेन्द्र सूरि राजमल पानबाई डूंगरवाल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की जयंती एवं पुण्यतिथि पर आयोजित समारोह में उपस्थित धर्मालुओं को संबोधित कर रहे थे। श्री विजयमुनि म. ने कहा कि श्री राजेन्द्रसूरिजी म.सा. ने सबको विश्व मैत्री का पाठ पढ़ाया है। संत किसी भी पंथ का हो, लेकिन धर्म-दर्शन, संस्कृति और संदेश सार्वभौमिक होता है।

साध्वी श्री गुणरंजना श्रीजी ने कहा कि संसार के दुःख और सुख में से सुख, सद्गुरु की शरण में जाने से मिलेगा। गुरु बिना विवेक नहीं मिलता। साध्वी श्री रत्नत्रया श्रीजी म.सा. मे कहा कि श्री राजेन्द्रसूरि जी जैसी महान हस्ती का जन्म सदियों में एक बार होता है। गले में हार का, मंदिर में द्वार का, घर में कार का महत्व देखते हैं, उसी प्रकार दुनिया में गुरु का बहुत महत्व है।

श्री राजेन्द्र डूंगरवाल ने कहा कि दादा गुरुदेव जैन धर्म के उद्धारक थे। इस अवसर पर श्री विजय छाजेड़ द्वारा सामुहिक गुरुवंदना करवाई गई। सुनिता बेगानी एवं सारिका मेहता ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विधायक श्री दिलीपसिंह परिहार, श्री मनोहर लोढ़ा, श्री अरविंद बैरागी, श्री अनिल नागौरी, श्री सुशील डूंगरवाल, श्री उमरावसिंह गुर्जर, श्री प्रकाश मानव, श्री वीरेन्द्र लोढ़ा, श्री महेन्द्र बम्ब, श्री ज्ञानचंद डोसी, श्री शैलेन्द्र करणपुरिया, श्री वीरेन्द्र नागोरी, श्री मुकेश चौधरी, श्री केसरीमल कोठीफोड़ा, श्रीमती आशा सांभर, श्रीमती इंदु छाजेड़, श्रीमती आभा कोठारी आदि उपस्थित थे। संचालन श्रीमती संगीता जारोली ने तथा आभार श्री अरविन्द नागौरी ने माना। कार्यक्रम का समापन दादा गुरुदेव की 108 दीपक से महाआरती के साथ हुआ। आरती का लाभ श्री माणकचंदजी रतनलालजी सांभर परिवार ने लिया। दोपहर नवकार मंत्र आराधना एवं सकल जैन समाज का स्वामी वात्सल्य राठौर परिसर नीमच पर हुआ। आयोजित वरघोड़े में जनसैलाब उमड़ पड़ा।

---

* **शाजापुर।** गुरु सप्तमी के पावन प्रसंग पर मुनिश्री संयमरत्न विजयजी एवं मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी म.सा. की निश्रा में प्राच्य विद्यापीठ शाजापुर में एक व्याख्यान माला का आयोजन

किया गया। इसका निर्देशन श्री सागरमलजी जैन ने किया। प्रो. श्री अंबिकादत्त जी शर्मा ने 'वर्तमान युग में धार्मिक सहिष्णुता की आवश्यकता' विषय पर व्याख्यान दिया। तत्पश्चात् मुनिश्री संयमरत्न विजयजी द्वारा लिखित पुस्तक 'संलेखना मरणकला है, आत्महत्या नहीं' का विमोचन किया गया।

* **पेदमीरम ।** प्राचीन श्री पेदमीरम तीर्थ पर गुरु सप्तमी महोत्सव भव्यातिभव्य रूप में मनाया गया। बड़ी संख्या में गुरु भक्तों ने पधारकर सेवा, पूजा, नवकारसी, आयंबिल व एकासणा आदि धर्म कार्यों का लाभ लिया। गुरुदेव के वार्षिक अखण्ड दीपक का चढ़ावा शा श्री चंपालालजी छोगाजी भंडारी परिवार, नरसापुर ने लिया। शाम की आरती का लाभ शा श्री जीतमलजी अमीचंदजी वेदमुथा परिवार विजयवाड़ा वालों ने लिया। महोत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री श्रेयांसनाथ महावीर जैन सेवामंडल नरसापुर ने की।

म्यूजियम पर ध्वजारोहण सम्पन्न

राजगढ़। श्री जयन्तसेन म्यूजियम मोहनखेड़ा स्थित श्री जयन्त ज्योति कीर्ति स्तम्भ में प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाओं की 11 वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ। साध्वीश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में ॐ पुण्याहं-पुण्याहं के जयघोष के साथ ध्वजारोहण के लाभार्थी कवराड़ा (राज.) निवासी श्रीमती कान्ताबेन पारसमल गोलगोता परिवार ने ध्वजारोहण किया। इसके पूर्व ध्वजदण्ड का अष्टप्रकार पूजन किया गया। विधिकारक हंसमुख भाई ने विधि सम्पन्न कराते हुए श्री सत्तरभेदी पूजन पढ़ाया।

इस अवसर पर ट्रस्ट मंडल के कोषाध्यक्ष श्री धरमचन्द व्होरा, ट्रस्टी श्री मोतीलाल हरण, श्री राजेन्द्र भंडारी, परिषद् के राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री दिनेश मामा, प्रबंध श्री विनोद जैन सहित राजगढ़ श्रीसंघ के सदस्यगण उपस्थित थे। ध्वजारोहण अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं को ट्रस्ट मंडल की ओर से नवकारसी करवायी

रतलाम नगरे

अखंड गुरुमंत्र जाप

का सफल आयोजन सम्पन्न

रतलाम। वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा प्रदत्त समस्त मनोकामनापूरक गुरुमंत्र 'ॐ ह्रीं श्रीँ अर्हम् गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरिश्वर गुरुभ्यो नमः' के एक दिवसीय अखंड जाप का आयोजन रतलाम परिषद् शाखा द्वारा किया गया।

नीमवाला उपाश्रय पर आयोजित इस अनूठे अनुष्ठान में दिनांक 17 जनवरी को प्रातः 6.00 बजे गुरुदेव के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन कर जाप का शुभारंभ राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री श्री सुशील जी छाजेड़, परिषद् अध्यक्ष पंकज राठौर व सचिव राजकमल दुग्गड़ ने किया। 24 घंटे अनवरत चले इस महाजाप के आयोजन में संघ एवं परिषद् के लगभग 159 परिवारों ने लाभ लिया। महिला परिषद्, तरुण एवं बालिका परिषद् ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जाप करने वाले महानुभावों को संघ एवं परिषद् परिवार की ओर से 20-20 रु. की प्रभावना वितरित की गई । इस आयोजन को सफल बनाने में सर्वश्री नीलेशजी लोढ़ा, अभय बरबोटा, राजेश खाबिया, राजेन्द्र लुणावत, विनय सुराणा, सतीश खेड़ावाला, सन्नी पोरवाल, वैभव गादिया, नितेश तलेरा, सुमित सुराणा, कांतिलाल जी सरसीवाला, सुरेन्द्रजी गंग, मुकेश ओरा, पंकज खेड़ा, प्रदीप श्रीमाल, अभिषेक खाबिया, राजेश बम, सुरेश बरमेचा, अभय सकलेचा, मांगीलालजी भंडारी, नरेन्द्र घोचा, मन्नालाल चोपड़ा, संजय कोठारी, लोकेश ओस्तवाल, धनसुख भंडारी, शेखर घोचा, राकेश घोचा, धनपाल ओरा । महिला परिषद् से अध्यक्ष ममता भंडारी, सचिव रमिला सकलेचा, मंजु आंचलिया, कल्पना ओरा, पुष्पा घोचा, रीना कोठारी, शकुन्तला दुग्गड़ आदि समाजजनों की उल्लेखनीय भूमिका रही। रात्रिकाल में जाप अखंडता बनाए रखने में परिषद् के साथियों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हुए सम्पूर्ण रात्रि जाप किए। जाप का समापन अगले दिन प्रातः 6.00 बजे गुरुवंदन के साथ हुआ। उक्त जानकारी परिषद् सचिव राजकमल दुग्गड़ ने दी।

परिषद प्रांगण से

भव्य पक्षीधाम का उद्घाटन सम्पन्न

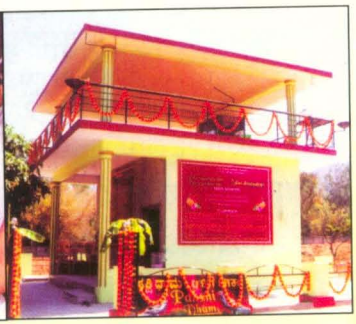

मैसूर। पं. श्री रत्नज्योत विजयजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में 31 जनवरी 2016 को श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् एवं श्री जय जिनेन्द्र ग्रुप मैसूर द्वारा पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था हेतु निर्मित दो मंजिला चबूतरे का उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि मैसूर पुलिस कमिश्नर श्री बी.दयानन्दजी, मैसूर संघ अध्यक्ष श्री जेवंतराज जी, मंत्री श्री अशोक जी, श्री राजेन्द्र गुरु मंदिर ट्रस्ट के सचिव श्री कांतिलालजी, पिंजरापोल के अध्यश्र श्री देवचंदजी सालेचा, श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री ओ.सी. जैन, दक्षिण भारत परिषद् के अध्यक्ष शा. श्री भेरूलालजी सेठ आदि उपस्थित थे। पधारे हुए दानदाताओं ने पक्षियों के लिए 200 बोरी अनाज प्रदान किया। इस अवसर पर मैसूर संघ के सदस्य एवं श्री राजेन्द्र सूरि परिषद् के सभी सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री अमृतलाल जैन एवं श्री अरविंद बोहरा ने किया।

*** हुबली ।** जालोर सिरोही के सांसद श्री देवजी पटेल एवं हावेरी सांसद श्री शिवकुमार उदासी एक कार्यक्रम में हुबली पहुंचे। इस दौरान अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् हुबली के मंत्री नीलेश जैन, सहमंत्री श्री संजय सेठ आदि ने सांसद द्वय को रेलमंत्री के नाम ज्ञापन प्रेषित कर हुबली से जोधपुर या बाडमेर वाया जालोर भीनमाल नई रेल शुरू करने एवं सप्ताह में दो दिन चलने वाली दादर-बीकानेर ट्रेन को दैनिक करने की मांग

की। दोनों सांसदों का श्री मुकेश तांतेड़ एवं राजू जैन ने शाल, माला से बहुमान किया। उक्त जानकारी श्री नीलेश जैन ने दी।

* **अलीराजपुर ।** अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद् शाखा अलीराजपुर के चुनाव सर्वानुमति से सम्पन्न हुए। इसमें अध्यक्ष श्रीमती सुनीता (जे) जैन, उपाध्यक्ष श्रीमती निकिता (एम.) जैन, सचिव श्रीमती कोमल (ओ.) जैन, कोषाध्यक्ष श्रीमती किरण (आर.) जैन को चुना गया।

श्री पीपाड़ा अध्यक्ष एवं पगारिया सचिव मनोनीत

उज्जैन। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा नयापुरा उज्जैन के द्विवार्षिक चुनाव में सर्वानुमति से श्री मनीष पीपाड़ा अध्यक्ष एवं श्री योगेश पगारिया सचिव मनोनीत किए गए।

श्री मनीष पीपाड़ा
अध्यक्ष

श्री योगेश पगारिया
सचिव

हनुमान गढ़ी में आयोजित पारिवारिक मिलन समारोह में चुनाव सम्पन्न हुए। अन्य पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष पद पर नवीन गिरिया, कांति सकलेचा, राकेश चत्तर, सहसचिव पद पर मनोज जैन, कोषाध्यक्ष राजेश चपलोद, शिक्षा मंत्री एवं शाश्वत धर्म प्रभारी पंकज रूणवाल, संगठन मंत्री राजेश चत्तर, सांस्कृतिक एवं स्वास्थ्य मंत्री अर्पित चपलोद, पीआरओ विजय डांगी, प्रचार मंत्री मुकेश सकलेचा मनोनीत किए गए हैं। साथ ही सोहन आंचलिया, गजेन्द्र सकलेचा, प्रशांत लुक्कड़, राजेश पीपाड़ा, आशीष पीपाड़ा, दीपेश सकलेचा, संजय सकलेचा बड़ावदा, आनन्द चत्तर, निलेश संघवी, लोकेश लोढ़ा, प्रतीक लुक्कड़, शैलेन्द्र चौधरी कार्यकारिणी में तथा संरक्षक मंडल में कपिल गिरिया, राजेश पगारिया, प्रवीण गादिया, अतुल चत्तर, राहुल चपलोद, पुष्पेन्द्र जैन,पारस गादिया एवं राजेन्द्र पगारिया मनोनीत किए गए हैं।

इस अवसर पर परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष सुशील गिरिया, संघ के राजमल चत्तर, प्रकाश गादिया, सुरेश पगारिया, कपिल सकलेचा, राजेन्द्र पटवा, रूपेश चत्तर आदि उपस्थित थे। उक्त जानकारी अध्यक्ष श्री मनीष पीपाड़ा ने दी।

गरीबों के भोजन की व्यवस्था सुचारू

विजयवाड़ा। स्थानीय शाखा द्वारा प्रत्येक 15 दिन में गरीबों को भोजन करवाने की योजना यथावत चल रही है। 20 दिसम्बर 2015 को परिषद् द्वारा चिगुरु आश्रम जाकर 140 लोगों को भोजन कराया गया। 3 जनवरी 2016 को प्रेमदान में 120 बच्चों को स्वल्पाहार करवाया गया।

मधुकर संस्कार ज्ञानायतन भाग-4

परमपूज्य गुरुदेव श्री की पावनकारी निश्रा में आगामी 24 अप्रैल से 30 अप्रैल 2016 तक सात दिवसीय 'मधुकर संस्कार ज्ञानायतन भाग 4' का शुभारंभ हो रहा है। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा संचालित इस ज्ञानायतन में अवधान, संवेदनामय भक्ति, प्रवचन धारा, गुरु मिलन, संयम संवेदन, वैराग्य की वाचना, भोजन शुद्धि, अभिषेक धारा, मेरु महोत्सव, पिरामिड महोत्सव, सामुहिक पौषध सहित विभिन्न विषयों का ज्ञान दिया जाएगा। विभिन्न प्रतियोगिताएं भी होंगी। ज्ञानायतन में एक दिन विशेष रूप से 'श्रावक दिवस' के रूप में मनाया जाएगा।

समस्त शाखा परिषदें अपने गांव, नगर से पूज्य गुरुदेव द्वारा संचालित इस ज्ञानायतन में 12 से 24 वर्ष की आयु तक के तरुणों को अवश्य भिजवाएं। प्रवेश हेतु गुजरात में पक्षाल कोरडिया 90334-76842, म.प्र. में पवन कटारिया 099070-30936, महाराष्ट्र में अभिषेक बोहरा 096191-69311, दक्षिण भारत में किरण वाणीगोता 081479-28849, राजस्थान दर्शित -097845-98844 से सम्पर्क कर सकते हैं। साथ ही माता-पिता से भी निवेदन है कि जब वे आचार्यश्री के चातुर्मास घोषणा पर्व पर भीनमाल पधारें तो बच्चों का साथ लाकर नाम दर्ज कराएं।

बापू की अहिंसा

बापू के 'सेवाग्राम आश्रम' में आभा गांधी का विवाह था। सरोजिनी नायडू ने बापू से पूछा-'बापू, आभा कितनी सुन्दर है, किन्तु आप उसे विवाह में भी आभूषण तो पहनने नहीं देंगे। यदि आप आज्ञा दें तो उसे फूलों से ही सजा दूँ।' बापू ने कहा-'उसे फूलों से अवश्य सजा सकती हो, किन्तु गिरे हुए फूलों से, क्योंकि फूल तोड़ने में तुम्हें आनन्द आयेगा, किन्तु उस वनस्पति को कितना कष्ट होगा? इसका ध्यान रखना भी तो जरूरी है।' नायडू विवश हो, चुप रह गई।

मांगना ही नहीं है

जीवन के संबंध में जो भी खोज की जा सकी है उसमें सबसे बड़ी खोज यही है- सुखी होना चाहते हो, तो सुख मत माँगो। जो माँगोगे वही खो जायेगा। जो नहीं माँगोगे वही मिल जायेगा। माँगकर तो बहुत देख लिया, अब नहीं माँगकर भी देख लीजिए।

आचार्य श्री नवरत्न सागर जी का स्वर्गवास

राजगढ़। जैन समाज में 'मालवा भूषण' के नाम से विख्यात पू. आचार्य श्री नवरत्नसागर जी म.सा. का दिनांक 29 जनवरी 2016 को वेल्लूर शहर के निकट आकस्मिक देवलोक गमन हो गया। पूज्य श्री चैन्नई चातुर्मास सम्पन्न कर बैंगलोर की ओर विहार कर रहे थे। 1954 में संयम जीवन लेने के पश्चात् 73 वर्ष की आयु में भी वे सम्पूर्ण विहार पैदल ही करते थे। आचार्यश्री के आकस्मिक स्वर्गवास से देशभर के श्रावकगण स्तब्ध रह गए।सम्पूर्ण जैन समाज में शोक की लहर फैल गई। पूज्यश्री की पार्थिव देह को रात्रि में चैन्नई लाया गया, जहां भक्तों ने उनके अंतिम दर्शन किए। इसके पश्चात् अंतिम संस्कार हेतु पार्थिव देह को श्रावक वर्ग द्वारा चार्टर प्लेन से इन्दौर होते हुए राजगढ़ (म.प्र.) लाया गया। गुरुदेव की अंतिम यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई भोपावर तीर्थ पहुंची, जहां हजारों भक्तों ने उन्हें नम आँखों से भावभीनी बिदाई दी और अंतिम संस्कार किया।

आचार्यश्री द्वारा मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, पं. बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश सहित कई स्थानों पर धर्म कार्य सम्पन्न कराने हेतु लगभग 2 लाख कि.मी. की पैदल यात्रा की गई। वे 194 वीं ओली आराधना कर रहे थे। आपश्री द्वारा हजारों लोगों को व्यसनों का त्याग करने का संकल्प दिलाया गया।

* **महिदपुर।** आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी म.सा. के आकस्मिक देवलोक गमन पर जैन समाजजनों द्वारा दोपहर तक अपना कारोबार शोक स्वरूप बंद रखा गया। श्री शांतिनाथ आराधना भवन में गुणानुवाद सभा सम्पन्न हुई जिसमें त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के आचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के संवेदना पत्र का वाचन श्री माणकलाल जी छाजेड़ ने किया।

* **जोधपुर।** दो हजार चार सौ बहत्तर वें (2472) ओसवाल स्थापना दिवस पर राष्ट्रीय स्तर पर 'देश की प्रगति में ओसवाल समाज का योगदान' विषय पर लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। राष्ट्रीय लेखन प्रतियोगिता में देश के विभिन्न भागों से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इनमें जोधपुर के श्री अमृतराज गोलिया ने प्रथम, इचलकरणजी की श्रीमती पायल धीरज पारख ने द्वितीय तथा भीनासर (बीकानेर) के श्री सुनील कुमार वेद ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

* **बाड़मेर ।** अ.भा.श्री जैन श्वे.खरतरगच्छ महासंघ के तत्वावधान में मोती डूंगरी दादावाड़ी जयपुर में श्री पूर्णानंदसागर जी म.सा. को पंच परमेष्ठी के तृतीय आचार्य पद से सुशोभित किया गया। महोत्सव अन्तर्गत 13 फरवरी 2016 को बाड़मेर नगर के मुमुक्षु पवन छाजेड़ की भगवती दीक्षा का आयोजन भी किया गया।

* **सनवाड़ा।** आचार्य श्री रविरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में कलिकुंड तीर्थ से श्री शत्रुञ्जय महातीर्थ का चौदह दिवसीय छःरिपालक संघ सम्पन्न हुआ। इसका लाभ श्री नेमीचंद गोवाजी वाडेलिया सोलंकी परिवार सनवाड़ा ने लिया।

मंत्रोच्चार के साथ चढ़ाई ध्वजा

राणापुर। पूज्य आचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठित श्री सीमंधर जिनालय की द्वितीय वर्षगांठ पर साध्वीश्री दर्शनरेखा श्रीजी की सान्निध्यता में त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस 28 जनवरी 2016 को श्री सीमंधर स्वामी पंच कल्याणक पूजन किया गया। द्वितीय दिवस को मंदिर के शुद्धिकरण हेतु अट्ठारह अभिषेक किये गये। तृतीय दिवस पर श्री सत्तरभेदी पूजा का आयोजन किया गया एवं ध्वजा के लाभार्थी परिवार श्री सुजानमल कटारिया, श्री रखबचंदजी कटारिया, श्री सज्जनलालजी कटारिया परिवार के निवास स्थल से प्रातः ध्वजा का विशाल चल समारोह निकाला गया। ध्वजा की पूजन कर ध्वजा चढ़ाई गई। लाभार्थी परिवार द्वारा नवकारसी एवं स्वामी वात्सल्य भी रखा गया। इस अवसर पर श्री सीमंधर स्वामीजी को आंगी चढ़ाई गई जिसका लाभ श्रीमती शांताबाई बाबुलालजी भंसाली परिवार, दाहोद ने लिया। जिन मंदिर में श्री देवेन्द्र शैतानमल नाहर परिवार ने तिगड़ा, एवं श्री इंदरमल लुणाजी कटारिया परिवार ने भंडार भेंट किया। ट्रस्ट द्वारा सभी लाभार्थियों का बहुमान किया गया।

---

* **सायला ।** समाजसेवी श्री अचलचन्द जैन के पेंशन एवं पोवी. फंड राशि से चलने वाली संस्था ने दिनांक 1 जनवरी 2016 को 20 वर्ष पूर्ण कर 21वें वर्ष में प्रवेश किया है। इस अवसर पर समीपस्थ क्षेत्रों के जरूरतमंद लोगों में स्टील की 500 बाल्टियों का वितरण किया गया। इस सेवा केन्द्र द्वारा निरंतर जरूरतमंद बच्चों को छात्रवृत्ति, चिकित्सा सहायता, पशु-पक्षियों के लिए दाने की व्यवस्था की जाती रही है।

---

* **अलीराजपुर ।** प्राचीन जैन तीर्थ श्री लक्ष्मणी तीर्थ की स्थापना दिवस वर्षगांठ प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी धूमधाम से मनाई गई। मूलनायक श्री पद्म प्रभुस्वामी की ध्वजा का लाभ श्री कुंदनलालजी कन्हैयालालजी काकड़ीवाल, श्री आदेश्वर भगवान की ध्वजा का लाभ श्री सुरेन्द्रकुमार मुन्नालालजी जैन एवं भगवान श्री

महावीर स्वामीजी की ध्वजा का लाभ श्री प्रफुल्लकुमारजी बसंतीलालजी जैन परिवार ने लिया। तत्पश्चात् पूजन एवं स्वामी वात्सल्य का आयोजन भी हुआ जिसका लाभ श्री देवीचंदजी फूलचंदजी जैन ने लिया। दिनांक 15 दिसम्बर 2015 को रात्रि में परिषद् की चारों शाखाओं द्वारा गुरुमंत्रों का जाप किया गया। सभी सदस्यों ने उत्साह से जाप में भाग लिया एवं आयोजन को सफल बनाया।

---

* **रतलाम ।** श्री नीमवाला उपाश्रय में 17 जनवरी 2016 को परिषद् शाखा द्वारा गुरु मंत्रों का अखंड सामुहिक जाप किया गया। प्रातः राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री श्री सुशील जी छाजेड़, परिषद् अध्यक्ष श्री पंकज राठौर, सचिव श्री राजकमलजी दुग्गड़ ने गुरुदेव के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित कर जाप का शुभारंभ किया। लगभग 159 परिवारों ने अनवरत 24 घंटे जाप में भाग लिया। इसमें महिला परिषद्, तरुण परिषद्, बालिका परिषद् के सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सर्वश्री नीलेश जी लोढ़ा, श्री अभय बरबोटा, श्री राजेश खाबिया, श्री राजेन्द्र लुणावत, श्री विनय सुराणा, श्री सतीश खेड़ावाला ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उक्त जानकारी परिषद् सचिव श्री राजकमल दुग्गड़ ने दी।

अभिमानी का अंत

एक जंगल में बांस के वृक्ष के साथ ही आम का पेड़ भी स्थित था। बांस का कद ऊँचा था और आम का छोटा। बांस अक्सर आम के वृक्ष का मजाक उड़ाते हुए कहता, 'अरे मैं कितनी तेजी से बढ़ा और एक तुम हो जो छोटे रह गए।' इस पर आम बोला, 'यह तो अपनी प्रकृति है। कोई छोटा होता है तो कोई बड़ा। किन्तु कद या शरीर विशाल होने से ही कुछ नहीं होता। काम भी विशाल और महान होने चाहिए। लंबे या बड़े होने का यह अर्थ भी नहीं कि वह छोटी चीजों या छोटे कामों को घृणित नजर से देखें या या वैसा होने या करने में अपना अपमान समझे।' किन्तु बांस को उसकी बातें समझ नहीं आती।

कुछ समय बाद आम के वृक्ष पर मंजरियां लगीं और वह आम के फलों से लद गया। फलों से लदा होने के कारण वह झुक गया और बांस लंबा होकर सूखता चला गया। बांस का अभिमान अब भी कम नहीं हुआ था। वह आम को देखकर बोला, 'अरे मुझे देखो, मैं दूर से ही नजर आता हूँ और एक तुम हो जो फलों से लदकर झुके जा रहे हो।' अभी उनकी बातें खत्म ही हुई थीं कि यात्रियों का एक झुंड वहाँ आ पहुँचा। फलों से लदे आम के वृक्ष को देखा तो वहीं विश्राम करने लगे। रात हो गई। रात के बचाव के लिए उन्होंने आग जलाने की सोची। पास ही खड़े बांस के वृक्ष को काटकर लकड़ियों का ढेर लगा दिया। आम का वृक्ष अब भी शांत था और राहगीरों को अपनी छांव तले विश्राम दे रहा था, जबकि अभिमानी बांस का अंत हो चला था।

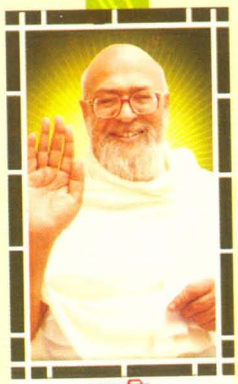

NON VIOLENCE
TRUTH
NON STEALING
CELIBACY
NON POSSESSION
MSG
प्रभु भक्ति
अनुभव ज्ञान
प्रवचन धारा
प्रश्नोत्तरी
गुरुसेवा
प्रतियोगीता
समूह सामायिक
संवेदनामय संगीत
तत्व दर्शन
जय जय ज्ञानायतन
જય જય જ્ઞાનાયતન
JAI JAI GYANAYATAN
मधुकर संस्कार GYANAYATAN-4
Can be a change your life
• शुभ स्थल •
श्री 72 जिनालय तीर्थ, भीनमाल
MSG-4 मे JOIN होने के लिए अपना नाम,पता और मोबाईल नंबर अपने STATE CONTACT NO. पर WHATSAPP या SMS करे ।
GUJ. Paxal Kordiya 9033476842
M.P. Pawan Kataria 9907030936
MAH. Abhishek Bohra 9619169311
SOUTH Kiran Vanigota 8147928849
RAJ. Darshit Jain 9784598844
MSG-4
मधुकर संस्कार
GYANAYATAN
24TH APRIL TO 30TH APRIL 2016
12 Year TO 24 Years ONLY GENTS
• पावन सानिध्यदाता •
सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति, MSG संस्थापक, युग प्रभावक
राष्ट्रसंत श्रीमद विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म. सा. 'मधुकर'
• संचालक •
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार
• आयोजक •
संघवी सुमेरमलजी हजारीमलजी लुक्कड़ परिवार
भीनमाल । मुंबई

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड़ (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि..... दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिंम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 100

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज
राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.
के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का
कोटी - कोटी वंदना

संघवी शांतिलाल रामाणी

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	:	अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता	:	अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक	:	शाश्वत धर्म
चीफ आर्गनैजर	:	आ.प्र. बुलियन गोल्ड सिल्वर एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
शाश्वत अध्यक्ष	:	नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
अध्यक्ष	:	श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Nellore - 524 001 (A.P)

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001